₹ 20

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जुलाई 2015



अल्लाह ने
गवाही दी कि उसके सिवा
कोई पूज्य नहीं और फ़रिश्तों ने
और उन लोगों ने भी जो न्याय और
संतुलन स्थापित करने वाली एक सत्ता
को जानते हैं, उस प्रभुत्वशाली,
तत्वदर्शी के सिवा कोई
पूज्य नहीं ।
–क़ुरआन

A WELL WISHER
KOLKATA

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 25 अंक 1 जुलाई 2015

अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करो और अपने हाथों अपने आपको तबाही में न डालो अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाओ कि अल्लाह अच्छे से अच्छा तरीक़ा अपनाने वालों को पसन्द करता है । **–क़ुरआन**

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी–314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी–314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 20/- विशेषांक रु० 30/-

वार्षिक रु० 220/-, दो वर्ष 425/-

पांच वर्ष 1000/-, आजीवन रु० 5000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–100 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–35 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

क्या बुरा वक़्त है मुफ़लिसों[1] के लिए
ख़ून बेचा गया रोटियों के लिए

मेरा ग़मख़्वार[2] मुझसे ये कहने लगा
मेरा दामन नहीं आंसुओं के लिए

आज मर्दुमशनासों[3] को क्या हो गया
लोग झुकते हैं बहरूपियों के लिए

ले के नामे-ख़ुदा[4] जान पर खेल जा
बुज़दिलों में न जा मशविरों के लिए

पगड़ियों की हमें अब ज़रूरत नहीं
हम कफ़न चाहते हैं सरों के लिए

गुनगुनाता चला जाऊंगा दार[5] पर
मेरी ग़ज़लें नहीं महफ़िलों के लिए

महफ़िलों के लिए तो बहुत हैं मगर
शम्एं मिलती नहीं अब घरों के लिए

एक बिन्ते-हया[6] को ये कहना पड़ा
मैं नहीं हूं तमाशाइयों के लिए

ऐ ख़ुदा ! क्या यही हुक्म है अब तेरा
मस्जिदें छोड़ दें हम बुतों[7] के लिए

ख़ैरख़्वाही[8] के जज़्बात रखिए 'हफ़ीज़'
दोस्तों के लिए दुश्मनों के लिए ।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. निर्धनों, ग़रीबों 2. दिलासा देने वाला 3. अच्छे आदमी की क़द्र करने वाला, अच्छे-बुरे आदमी की परख रखने वाला 4. ख़ुदा का नाम 5. सूली, फांसी का तख़्ता 6. शर्मीली औरत, अच्छे आचरण वाली औरत 7. मूर्तियों 8. भलाई चाहना ।



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
मानव-सम्मान एवं सद्भाव की आवश्यकता (संपादकीय)		7
देश की आय का न्यायपूर्ण वितरण हो (आपके पत्र)		9
इस्लाम में सहिष्णुता (आस्था)	–डॉ॰ अख़्तर हुसैन उज़्मी	15
मृत्यु के साथ जीवन का अंत नहीं (आस्था)	–डॉ॰ सैयद शाहिद अली	19
विश्व शांति का सपना (अभिमत)	–शिवांगी सक्सेना	22
किसी का जीवन लेने में नहीं... (दृष्टिकोण)	–सीताराम गुप्ता	23
नशा (कविता)	–ओमप्रकाश बजाज़	25
नारी शोषण : कारण एवं निवारण (विशेष आयोजन)	–श्याम नारायण चौहान	26
इस्लाम में महिलाओं का स्थान (विशेष आयोजन)	–शमीम इक़बाल ख़ां	30
अनिवार्य नारी शिक्षा (महिला जगत)	–डॉ॰ प्रीत अरोड़ा	35
दुष्यंत की हिन्दी ग़ज़ल कथ्य के आईने में (साहित्यिकी)	–डॉ॰ राम सनेहीलाल शर्मा 'यायावर'	37
ईदुल-फ़ित्र : केवल ख़ुशी मनाने का दिन नहीं (आयोजन)	–मुहम्मद सिब्ग़तुल्लाह नदवी	41
रिफ़्यूजी (कहानी)	–प्रो॰ शामलाल कौशल	43
लिस्ट (लघुकथा)	–हबीब इकराम	44
दुर्घटना को कम करने के लिए... (ज्वलंत सामयिक)	–भारत डोगरा	45
पर्यावरण का रक्षक : लकड़बग्घा (बालवीथी)		49



(75) इनमें से कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से प्रण किया था कि अगर उसने अपनी मेहरबानी से हमें प्रदान किया तो हम दान देंगे और अच्छे बनकर रहेंगे। (76) मगर जब अल्लाह ने अपनी मेहरबानी से उनको धनी बना दिया तो वे कंजूसी पर उतर आए और अपने प्रण से ऐसे फिरे कि उन्हें इसकी परवाह तक नहीं है।[86] (77) परिणाम यह निकला कि उनकी इस प्रतिज्ञा भंग करने की वजह से जो उन्होंने अल्लाह के साथ की और उस झूठ की वजह से जो वे बोलते रहे, अल्लाह ने उनके दिलों में निफ़ाक़ बिठा दिया जो उसके समक्ष उनकी पेशी के दिन तक उनका पीछा न छोड़ेगा। (78) क्या ये लोग जानते नहीं हैं कि अल्लाह को उनके छिपे भेद और उनकी छिपी कानाफूसियां तक मालूम हैं, और वह तमाम परोक्ष की बातों से पूरी तरह बाख़बर है? (79) (वह ख़ूब जानता है उन कंजूस दौलतमंदों को) जो राज़ी-ख़ुशी से देने वाले ईमान वालों की माली क़ुरबानियों पर बातें छांटते हैं और उनका उपहास करते हैं जिनके पास अल्लाह की राह में देने के लिए उसके सिवा कुछ नहीं है जो वे अपने ऊपर मशक़्क़त सहन करके देते हैं।[87] अल्लाह इन मज़ाक़ उड़ाने वालों का मज़ाक़ उड़ाता है और इनके लिए दर्दनाक सज़ा है। (80) ऐ नबी! तुम चाहे ऐसे लोगों के लिए क्षमा की प्रार्थना करो या न करो, अगर तुम सत्तर बार भी इन्हें क्षमा कर देने की प्रार्थना करोगे तो अल्लाह इन्हें कदापि क्षमा न करेगा, इसलिए कि इन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया है, और अल्लाह अवज्ञाकारियों को मुक्ति का रास्ता नहीं दिखाता।

–क़ुरआन, 9 : 75-80

---

86. ऊपर की आयत में उन मुनाफ़िक़ों की जिस कृतघ्नता, नाशुक्री और एहसान-फ़रामोशी की निंदा की गयी थी, उसका एक और प्रमाण स्वयं उन्हीं की जीवनी से प्रस्तुत करके यहां स्पष्ट किया गया है कि वास्तव में ये लोग आदी मुजरिम हैं, इनके नैतिक नियमों में शुक्रगुज़ारी, उपकार मानने और वादा निभाने जैसे गुणों का कहीं नाम व निशान तक नहीं पाया जाता।

87. तबूक की लड़ाई के अवसर पर जब नबी (सल्ल०) ने चन्दे की अपील की तो बड़े-बड़े धनी मुनाफ़िक़ हाथ रोके बैठे रहे, परन्तु जब निष्ठावान ईमान वाले बढ़-बढ़कर चन्दे देने लगे तो इन लोगों ने उन पर बातें छांटनी शुरू कीं। कोई सामर्थ्यवान मुसलमान अपनी हैसियत के अनुसार या उससे बढ़कर कोई बड़ी रक़म पेश करता तो ये उस पर दिखावा करने का आरोप लगाते और अगर कोई निर्धन मुसलमान अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट काटकर कोई छोटी-सी रक़म पेश करता या रात-भर मेहनत-मज़दूरी करके कुछ खजूरें प्राप्त करता और वही लाकर प्रस्तुत कर देता, तो ये उस पर आवाज़ें कसते कि लो, यह टिड्डी की टांग भी आ गयी है, ताकि इससे रूम के क़िलों पर विजय प्राप्त की जाए।

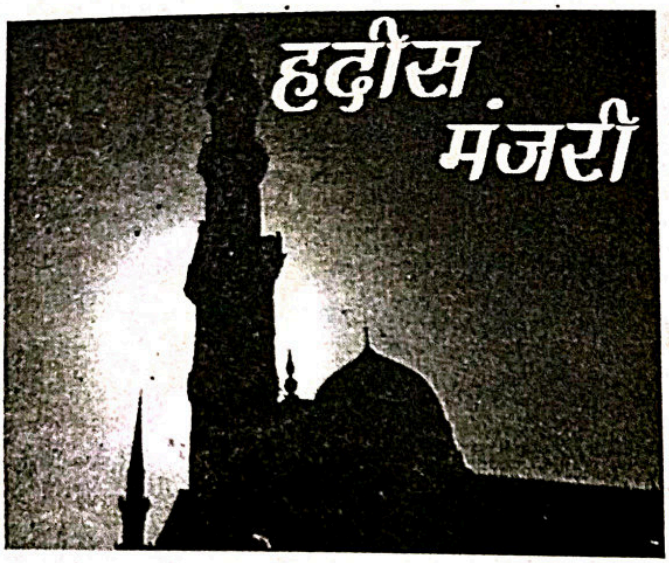

प्रातःकाल और संध्या-समय का स्मरण

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "जिस व्यक्ति ने प्रातःकाल भी और संध्या-समय भी 'सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही' (महिमावान है अल्लाह और प्रशंसा उसी के लिए है) सौ बार कहा, तो क़ियामत के दिन कोई व्यक्ति उससे उत्तम कर्म लेकर नहीं आएगा सिवाय उस व्यक्ति के जिसने उसी की तरह इसे पढ़ा या इससे ज़्यादा पढ़ा ।" —मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि एक व्यक्ति नबी (सल्ल॰) के पास आया और उसने कहा : "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), मुझे बिच्छू से कितनी तकलीफ़ पहुंची जिसने मुझे विगत रात्रि में डंक मारा । आपने कहा : "यदि तुम संध्या-समय यह पढ़ लेते 'अउज़ु बिकलिमतिल्लाहि-ताम-मति मिन शर्रि मा ख़लक़' (मैं अल्लाह के पूर्ण शब्दों की पनाह मांगता हूं हर उस चीज़ की बुराई से बचने के लिए जिसे उसने पैदा किया है, तो यह तुमको नुक़सान न पहुंचाता ।" —मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) प्रातःकाल यह पढ़ते : "ऐ अल्लाह, हमने तेरे साथ सुबह की, और तेरे साथ शाम की, और हम तेरे साथ ज़िन्दा हैं, और तेरे नाम के साथ मरेंगे और (मरने के बाद) तेरी ही तरफ़ उठकर जाएंगे ।" और जब शाम होती, तो यह कहते : "ऐ अल्लाह, हमने तेरे साथ शाम की, हम तेरे साथ ज़िन्दा हैं, हम तेरे नाम के साथ मरेंगे और (मरने के बाद) तेरी ही तरफ़ उठकर जाएंगे ।" —अबू दाऊद, तिरमिज़ी

● हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि संध्या-समय नबी (सल्ल॰) यह पढ़ते : "हमने शाम की और अल्लाह की सारी बादशाही ने शाम की, और प्रशंसा अल्लाह के लिए है, अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं ।" रावी कहते हैं : मेरा ख़्याल है कि आपने इनके साथ यह भी पढ़ा : "उसी की बादशाही है और उसी की प्रशंसा है और उसे हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य प्राप्त है । मेरे रब, मैं तुझसे इस रात की भलाई और इसके पश्चात की भलाई की याचना करता हूं । और मैं इस रात की बुराई और इसके पश्चात की बुराई से बचने के लिए तेरी पनाह मांगता हूं ।" मेरे रब, मैं आलस से और निकृष्ट वृद्धावस्था से बचाव के लिए तेरी पनाह मांगता हूं, मेरे रब, मैं दोज़ख़ की यातना और क़ब्र की यातना से बचने के लिए तेरी पनाह मांगता हूं ।" और जब प्रातःकाल होता, तो उस समय भी आप यही पढ़ते : "हमने सुबह की और अल्लाह की बादशाही ने सुबह की ।" —मुस्लिम

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने मुझसे कहा : "संध्या समय और प्रातःकाल सूरह अल-इख़्लास, सूरह अल-फ़लक़ और सूरह अन-नास तीन-तीन बार पढ़ लिया करो, यह हर मामले में तुम्हारे लिए काफ़ी होंगी ।"

—अबू दाऊद, तिरमिज़ी

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

मानव-सम्मान एवं सद्भाव की आवश्यकता

कहा जाता है कि किसी नयी सरकार की उपलब्धियां आंकने के लिए एक साल कम होता है, लेकिन यह सच है कि बीती अवधि में उसकी प्रगति की दिशा ज़रूर मालूम हो जाती है । आगामी 26 मई को मोदी सरकार के एक वर्ष पूरे हो जाएंगे । जहां तक मोदी सरकार के कार्यकाल की उपलब्धियों का सवाल है, तो इस सिलसिले में कहा जा रहा है कि मोदी सरकार और डॉ॰ मनमोहन सिंह के एक वर्षीय कार्यकाल में दोनों में बहुत समानताएं हैं । मगर यह पूरा सच नहीं है । मोदी का एकाधिकारवादी होना एक अलग समस्या है, जो मनमोहन सिंह में नहीं थी । इसी प्रकार मोदी सरकार आरोपों के घेरे में अधिक है । एक अध्ययन में यह बात भी सामने आयी है कि मोदी सरकार के कार्यकाल में धार्मिक एवं लैंगिक भेदभाव बढ़ा है । अटल बिहारी बाजपेयी सरकार में मंत्री रह चुके अरुण शौरी का कहना है कि वर्तमान में प्रधानमंत्री आफ़िस का कंट्रोल बहुत अधिक बढ़ गया है । इसका यह भी मतलब है कि पी॰एम॰ की हर चीज़ पर नज़र है और जो कुछ हो रहा है, उसकी जवाबदेही से प्रधानमंत्री बच नहीं सकते । नयी सरकार के बारे में विदेशी निवेशकों का जोश ठंडा पड़ चुका है, हालांकि उन्होंने उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा है । इस स्थिति में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोंदी और पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के पहले साल की उपलब्धियां कुछ समान अवश्य लगती हैं । मिसाल के तौर पर दोनों ही प्रधानमंत्रियों के पहले वर्ष के कार्यकाल में विकास दर में तेज़ी आयी, आयात और निर्यात घटा, विदेशी पूंजी भंडार बढ़ा, कोयला उत्पादन बढ़ा, बिजली उत्पादन बढ़ा, पेट्रोलियम उत्पादों की खपत बढ़ी और बैंकों की ग़ैर-निष्पादित परिसंपत्तियों (एन॰पी॰ए॰) का स्तर बढ़ा ।

'इंडिया स्पेंड' ने 12 संकेतकों का मूल्यांकन किया, जिसमें कई समानताएं देखी गयीं । मोदी के प्रथम वर्ष में आठ प्रमुख उद्योगों (कोयला, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस, रिफायनरी उत्पाद, ऊर्वरक, इस्पात, सीमेंट और बिजली) की विकास दर 2014-15 में पांच फ़ीसदी रही, जो एक साल पहले 4.2 फ़ीसदी थी । सिंह के प्रथम वर्ष में छह प्रमुख उद्योगों (कच्चा तेल, रिफ़ायनरी उत्पाद, कोयला, बिजली, सीमेंट और तैयार कार्बन स्टील) की विकास दर 2009-10 में 10.4 फ़ीसदी थी, जो 2008-09 में 2.8 फ़ीसदी थी । डॉलर राशि में निर्यात और आयात 2014-15 में साल-दर-साल आधार पर क्रमशः दो फ़ीसदी और 0.5 फ़ीसदी घटा । डॉ॰ सिंह के दूसरे कार्यकाल के प्रथम वर्ष 2009-10 में यह क्रमशः चार फ़ीसदी और पांच फ़ीसदी रहा । विदेशी पूंजी भंडार 12 फ़ीसदी वृद्धि दर्ज करते हुए 2013-14 के 304 अरब डॉलर से बढ़कर 2014-15 के आख़िर में 341 अरब डॉलर हो गया । 2009-10 में यह 5.4 फ़ीसदी वृद्धि के साथ 254.9 अरब डॉलर दर्ज किया गया था, जो एक साल पहले 241.7 अरब डॉलर था । आर्थिक मोर्चे पर देखें तो 2012-13 में 5.1 प्रतिशत के बाद 2013-14 में 6.9 प्रतिशत की विकास दर हासिल करने का माहौल अब भी बना हुआ है । इस सरकार को कई अहम मोर्चों पर निरंतरता बनाए रखने का श्रेय दिया जाना चाहिए । रघुराम राजन रिजर्व बैंक के गवर्नर बने हुए हैं और वह रुपये में स्थिरता बनाए रखने और महंगाई पर क़ाबू पाने की जंग छेड़े हुए हैं ।

यहां उन बातों की भी चर्चा होनी चाहिए जो पहले नहीं थीं या अल्प मात्रा में पायी जाती थीं और अब उनका विस्तार हो गया है ! देश के धार्मिक अल्पसंख्यकों पर होने वाले हमलों पर प्रधानमंत्री मोदी की ख़ामोशी

को अच्छा नहीं माना जा रहा है और इसे लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत बताया जा रहा है । दुनिया में बढ़ते धार्मिक और लैंगिक भेदभाव की अस्ल वजह राजनीतिक शह है, जिसके चलते लोगों को नौकरियां और क़र्ज़ हासिल करने में दिक़्क़त हो रही है । मशहूर संस्था 'मास्टर कार्ड' ने हाल में एक सर्वे के नतीजे जारी किये हैं, जिनसे ये बातें स्पष्ट हुई हैं । सर्वे के लिए इंडिया में जितने लोगों ने हिस्सा लिया, उनमें से 58 फ़ीसद ने बताया कि भेदभाव के चलते उनके लिए क़र्ज़ लेना, बचत करना और नौकरी पाना मुश्किल होता है । सर्वे में शामिल दूसरे देशों के 33 फ़ीसद लोगों की यह शिकायत थी । सर्वे में यह भी बताया गया है कि 58 फ़ीसद लोगों को अपने अल्पसंख्यक समुदाय या धर्म का होने के चलते नौकरी पाने या क़र्ज़ लेने में दिक़्क़त होती है । बाहर के देशों में ऐसी शिकायत 28 फ़ीसद लोगों ने की थी । प्रधानमंत्री मोदी अपने वित्तीय समायोजन की पहल को आगे बढ़ाते हुए पिछले वर्ष 15 अगस्त को देश के हर परिवार को बैंकिंग सेवाओं के दायरे में लाने के लिए महत्वाकांक्षी जन-धन योजना शुरू की थी । इस योजना के तहत करोड़ों बैंक खाते खुले और रूपे डेबिट कार्ड जारी किये गये । प्रधानमंत्री के अनुसार, जन-धन योजना के तहत 15 करोड़ से ज़्यादा खाते खोले जा चुके हैं । इनमें 15,800 करोड़ रुपये जमा हो गये हैं । इस योजना के तहत करोड़ों बैंक खाते खुले और रूपे डेबिट कार्ड जारी किये गये । अब मोदी सरकार ने तीन सामाजिक योजनाओं की घोषणा की है । इनमें 1 रुपये से कम के दैनिक ख़र्च में जीवनबीमा कवर और हर महीने एक रुपये के प्रीमियम पर सेहत और दुर्घटना कवर वाली योजना शामिल हैं । मगर मास्टर कार्ड के सर्वे में कहा गया है कि वित्तीय सेवाएं प्राप्त करना आसान हो तो लोगों का भरोसा बढ़ेगा और विकास की गति बढ़ेगी ।





ईद मुबारक

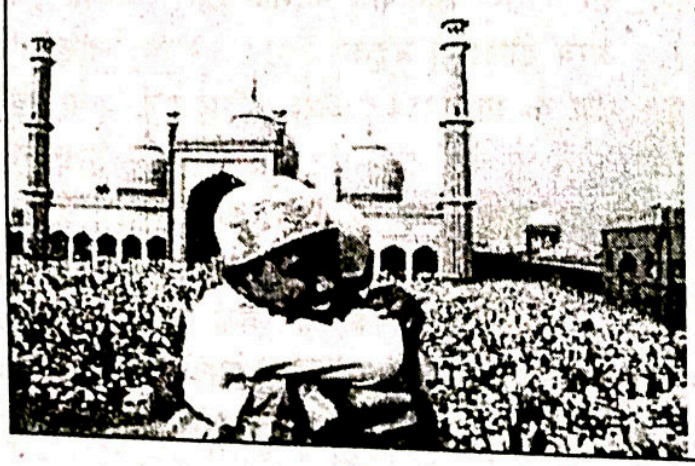



देश की आय का न्यायपूर्ण वितरण हो

देश का नागरिक ही देश का मालिक है और इसी लिए उसे वयस्क होते ही अपना मत (वोट) देने का अधिकार मिला हुआ है। यह अधिकार इतना ताक़तवर है कि देश के मतदाता इसके द्वारा देश में जैसा चाहें वैसा बदलाव कर सकते हैं। हम भी अपने वोट का सदुपयोग करके अपनी सारी समस्याओं का समाधान खुद ही कर सकते हैं। देश के सभी नागरिकों को लगभग दस हज़ार रुपया हर माह नागरिक भत्ता भी इसी के बल पर मिल सकता है। अत: देश के नागरिक को अब किसी नेता के पास गिड़गिड़ाने की ज़रूरत नहीं है बल्कि वह वह खुद ही इनके भाग्य का फ़ैसला कर सकता है।

समाज की हर दुर्दशा का मूल कारण देश के मतदाताओं की नासमझी है। वे अपने मत (वोट) का दुरुपयोग करते हैं। उन्हें जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र, भाषा, पेशा, लिंग, वर्ग, दल या आदमी को वोट नहीं देना चाहिए। इसके अतिरिक्त निजी स्वार्थ, रिश्वत धन या शराब के लिए अपना वोट देना अपने पैरों पर खुद ही कुलहाड़ी मारना है। इससे मतदाताओं की ताक़त ख़त्म हो जाती है। उन्हें केवल एक मुद्दे पर वोट देना चाहिए। वह एक मुद्दा सबकी समस्या का समाधान हो।

देश की आभाषी समस्या ग़रीबी है। देश की कुल जनसंख्या के 77 प्रतिशत लोगों की आमदनी बीस रुपया रोज़ है। 50 प्रतिशत कमज़ोर वर्ग की आमदनी पन्द्रह रुपये तथा 30 प्रतिशत सबसे कमज़ोर लोगों की रोज़ की आमदनी मात्र दस रुपया प्रति व्यक्ति है। 10 प्रतिशत लोग जो सबसे कमज़ोर है, उनकी आय के बारे में तो यही कहा जा सकता है कि उनका मरना-जीना समझ से परे है। सरकारी व अन्य अनुमानों के अनुसार देश में 13 आदमी प्रति सेकेंड भूख या कुपोषण से मरते हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि देश ग़रीब है। देश में हज़ारों लोग ऐसे हैं जिनकी दैनिक आमदनी करोड़ों में है, लाखों लोग रोज़ लाखों रुपये कमाते हैं और हज़ारों रुपया रोज़ कमाने वालों की संख्या तो करोड़ों में है। ये लोग ही देश की सारी सम्पत्ति के मालिक बने हुए विलासिता और सुख-सुविधा का जीवन जी रहे हैं। यही लोग देश की राजनीति भी चला रहे हैं।

इस प्रकार देश की अस्ली समस्या आर्थिक असमानता है। यह अत्यंत अन्यायपूर्ण है। देश के सबसे ग़रीब और सबसे अमीर नागरिक की आय के बीच लाखों गुना अन्तर है। अर्थात एक आदमी की एक दिन की आय दूसरे आदमी की जीवन भर की आय से भी कहीं अधिक है। यह खुला अन्याय है। यदि यह न्याय है तो फिर अन्याय क्या है ? व्यवस्था के नाम पर यह लूट और विश्वासघात है। आर्थिक न्याय के बिना व्यवस्था धोंखा है।

समस्या का अस्ली समाधान केवल न्याय है। न्याय के अनुसार देश सबका है। अर्थात देश के जल, जंगल, ज़मीन, खनिज और अन्य सारे प्राकृतिक संसाधनों तथा सारे धन-दौलत पर देश के सारे नागरिकों का समान अधिकार है। नागरिकों के इस मूलभूत अधिकार का संबंध न तो किसी आदमी की योग्यता या क्षमता से है और न ही शिक्षण या प्रशिक्षण से। अत: इस मूलभूत अधिकार को न तो घटाया जा सकता है और न ही बढ़ाया जा सकता है। इसलिए एक आदमी का ज़्यादा से ज़्यादा अधिकार केवल औसत सीमा तक ही हो सकता है। क्यों कि औसत सीमा से ज़्यादा अधिकार देने के लिए किसी दूसरे आदमी के मूलभूत अधिकार में कटौती करनी होगी जो ग़लत या अन्याय है। अत: न्याय के आधार पर देश का हर नागरिक देश की औसत सम्पत्ति का जन्म से ही मालिक होता है। और इन साधनों (सम्पत्ति) से होने वाली आय का भी स्वामी होता है। किन्तु देश के नागरिक को उसका यह अधिकार उसे न तो बताया जाता है और न ही दिया जा रहा है। न्याय के अनुसार देश के हर नागरिक को उसका यह आर्थिक अधिकार उसे मिलना ही चाहिए। समाज की अन्यायपूर्ण भीषण असमानता का मूल कारण यही है।

उत्पादन (उद्योग, कृषि, पशु पालन आदि) तथा विनिमय (व्यापार) आदि ही आय के स्रोत होते हैं। इनमें साधनों की भूमिका मुख्य होती है और मेहनत की भूमिका उसकी

सहायक (गौण) होती है । न्याय के अनुसार साधनों से होने वाली आय में सबका समान हिस्सा होना चाहिए और मेहनत से होने वाली आय सबकी अलग्-अलग होनी चाहिए । किन्तु आज ऐसा नहीं हो रहा है । ग़लत क़ानूनों के द्वारा देश की अधिकांश सम्पदा, सम्पत्ति और संसाधनों के मालिक कुछ मुट्ठी भर लोग बने हुए हैं ।

अत: देश के साधनों से होने वाली आय का अधिकांश भाग भी इन्हीं के पास जा रहा है । इसीलिए ये लोग निरंतर और भी ज़्यादा संपन्न होते जा रहे हैं और देश की विशाल जनता और भी ज़्यादा ग़रीब । देश के साधनों से होने वाली आय को ग़लत तर्कों के द्वारा उन लोगों की मेहनत की आय माना जा रहा है । यह तो जंगलराज या जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली बात है ।

न्याय के आधार पर देश के साधनों से होने वाली आय में देश के सारे नागरिकों का समान अधिकार होना चाहिए । अत: यह आय हर आदमी को केवल औसत सीमा तक ही मिलनी चाहिए । यह आय नागरिक की मेहनत की आय नहीं बल्कि उसके मालिकाना हक़ की आय है । जिस प्रकार एक बटाईदार अपनी मेहनत से जो आमदनी पाता है उसका एक भाग खेत के मालिक को मुफ़्त में दे देता है उसी तरह देश के सारे नागरिकों को भी देश के सारे साधनों से होने वाली आय में हिस्सेदारी मिले । इसका सूत्र निम्न है–

एक नागरिक की औसत सीमा से ज़्यादा मूल्य की सम्पत्ति पर ब्याज की दर से कर (टैक्स) लगा दिया जाना चाहिए । इससे होने वाली आय ही देश के सारे साधनों से होने वाली अतिरिक्त आय है । अत: यह आय सब लोगों की सामूहिक आय है जिसका वितरण सारे नागरिकों में समान रूप से होना चाहिए । यह देश के नागरिक का जन्म से मिलने वाला अधिकार है । अत: किसी भी आदमी को किसी भी कारण से इससे वंचित नहीं होना चाहिए ।

रोशन लाल अग्रवाल
के०एन० कम्पलेक्स, रामसागर पारा,
रायपुर (छ०ग०)

इस्लाम धर्म

इस्लाम शब्द ख़ुदा की मर्ज़ी के आगे आत्मसमर्पण करने को कहते हैं । विश्व की जनसंख्या का 20 प्रतिशत जन इस्लाम धर्म मानता है । इस धर्म को मानने वाले को मुसलमान कहा जाता है । जिसकी संख्या विश्व में 50 करोड़ के आस-पास है जो अरब, अफ़्रीक़ा, ईरान, इराक़, तुर्की, मध्य एशिया, पाकिस्तान, भारत, बंगलादेश, मलेशिया, इंडोनेशिया और चीन तक फैले हुए हैं ।

मुसलमानों के लिए कुरआन एक पवित्र ग्रंथ है जो ख़ुदा का पैग़ाम है, जिसे मुहम्मद साहब के द्वारा मानवजाति के लिए भेजा गया वह मुसलमानों के लिए वेद तूल्य प्रमाण है । इसे इस्लाम के सभी मत एवं सम्प्रदाय मानते हैं और इसी कारण विश्व की 40 भाषाओं में कुरआन शरीफ़ का अनुवाद हो चुका है । इसकी शैली वर्णनात्मक है ।

कुरआन के अनुसार ख़ुदा एक है और उसके बन्दों को उसकी मर्ज़ी के अनुसार कार्य करना चाहिए। इसमें 'अल्लाह' शब्द का प्रयोग ईश्वर के लिए होता है ।

अल्लाह के सिवाय कोई उपास्य नहीं है उसी को कुरआन के सबसे शुरू में "रब्बिल- आलमीन" (सब दुनियाओं या क़ौमों का रब यानी पालने वाला) और सबसे आख़िर में "रब्बिन्नास" (सब आदमियों का रब) "मलिकिन्नास" (सबका बादशाह) "इलाहिन्नास" (सबका पूज्य) कहा गया है ।

इस्लाम में न तो शहंशाहियत है न जागीरदारी सत्ता, और न ही ख़ानदानी अधीनता । इस्लाम में फ़ौजी शासक सत्ता का भी कोई अस्तित्व नहीं है । इस्लाम के राजनीतिक चिंतन में मशविरे का एक दूसरे की राय लेने का, एक दूसरे के विचार जानने का सिद्धांत है । वह बुनियादी तौर पर दीनुल-अक़्ल (अक़्ल का धर्म) है । जिसने संपत्ति, पूंजी की बुनियाद ब्याज को अनुचित हराम (त्याज्य) ठहराया । इस्लाम ही वह धर्म है जिसने बैतुलमाल की अवधारणा को सामने रखा जहां रुपये इकट्ठे करके उधार दिये जा सकें ।

इस्लाम में जातिपाति, रंग व नस्ल और भाषा का कोई भेद नहीं है । इसने जाति प्रथा का समर्थन कहीं नहीं किया है उसने समस्त मानव समाज को एक वर्ग में देखने का प्रयास किया है । उसका प्रयोजन ही मानव में एक भ्रातृत्व का सृजन करना है । उसी का परिणाम है कि मस्जिद में अमीर-ग़रीब सब एक साथ खड़े होकर प्रार्थणा करते हैं । एक रोटी सब एक साथ बांटकर खाते हैं । यह कहना असंगत न होगा कि इस्लाम धर्म में रक्त संबंध को गौण मानकर आत्म संबंध को मुख्य स्थान दिया जाता है ।

इस्लाम पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं करता । इसके अनुसार प्राणी अपने कर्म फल को भोगने के लिए नाना

योनियों में पैदा होता और मरता नहीं है । प्राणी का यह जीवन प्रथम और अंतिम है । अतएव उसका मानना है कि प्राणी को बहुत सोच-समझकर कार्य करना चाहिए । इस्लाम धर्म के पैग़म्बर मुहम्मद साहब ने लोगों को ख़ासतौर से दो बातों के लिए सावधान किया है । प्रथम यह कि हर मुसलमान बराबर है । दूसरा यह कि इन्सान ईश्वरीय आदेशों के अनुसार अपना जीवन बिताए ।

इस्लाम कर्मफल में विश्वास करता है । कुरआन में लिखा है कि मानव जो कुछ पाप या पुन्य करता है उसका फल भगवान उसे क़ियामत अर्थात महाप्रलय के दिन देगा । उस दिन कोई किसी का सहायक नहीं होगा । उस दिन शत्रुता और मित्रता काम नहीं आएगी । अपनी करनी सब भोगेंगे भगवान उसी के आधार पर न्याय करेंगे ।

कुरआन में कहा गया है कि भगवान ने सृष्टि की रचना की है । वह जीवनदान देता है अपराधियों को क्षमा करता है । दंड देता है । उसे किसी ने पैदा नहीं किया उससे कोई पैदा नहीं हुआ । यह पुस्तक क्या पुन्य है क्या पाप है विशद विवेचन करती है ।

कुरआन में बदचलनी को मर्द और औरत दोनों के लिए सख़्त गुनाह बताया गया है । बदचलनी की सज़ा यह है कि कुसूरवार को सबके सामने 100 कोड़े लगाये जाएं । मुसलमानों के लिए बदचलनी करने वाले मर्द या औरत से शादी करना मना किया गया है । साथ ही किसी औरत या मर्द पर बदचलनी का झूटा इल्ज़ाम लगाने की सज़ा 80 कोड़े लिखा है। नेकचलनी को कुंवारे और शादी हुए लोगों, मालिकों और गुलामों सबके लिए ज़रूरी बताया गया है । 'जिहाद' छेड़ना लड़ने से नहीं है । 'जिहाद' के मायने हैं "किसी ऐसी चीज़ के साथ जो ठीक न हो अपनी हद दर्जे की ताक़त लगाकर उसे ठीक करने की कोशिश करना है ।" इन सबको अल्लाह की राह में 'जिहाद' बताया गया है । मुहम्मद साहब की एक मशहूर हदीस है कि–"सबसे बड़ा जिहाद अपनी ख़्वाहिशों को जीतना है इसी को यानी अपने नफ़्स पर क़ाबू रखने को ही अरबी जुबान में, और आम तौर पर मुस्लिम किताबों में जिहादे अकबर' यानी सबसे बड़ा जिहाद माना गया है ।

मदन मोहन वर्मा
राजेन्द्र प्रसाद कालोनी, तानसेन मार्ग,
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

महंगाई

मार्च 2015 मासिक पत्रिका 'कान्ति' के अंक में 'संपादकीय' आलेख 'बढ़ती महंगाई से आमजन दिनों-दिन परेशान' शीर्षक का मैंने अध्ययन किया । वर्तमान परिप्रेक्ष्य को देखा जाए तो अधिकांश मानव (मध्यम व निम्न वर्ग) महंगाई के कीचड़ रूपी दलदल में फंसा हुआ है ।

मैं इस संबंध में संपादक महोदय की प्रतिक्रिया से पूर्णतया सहमत हूं । महंगाई हो नहीं सकती परन्तु अधिकांश व्यापारी ईमानदार कर्तव्यनिष्ठ नहीं है । उपभोग में आने

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति
www.kanti.in

प्रचार-प्रसार मुहिम के लिए विशेष छूट

मासिक कान्ति के प्रचार-प्रसार हेतु एक मुहिम शुरू की गयी है जिसके तहत कोई भी व्यक्ति 'मासिक कान्ति' के 5 नये ख़रीदार बनाता है तो उसे मुफ़्त में एक और ख़रीदार बनाने की छूट होगी । इस अवसर से लाभ उठाने के लिए एक साथ एक हज़ार एक सौ रुपये (Rs. 1100/-) सीधे कान्ति के कार्यालय में जमा करने होंगे । प्रचार-प्रसार की यह मुहिम आगामी कुछ महीनों तक चलती रहेगी । मासिक कान्ति के पाठक इस विशेष छूट का लाभ उठाने के लिए अपने-अपने इलाक़ों में अपने सगे-संबंधियों एवं अन्य साथियों को प्रेरित कर सकते हैं । विस्तार से जानने के लिए सम्पर्क करें :

मैनेजर
मासिक कान्ति
डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव,
जामिया नगर, नई दिल्ली-110025
09818799223, 011-26949430
E-mail : kanti hindimonthly@yahoo.com

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

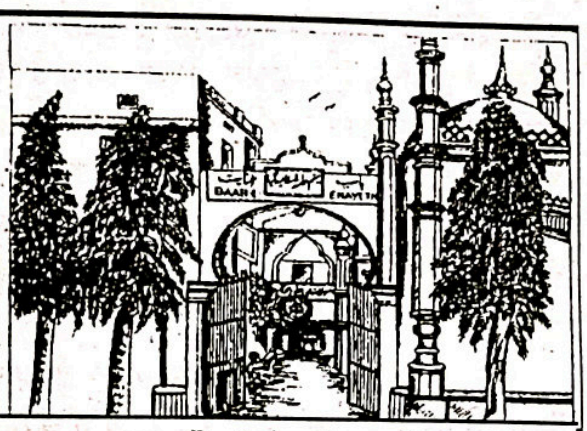

एक दृष्टि में

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की मशहूर रिहाइशी पाठशाला ● 98 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : नर्सरी से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2015-2016 के सत्र के लिए आई०ए०, बी०ए०, एम०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLIS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 16000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 24 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 75 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम अंतिम पड़ाव पर है।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

LOCAL DONARS मक़ामी चन्दा देने वाले

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

CORE BANKIN GA/C NO.: 300402010010581, Mobile : 9955655960, 09801213022

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन — एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

वाली आवश्यक वस्तुओं की कोई कमी नहीं है । स्टॉकिस्ट प्रवृत्ति अधिक है, यह कब होता है जबकि आवश्यक वस्तु की मूल्य में वृद्धि हो जाती है, उसकी कमी दिखा देते हैं तथा छिपे रूप में स्टॉक कर लेते हैं ।

संपादकीय आलेख के अनुसार आधार-कार्ड बनवाना आवश्यक हो गया है । मेरे व्यक्तिगत विचार से यह योजना ठीक है ।

आधार-कार्ड बनवाने में रिश्वतख़ोरी व बेईमानी का जाल बिछा हुआ है । आधार कार्ड बनवाने के लिए रिश्वत के रूप में मोटी राशि वसूली जाती है । यह कहां तक न्यायोचित है ।

काग़ज़ी कार्रवाई दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । कार्य रूप से परिणित होने में वास्तविकता छिपी रहती है । प्रधानमंत्री मोदी जी का नारा था कि शीघ्र ही अच्छे दिन आएंगे ।

परंतु अभी तक इसकी वास्तविक कार्यशैली दृष्टिगोचर नहीं हो रही है । लोकतंत्र की परिभाषा यह है कि जनता की जनता द्वारा व जनता के हित के लिए ।

रामस्वरूप झैवर

शास्त्रीनगर, भीलवाड़ा (राज॰)

पठनीय

लोकप्रिय पत्रिका 'कान्ति' का मैं कई वर्षों से नियमित पाठक हूं । पत्रिका में प्रकाशित राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक आलेख अत्यंत महत्वपूर्ण सुरुचिपूर्ण एवं पठनीय होते हैं । कविताएं ग़ज़लें और कहानियां भी महत्वपूर्ण एवं प्रेरणास्पद होती हैं ।

हरि नारायण गुप्त

जयप्रकाश नगर, चन्दवारा, मुज़फ़्फ़रनगर

दोहे

भावशून्य कविता हुई, गीत हुए अनबोल !
शब्द बिके बाज़ार में, जब कौड़ी के मोल !!

स्याही, क़लम, दवात से, सजने थे जो हाथ !
कूड़ा-करकट बीनते, नाप रहे फुटपाथ !!

कब तक महकेगी भला, ऐसे सदा बहार !
माली ही जब लूटते-कलियों का संसार !!

घूम रहे हैं आजकल, गली-गली में चोर !
खड़ा मुसाफ़िर सोचता, जाए अब किस ओर !!

अध्यापन मंडी हुआ, हुई शिक्षा व्यापार !
छात्र लादे घूमते, पाठ्यक्रम का भार !!

जब पैसों के मोल में, बिकता है क़ानून ।
खंजर बिना ग़रीब का, हो जाता है ख़ून !!

कैसी ख़बरें ला रहा, आये दिन अख़बार !
हर पन्ने पे ख़ून है, हर अक्षर दुराचार !!

पद पैसे की आड़ में, बिकने लगा विधान !
सरेआम अब घूमते, अपराधी-शैतान !!

अपराधी अब छूटते, तोड़े सभी विधान !
निर्दोषी हवालात में, वाह ! मेरे संविधान !!

● **सत्यवान वर्मा सौरभ**

दहेज विरोधी क़ानून में संशोधन

केन्द्र शासन द्वारा दहेज विरोधी क़ानून में संशोधन की योजना पर मन बनाया जा रहा है ताकि दोनों पक्षों के विवाद में किसी समझौते द्वारा समाधान निकल सकें । वैसे भी मौजूदा क़ानून का अत्यधिक दुरुपयोग हो रहा है, जिस कारण एक दिन शादी-विवाह की रस्म का फ़ैसला 10-10 वर्षों तक अदालती फ़ैसले की प्रतीक्षा में जाता रहा । इस दुष्परिणामों के बावजूद लोग बड़े-बड़े लांस में दहेज सामग्रियों का लेन-देन अधिकाधिक संख्याओं में कर रहे हैं, वहां हज़ारों की संख्या में लोगों को खान-पान करवाया जाता है जोकि अप्रत्यक्ष रूप से इनका बोझ वधु-पक्ष पर ही पड़ता है । इसके चलते प्रशासन किसी भी प्रकार क़ी कठोर कार्रवाई नहीं करता, बल्कि दहेज प्रताड़ना की प्राथमिकी दर्ज करायी जाती है, तो वर पक्ष के अधिक से अधिक लोगों पर अवमाननीय कार्रवाइयां कर दी जाती हैं ।

इस संबंध में कुछ ऐसे क़ानून अवश्य बनने चाहिए जिनकी पुष्टि शपथ पत्र से हो सके कि वधु पक्ष न ही दहेज दे सके और न ही खानपान का बंदोबस्त कर सके । संबंध विच्छेद के पश्चात दोनों को विवाह की स्वतंत्रता मिल सके तथा संबंध विच्छेद इस प्रकार पूर्णरूपेण हो सके कि धारा 125 लागू न हो सके ।

मलिक

नागपुर

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

इस्लाम में सहिष्णुता

❖ डॉ॰ अख़्तर हुसैन उज़्मी

कट्टरवाद, अतिवाद, शिद्दतपसन्दी और आतंकवाद के शब्दार्थों को जिस तरह आज पश्चिम ने धुंधला दिया है ऐसे ही अन्तर्धार्मिक संवाद, मानव-मैत्री, माध्यमार्ग अपनाना, शांति और सहिष्णुता के मनमोहक शब्दों को वह अपने अर्थों का लबादा ओढ़ने पर तुला हुआ है । इस तरह उसने मुसलमानों को बचाव की मुद्रा में खड़ा कर दिया है ।

छल-फ़रेब व भ्रम की इस धूल में अनेकेश्वरवाद का खंडन ईश्वरीय आदेशों को लागू करने की मांग, अपनी संस्कृति व सभ्यता के पुनरुत्थान पर मुसलमानों का आग्रह और यहूदी व ईसाइयों की दोस्ती के बारे में उनकी सावधानी बरतने की नीति, अशांति और अतिवाद में वृद्धि के कारण ठहराये जाते हैं, जबकि हिरोशिमा और नागासाकी के लाखों इन्सानों को अपाहिज, इराक़ में पांच लाख बच्चों को चिकित्सा व दवा के अभाव में दम तोड़ने पर विवश करने वाला अमेरिका और स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति के नाम पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) पर अनुचित आक्षेप करने वाली मीडिया पर खड़ा यूरोप और अन्य देशों के चालीस शासक सहिष्णुता के शिक्षक ठहराये जाते हैं ।

कुरआन और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की पवित्र जीवनी में अपनी आस्थाओं पर पूर्ण विश्वास और दूसरे की भावनाओं का लिहाज़ रखने का जो सुखद अनुभूति मिलती है, उससे सहिष्णुता-उदारता के वास्तविक अर्थों का सही पता चलता और वर्तमान काल में इसके विकास की राहें भी दिखायी पड़ती हैं । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की पवित्र जीवनी की रोशनी में उदारता की अवधारणा की व्यापकता व गहराई का भी अंदाज़ा होता है और यह भी मालूम होता है कि यूरोप आज जिस उदारता के ढिढोरा पीट रहा है, वह मात्र विचारों की लीपा-पोती से बढ़कर कोई चीज़ नहीं है ।

आप (सल्ल॰) के तरीक़े की रोशनी से पश्चिम की ओर से उदारता के उत्थान के नाम पर चलाये जा रहे आन्दोलन के घृणित इरादे भी नज़र आएंगे और यह भी कि पश्चिम और हमारी उदारता की अवधारणा में क्या अन्तर है और अगर इस अन्तर को हमने नज़रअंदाज़ कर दिया तो फिर हम ख़ुद अपनी परंपरा व मूल्यों से भी हाथ धो बैठेंगे ।

पश्चिम जो लोकतांत्रिक सहिष्णुता एवं उदारता के नाम पर हम से हमारे मूल्यों का छीन्ना चाहता है, स्वयं कितना अतिवादी है इसका अंदाज़ा यूरोप में मुस्लिम औरतों के स्कार्फ़ और मस्जिदों के मीनारों पर लागू होने वाली पाबन्दी से लगाया जा सकता है । स्कार्फ़ की पाबन्दी करने वाली महिला को मुक़दमे की सुनवाई के दौरान अदालत के कमरे में पुलिस की मौजूदगी में क़त्ल करना पश्चिम का अंधकार पक्ष दिखाता है, इसलिए हमें पश्चिम से प्रभावित हुए बिना सहिष्णुता की उन बुनियादों की खोज करना है, जो विश्व शांति की दिशा में मानवता के काम आ सके और सभी राष्ट्र समूह व क़ौमों को उनकी सभ्यता व संस्कृति के संरक्षण का एहसास दिला सकें, न कि सहिष्णुता के नाम पर उनकी सत्ता पर डाका डालने और कमज़ोर क़ौमों का आत्म-सम्मान छीनने का सुनहरा जाल हों ।

क्या सहिष्णुता वृद्धि दो विभिन्न और एक-दूसरे से टकराने वाली विचारधाराओं की केवल लीपा-पोती से संभव है ? इसका अन्तर अगर न में है, तो फिर प्रतिकूल विचार-धाराओं की मौजूदगी में अन्य क़ौमों का मिल-जुलकर रहने की क्या ढंग होगा ? यह वह प्रश्न है जिसका हमें उत्तर खोजना है । पश्चिम में यहां ग़लत व सही की बुनियादें और हैं और इस्लाम के मानने वालों के यहां और । बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो एक के यहां ठीक हैं और दूसरे यहां ग़लत । अगर कुछ बातों में समानता पायी भी जाती है, तो बहुत-सी बातों में टकराव भी है । टकराव की स्थिति में दोनों में अनुकूलता संभव नहीं ।

सहिष्णुता से अभिप्राय किसी इन्सानी सामूहिकता का उन बातों को, जिन्हें वह वैचारिक रूप से अपने दायरे में ग़लत और अप्रिय समझती है, दूसरे इन्सानों को जो उन्हें

पसन्द करते हैं, उनकी भावनाओं का लिहाज़ करते हुए उन्हें इख़्तियार करने का हक़ देना और अप्रियता के बावजूद सहन करना है ।

यह एक स्पष्ट वास्तविकता है कि जब तक इन्सानों को अमल के इरादे की स्वतंत्रता है, वे एक ही विचारधारा के पाबन्द नहीं हो सकते और अन्य आंशिक विवरणों में तो उनके मध्य मतभेद का होना उनके मिज़ाज और अभिरुचि में भिन्नता स्वाभाविक है । अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्ल०) को केवल नसीहत करने वाला ही बताया है । "अच्छा तो (ऐनबी) नसीहत किये जाओ, बस तुम नसीहत करने वाले हो ।" (क़ुरआन, 88:21) और साथ ही आपको बताया कि आप उन पर दरोग़ा नहीं हैं । "कुछ इनको बाध्य करने वाले नहीं हो ।" (क़ुरआन, 88:22)

क़ुरआन में है–"ऐ नबी, अपने रब के मार्ग की ओर बुलाओ तत्वदर्शिता और सदुपदेश के साथ, और उन लोगों से विवाद करो ऐसे ढंग से जो उत्तम हो । तुम्हारा रब ही ज़्यादा बेहतर जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटका हुआ है और कौन सीधे मार्ग पर है ।" (क़ुरआन, 16:125) यह इसी लिए फ़रमाया कि इन्सानी भावना को कम से कम ठेस पहुंचाकर उनके दिल जीत लिए जाएं ।

सत्य और असत्य का मुक़ाबला भी अनिवार्य है, लेकिन यह मुक़ाबला इन्सान के गरिमा के लिए है, न कि उसके अपमान के लिए । इन्सान स्वतंत्रता पूर्वक अपनी इच्छा से सत्य को स्वीकार करे । क़ुरआन में है–"स्पष्ट कह दो कि यह सत्य है तुम्हारे रब की ओर से अब जिसका जी चाहे मान ले और जिसका जी चाहे इन्कार कर दे ।"

(क़ुरआन, 18:29)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अनेकेश्वरवाद व शिर्क पर चोट की है और कुतर्कियों का सप्रमाण जवाब दिया । अहले कुफ़्र की एक-एक कमियों को स्पष्ट किया । क़ुरआन में है–"और (ऐ मुसलमानो) ये लोग अल्लाह के सिवा जिनको पुकारते हैं उन्हें गालियां न दो, कहीं ऐसा न हो कि ये शिर्क (बहुदेववाद) से आगे बढ़कर अज्ञान के कारण अल्लाह को गालियां देने लगें ।" (क़ुरआन, 6:108)

धार्मिक मतभेद जिसे क़ुरैश ने निजी दुश्मनी व वैर में परिवर्तित कर लिया था । जंगे बद्र में क़ैदियों के साथ सद्व्यवहार का प्रदर्शन और इस्लाम विरोधियों-क़ैदियों से मुस्लिम बच्चों के शिक्षा की ख़िदमत लेना सहिष्णुता की एक महान मिसाल है । जिस जिहाद को आज सहिष्णुता का दुश्मन समझाया जाता है, अल्लाह के नज़दीक वही जिहाद वास्तव में अन्य धर्मों के इबादतगाहों के संरक्षण का ज़रिया है । अल्लाह तआला फ़रमाता है–

"अगर अल्लाह लोगों को एक-दूसरे के द्वारा हटाता न रहे, तो ख़ानकाहें और गिरजा और उपासना-गृह और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का अधिकता से नाम लिया जाता है, सब ढा दी जाएं । (क़ुरआन, 22:40)

नजरानी ईसाइयों के साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने जो समझौता किया था उसका एक बिन्दु यह था, "उनके किसी उपास्य की मूर्ति को ध्वस्त नहीं किया जाएगा न किसी पादरी को निकाला जाएगा (धर्म परिवर्तन के लिए उन्हें विवश नहीं किया जाएगा, जब तक वह कोई नयी बात न निकालें या सूद न खाएं, समझौता बरक़रार रहेगा ।"

(अबू दाऊद)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के दौर में हेरात वालों के साथ किये गये समझौते का एक इमाम अबू यूसुफ़ (रह०) ने इस तरह बयान किया है–"उनको कलीसा की घंटियां बजाने या अपनी ईद के दिन सलीब निकालने से मना नहीं किया जाएगा ।"

(अबू यूसुफ़, किताबुल ख़िराज, पेज-154)

फ़ारूक़ी दौर में ईसाइयों को नाक़ूस बजाने की कितनी व्यापक स्वतंत्रता दी गयी, इसका कुछ अंदाज़ा इन शब्दों से होता है, "कि वे नमाज़ों के समयों के अतिरिक्त दिन और रात के जिस पहर में चाहें, अपनी घंटियां बजा सकेंगे ।"

(अबू यूसुफ़, किताबुल ख़िराज, पेज-158)

विश्व शांति की स्थापना और धरती पर बसने वाली क़ौमों को इस योग्य बनाना कि वे अपने विचारों का आदान-प्रदान स्वतंत्रतापूर्वक कर सकें, जिसमें हर व्यक्ति को अपनी राय रखने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो और आपस में एक-दूसरे को समझने-समझाने का अवसर मिले । समय की मांग है, ताकि आपसी मेल-जोल के नतीजे में इस्लाम की सच्चाई और हिकमत स्पष्ट हो सके ।

आपसी मेल-जोल का लाभ हमेशा उस वैचारिक आन्दोलन को होता है, जिसका विचार मन-मस्तिष्क को वश में करने और दिलों को मोह लेने की क्षमता रखता हो ।

नजरान के ईसाइयों का प्रतिनिधिमंडल नवीं हिजरी में मदीना आया और आप (सल्ल०) ने मस्जिदे नबवी में उन्हें

अपने रीति-रिवाज के साथ इबादत करने की आज्ञा दी (शिबली नोमानी, सीरतुन्नबी, जिल्द-2, पेज-51) और एक ऐसा न्यायिक और हमदर्दाना समझौता किया कि विलियम म्योर जैसा धार्मिक पक्षपाती लेखक भी इसी प्रशंसा किये बिना न रह सका, वह लिखता है–

"मुहम्मद (सल्ल॰) ने बिशपों, पादरियों और राहिबों को यह तहरीर दी कि उनके गिरजाघरों और ख़ानक़ाहों की हर चीज़ वैसे ही बरक़रार रहेगी । कोई बिशप अपने पद, कोई राहिब अपनी ख़ानक़ाह से और कोई पादरी अपने उपाधि से अपदस्थ नहीं किया जाएगा और उनके अधिकारों में किसी तरह का परिवर्तन नहीं किया जाएगा और बलात् उनसे कोई काम नहीं लिया जाएगा ।"

(Life of Mohammad, p.158)

प्रसिद्ध लेखक श्री सुन्दर लाल अपने लेख 'आं हज़रत की ज़िन्दी' में लिखते हैं कि–

"शासक की हैसियत से मुहम्मद साहब ने ग़ैर-मुस्लिम को यहां तक कि बुतपरस्तों को भी अपने राज्य के अन्दर रहते हुए अपने धार्मिक रीति-रिवाज़ अदा करने की पूरी-पूरी आज़ादी दी और उनके पूजा स्थलों की रक्षा करना हर मुसलमान का कर्तव्य बताया । "धर्म में कोई ज़ोर-ज़बरदस्ती नहीं" क़ुरआन की आयत है और मुहम्मद साहब की पूरी ज़िन्दगी इस आयत की जीती-जागती तस्वीर है ।".

इस सच्चाई से इन्कार संभव नहीं कि आप (सल्ल॰) न तो एकांतवासी थे और न ही शिद्दत पसन्द थे । आपके एकांतवास की अवधि अधिक से अधिक वही है, जो वह्य के अवतरण से पूर्व आपने ग़ारे हिरा में व्यतीत की । वह्य अवतरण के बाद आप कभी ग़ारे हिरा में एकांतवास के लिए न गये । इसके बाद आप इन्सानों के अन्दर उनके सुधार की कोशिश करते रहे । नुबूवत से पहले आप (सल्ल॰) एक भरपूर कारोबारी जीवन व्यतीत कर रहे थे, जिसका प्रमाण यह है कि मक्का की धनवान और कारोबारी महिला हज़रत ख़दीजा (रज़ि॰) आपसे प्रभावित हुईं । नुबूवत से पूर्व आप एक सक्रिय सामाजिक जीवन व्यतीत करते थे, जिसका प्रमाण 'हिल्फ़ुलफ़ज़ूल' में आपकी शिरकत और हजरे असवद की स्थापना के विवाद को बुद्धिमानी के साथ हल करना और मक्का वालों का आप पर पूर्ण भरोसा करना है ।

एक ऐसा व्यक्ति जिसकी जवानी एक भरपूर अमली ज़िन्दगी का नमूना है, जब वह अल्लाह के आदेशानुसार लोगों को सुधार व हिदायत का रास्ता दिखाता है, तो यह बात बोधगम्य है कि उसके व्यक्तित्व के पूर्व कर्म व अनुभव उसकी दावती ज़िन्दगी में नज़र आएं । यही कारण है हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की पवित्र ज़िन्दगी में हमें इस बात का इज़हार मिलता है कि आप जहां एक तरफ़ विशुद्ध एकेश्वरवाद पर आधारित एक सामूहिकता की बुनियादें उठा रहे थे, वहीं आप समाज में इन्सानों के साथ मामला करने में एक अमली इन्सान थे । एक अमली इन्सान में जहां अपने दृष्टिकोण व आस्था और जीवन की सोच के क्रियान्वयन की तड़प होती है, वहां दूसरों की भावनाओं का लिहाज़ करना भी, उसके स्वभाव का हिस्सा बन जाता है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के पवित्र जीवन की रोशनी में यह स्पष्ट है कि सद्व्यवहार, नम्रता व उदारता इन्सानों के साथ करने का हमें आदेश है–"मां-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों और दीन-दुखियों के साथ अच्छा व्यवहार करना, लोगों से भली बात कहना ।" (क़ुरआन, 2:83)



بسم الله الرحمن الرحيم

"नेकी यह है कि
अल्लाह की मुहब्बत में
अपना दिलपसन्द माल
रिश्तेदारों और यतीमों पर,
मिस्कीनों और मुसाफ़िरों पर,
मदद के लिए हाथ फैलाने
वालों पर और ग़ुलामों की
रिहाई पर ख़र्च करे।"

(कुरआन)

A Well Wisher

Kolkata

मृत्यु के साथ जीवन का अंत नहीं

❖ डॉ॰ सैयद शाहिद अली

"तुम तो सांसारिक जीवन को प्राथमिकता देते हो, हालांकि आख़िरत अधिक उत्तम व बाक़ी रहने वाली है।"
(क़ुरआन, 87:16,17)

"वे सांसारिक जीवन के केवल वाह्य रूप को जानते हैं, किन्तु आख़िरत की ओर से वे बिल्कुल असावधान हैं। क्या उन्होंने अपने आप में सोच-विचार नहीं किया ? अल्लाह ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, सत्य के साथ और एक नियत अवधि ही के लिए पैदा किया है। किन्तु बहुत से लोग तो अपने प्रभु के मिलन का इन्कार करते हैं।" (क़ुरआन, 30:7,8)

इस दुनिया में पूरा इन्साफ़ नहीं हो सकता। एक आदमी ने दस लोगों का क़त्ल किया, उसे पकड़ा गया और एक बार फांसी पर लटका दिया गया। यह पूरा न्याय नहीं है। पूरा न्याय तब होता, जब क़ातिल को दस बार मारा जाता और दस बार जीवित किया जाता। इसके अलावा मरने वालों को भी जीवित किया जाता और उनके सामने, उनके क़ातिल को मारा जाता, ताकि वे खुश होते और मानते कि हां हमें न्याय मिला। क्या ऐसी दुनिया है, जहां ऐसा हो सके ?

■ एक आदमी ने चोरी की, उसे सज़ा मिली, क़ैद कर दिया गया। चोर को तकलीफ़ हुई, मगर जब तक वह क़ैद में रहा, उसकी मां को भी तकलीफ़ होती रही। अपराध तो बेटे ने किया था, सज़ा मां को क्यों मिल रही है ? मां को तकलीफ़ इसलिए होती रही, क्योंकि मां और बेटे के बीच एक भावनात्मक संबंध होता है। यह लिंक, अगर काट दिया जाता, तो बचपन में बच्चे की परवरिश व देख-भाल कैसे होती। सर्दी की रात में तीन बजे, जब बच्चा सूसू करता और रोता, तो मां क्यों उठती, बच्चे को नमूनिया हो जाता और वह मर जाता। पूरे इन्साफ़ के लिए ज़रूरी है कि एक ऐसी दुनिया हो, जहां मां-बेटे दोनों जवान हों और दोनों के बीच भावनात्मक संबंध न हो, ताकि सज़ा की तकलीफ़ केवल अपराधी को हो, किसी और को न हो। क्या ऐसी दुनिया है ?

एक बहुत अच्छा इन्सान, जिसके अच्छे कामों से लाखों लोगों को लाभ पहुंचा। इसी तरह एक बहुत बुरा इन्सान जिसने अपनी बुराई से लाखों लोगों को हानि पहुंचाई। इस छोटे से जीवन में इन दोनों को उनके अच्छे या बुरे कामों का पूरा-पूरा अच्छा या बुरा बदला नहीं दिया जा सकता। ऐसा क्यों है ?

■ दुनिया में हर काम की प्रतिक्रिया नज़र आती है। एक आदमी ने दूसरे आदमी को मारा, वह बेहोश हो गया। भूखे आदमी ने खाना खाया, उसकी भूख ख़त्म हो गयी। बीमार ने दवा खायी, वह ठीक हो गया। मगर दुनिया में कुछ काम ऐसे भी हैं, जिनकी प्रतिक्रिया नज़र नहीं आती। आपने किसी अंधे को सड़क पार करा दी। रास्ते से केले का छिलका हटा दिया। खुद भूखे रहकर, भूखे को खाना खिला दिया। ऐसे कामों की प्रतिक्रिया कहां है ?

■ संपूर्ण खुशी पाने के लिए इन्सान को चाहिए कि उसकी सभी आवश्यकताएं पूरी हों। उसकी सभी इच्छाएं पूरी हों। वर्तमान और भविष्य में उसे सुरक्षा मिले। उसके सभी रिश्तेदार मौजूद हों (मैं खुश नहीं हो सकता, जब तक मेरे बाप न मौजूद हों, मेरे बाप खुश नहीं हो सकते, जब तक उनके बाप जीवित न हों। मेरे बाप के बाप खुश नहीं हो सकते, जब तक उनके बाप मौजूद न हों...), सभी तंदुरुस्त हों, सभी के पास दौलत हो, कोई बीमार न हो, कोई बूढ़ा न हो, कोई किसी दुर्घटना का शिकार न हो, कोई मरे न, इत्यादि। मगर दुनिया में ऐसा नहीं होता। इन्सान को दुनिया में संपूर्ण खुशी क्यों नहीं मिलती ?

■ सोचो ! अगर इस धरती से सभी इन्सानों को हटा दिया जाए, तो क्या होगा ? कुछ भी अन्तर नहीं पड़ेगा। सूरज निकलेगा, उसकी गर्मी से समुद्र में भाप बनेगी, भाप से बादल बनेंगे, जिनसे बारिश होगी, जलचक्र इसी तरह चलता रहेगा।

सोचो ! अगर इस धरती में इन्सान तो हों, मगर सूरज या हवा व पानी में से किसी भी एक चीज़ को निकाल दिया जाए, तो क्या होगा ? धरती का पूरा निज़ाम ख़त्म हो

जाएगा । इससे प्रमाणित होता है कि इन्सान इस निज़ाम से ज़्यादातर फ़ायदा उठाने वाला है, न कि फ़ायदा पहुंचाने वाला । जबकि दूसरी सभी चीज़ें इन्सान को केवल फ़ायदा पहुंचा रही हैं । मालूम होता है कि धरती का यह ढांचा इन्सान के लिए है, तो फिर इन्सान किस ढांचे के लिए है ?

■ एक ज़िन्दा और मुर्दा इन्सान में अन्तर होता है । ज़िन्दा इन्सान के दिमाग़ में विचार आ रहे होते हैं । वह बात कर सकता है । वह हरकत कर सकता है ।

मनोविज्ञान के अनुसार, इन्सानी दिमाग़ के दो हिस्से होते हैं : चेतन और अचेतन । अचेतन, इन्सानी दिमाग़ का गोदाम होता है । इसमें इन्सान की छोटी-बड़ी सभी सोचें जमा होती रहती हैं । एक इन्सान की याद्दाश्त खो गयी, वह सब कुछ भूल गया । जब उसकी याद्दाश्त (स्मृति) वापस आयी, उसे सब कुछ याद आ गया । या, कभी-कभी सपनों में बचपन की बातें नज़र आती हैं । इससे प्रमाणित होता है कि इन्सान की सभी सोचें, कहीं सुरक्षित होती रहती हैं, तभी तो वापस आती हैं । इन्सान की छोटी-बड़ी सभी सोचें उसके अचेतन मस्तिष्क में दर्ज हो रही हैं । सोचों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है ?

भौतिक विज्ञान के अनुसार, इन्सान जो आवाज़ निकालता है या जो कुछ बातचीत करता है, वह कभी ख़त्म नहीं होती, बल्कि एक लाख, छियासी हज़ार मील फ़ी सेकेंड की रफ़्तार से हवा में घूमती रहती हैं । साइंस ने इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि गुज़रे हुए समय की आवाज़ों को रिकार्ड कर सके, सुन सके । मगर ये सब आवाज़ें मिली-जुली हैं, अभी इन्हें अलग नहीं किया जा सका है । साइंस कोशिश कर रही है, इन आवाज़ों को अलग-अलग करके सुनने की । मालूम होता है कि इन्सान की छोटी-बड़ी सभी आवाज़ें रिकार्ड की जा रही हैं । आवाज़ की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है ?

इन्सान के शरीर से हरारती लहरें निकलती हैं । यह इन्सान की हर-हर हरकत (खड़े, बैठे, लेटे) का फ़ोटो बनाती हैं । नवम्बर, 1960 ई० के Readers Digest नामक पत्रिका में लिखा था कि अमेरिका के ऊपर से एक हवाई जहाज़ गुज़रा । दो घंटे बाद उस ख़ाली जगह से, जहाज़ में बैठे मुसाफ़िरों के फ़ोटो ले लिए गये । वह कैमरा, जो इन्सान के जाने के बाद, ख़ाली जगह से, उस इन्सान का फ़ोटो ले सके, "Evaporagraph" कहलाया । साइंस में बहस इस बात पर है कि किसी इन्सान के हटने के बाद, उस ख़ाली जगह, उस इन्सान का फ़ोटो चंद घंटे बाक़ी रहता है, या हमेशा-हमेशा । संभव है, यह फ़ोटो हमेशा रहता हो । अभी साइंस ने इतनी तरक़्क़ी नहीं की है कि कई साल बाद भी ख़ाली जगह से फ़ोटो ले सके, मगर ऐसा संभव है । मालूम हुआ कि इन्सान की एक-एक हरकत रिकार्ड हो रही है । इन्सान की हरकतों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है ?

इन्सान की सोचों, बातों और कामों की यह रिकार्डिंग क्यों हो रही है ? क्या किसी अदालत के लिए, जहां यह पेश की जाएंगी और इसके आधार पर कोई फ़ैसला होगा ?

■ इन्सान के इन सभी सवालों का जवाब ख़ुदा ने दिया है । ख़ुदा ने बताया कि इन्सान को कभी न ख़त्म होने अर्थात हमेशा-हमेशा के लिए पैदा किया गया है । इन्सान की ज़िन्दगी के दो हिस्से (Parts) हैं । एक, मरने से पहले वाली ज़िन्दगी (Life Before Death) जो बहुत थोड़े समय और इम्तिहान के लिए है । दूसरे, मरने के बाद वाली ज़िन्दगी जो हमेशा-हमेशा के लिए है । जिसमें मरने से पहले वाली ज़िन्दगी में किये गये क़ामों के आधार पर, सज़ा (जहन्नम) या इनाम (जन्नत) मिलेगा । मरने के बाद कभी न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी को ख़ुदा ने "आख़िरत" (परलोक) का नाम दिया है । आख़िरत को मानना इन्सान के सभी सवालों का जवाब है ।

■ ज़िन्दगी की कहानी मौत के साथ ख़त्म नहीं होती । बिल्कुल इसी तरह जैसे टी०वी० पर एक फ़िल्म चल रही हो और अचानक बीच में ही यह कह दिया जाए कि फ़िल्म ख़त्म हो गयी । या कोई उपंयास बीच में ही ख़त्म कर दिया जाए । अगर ऐसा होगा, तो फ़िल्म देखने वाला या उपंयास पढ़ने वाला, इस बात को नहीं मानेगा । वह जानना चाहेगा कि, अंजाम क्या हुआ ? फ़िल्म के बनाने वाले, उपंयास के लिखने वाले से यह उम्मीद की जाती है कि वह अंजाम ज़रूर दिखाए । बिल्कुल इसी तरह क्या कोई अक़लमंद इन्सान यह मान सकता है कि हमारी ज़िन्दगी की कहानी, हमारी मौत के साथ ख़त्म हो जाएगी, जबकि अभी कहानी पूरी नहीं हुई, ख़ुदा हमें हमारे अंजाम तक नहीं पहुंचाएगा । हक़ीक़त में पारलौकिक जीवन ही हमारी कहानी का अंजाम (परिणाम) है ।

मरने के बाद जीवन की परिकल्पना तक़रीबन सभी

धर्मों में पायी जाती है, यहां तक कि हिन्दू मत में भी । वेद में पुनर्जीवन की बात कही गयी है, जिसका अर्थ मृत्यु के पश्चात हमेशा के एक जीवन से है । वेदों में आवागमन और पुनर्जन्म नहीं पाया जाता । पुनर्जन्म और आवागमन दो अलग-अलग चीज़ें हैं । वेदों में पुनर्जीवन है, जिसका अर्थ मनुष्य को अपने कर्मों के फल हेतु दोबारा जन्म लेना है, जबकि आवागमन का अर्थ मोक्ष प्राप्ति तक कर्मानुसार 84 लाख योनियों में बार-बार जन्म लेना है । उपनिषद काल में पुनर्जन्म और आवागमन को एकार्थी बना डाला गया । छान्दोग्य उपनिषद ने सबसे पहले पुनर्जन्म (परलोक में ही नहीं, इस लोक में भी कर्मानुसार प्राणी जन्म लेता है) की बात कही गयी है ।

पुनर्जन्म का आरंभिक "पुन:" शब्द का अर्थ होता है "दोबारा" न कि "बार-बार"। फिर भी "बार-बार" का अर्थ ग्रहण करके उपनिषदों के द्वारा इसकी स्थापना कर डाली गयी और पुराणों, रामायण, महाभारत एवं धर्मशास्त्रों आदि में इसको अत्यधिक विस्तार दे दिया गया । इनमें श्राद्ध-सिद्धांत अर्थात मृतक की आत्मा को शांति पहुंचाने का कर्मकांड भी विद्यमान है, जो पुनर्जन्म के पूर्णत: विपरीत है ।

■ इस ग्रह अर्थात पृथ्वी पर पैदा होने वाला हर ज़िन्दा इन्सान अपने साथ वापसी का टिकट लेकर पैदा होता है और जीवन भर उसे इसके कन्फर्म होने का इन्तिज़ार रहता है । वापसी के टिकट के इसी पुष्टिकरण का दूसरा नाम "मृत्यु" है ।

■ इन्सान का बीमार, बूढ़े और अर्थी को देखकर यह नतीजा निकालना कि जीवन दुख है, सही नहीं है । क्योंकि यह किसी एक इन्सान का ख़याल हो सकता है, जबकि सही बात वह है, जो बीमारी, बूढ़ापा और मौत देने वाला (खुदा) खुद बताता है ।

खुदा बताता है कि सांसारिक जीवन इन्सान के लिए एक इम्तिहान है । बीमारी, इस इम्तिहान का एक परचा है, बुढ़ापा इम्तिहान के ख़त्म होने की चेतावनी है और मौत इम्तिहान के ख़त्म होने का एलान है ।

■ डेढ़ लाख इन्सान, प्रतिदिन इस दुनिया से मर कर चले जाते हैं । ये सब लोग कहां जाते हैं ? यह एक अहम सवाल है । इससे आंखें बन्द नहीं की जा सकतीं । दुनिया का कोई विज्ञान इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता, केवल धर्म ही इस सवाल का जवाब दे सकता है । धर्म में से भी केवल वही एक धर्म इसका सही जवाब दे सकता है, जिसने ज़िन्दगी और मौत देने वाले की वाणी को विशुद्ध व पूर्णत: सुरक्षित कर रखा है ।

■ क्या हर इन्सान के मरने का समय अर्थात उसके इम्तिहान ख़त्म होने का टाइम तय है ? कुरआन कहता है "हां" हर इन्सान के मरने का समय पहले ही से तय है ।

"अल्लाह की अनुज्ञा के बिना कोई व्यक्ति मर नहीं सकता । हर व्यक्ति एक लिखित निश्चित समय का अनुपालन कर रहा है ।" (कुरआन, 3:145)

मौत को बार-बार याद करने को इस्लाम पसन्द करता है । क्योंकि इस बात का इन्सान पर अच्छा प्रभाव पड़ता है । अच्छा काम करने के रास्ते में जो सुस्ती आती है वह दूर होती है । इन्सान अच्छा काम करने में जल्दी करता है । गुनाहों (पापों) को छोड़ने व तौबा (पश्चाताप) करने में भी जल्दी करता है और इन्सान अत्याचार करने से भी रुक जाता है ।

मौत को अपनी मर्ज़ी से बुलाने अर्थात आत्महत्या करने को इस्लाम अवैध (Prohibited) बताता है । क्योंकि यह खुदा से मायूस (निराश) होने और इन्सान के बारे में उसकी स्कीम से विद्रोह करने जैसा है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–

"तुममें से कोई (किसी भी वजह से) मौत की तमन्ना न करे और न जल्द मौत आने की दुआ करे । क्योंकि जब मौत आ जाएगी, तो उसके कर्म का सिलसिला रुक जाएगा और खुदा को (उसके बताए गये तरीक़े के अनुसार) मानने वाले के लिए उसकी आयु भलाई को बढ़ाने का कारण बनती है ।" (मुस्लिम)

उपर्युक्त बातों का सारांश यह है कि ईश्वर के एक होने के सिद्धांत को हम इस तरह स्वीकार करें कि उसकी हस्ती (अस्तित्व) गुण, अधिकार, सत्ता व स्वामित्व में किसी को शरीक न करें । अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने ईश्वर की इबादत का पूरा तरीक़ा हमें बताया व करके दिखाया है । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अंतिम ग्रंथ पवित्र कुरआन अवतरित हुआ, जो पूर्णतया विशुद्ध रूप से सुरक्षित है । यह किताब समस्त मानवजाति के लिए मार्गदर्शन है । इस सांसारिक व पारलौकिक जीवन में सफलता व मुक्ति के लिए इन सच्चाइयों को स्वीकार करते हुए ईश्वर के बताए हुए मार्ग पर चलना ज़रूरी है ।

विश्व शांति का सपना

आज मानव प्रवृत्ति का ख़ौफ़नाक रूप देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि शायद धरती पर विश्व शांति स्थापित करने का दूरदर्शी स्वप्न किसी आइने में दिख रही परछाईं की भांति प्रतीत होता है, जिसे हम देख तो सकते हैं, परन्तु वास्तविकता में परिवर्तित नहीं । विश्व शांति देश में शांति व सभी देशों और लोगों के भीतर स्वतंत्रता और आनंद का आदर्श है । मनुष्य सदियों से ही अपने जीवन को बेहतर बनता देखने के लिए कई आविष्कार करता आ रहा है । इन आविष्कारों से अवश्य ही उसका जीवन व रहन-सहन का तरीक़ा बदला ज़रूर है । परंतु इसी बीच उसके भीतर कई बदलाव भी महसूस किये गये हैं । शायद इस प्रतिस्पर्धा के बीच जहां मनुष्य दूसरों से बेहतर बनाना चाहता है, वहीं उसने अहंकार को भी पाल लिया है । इन्सान अपने आपको सर्वश्रेष्ठ साबित करने की होड़ में एक दूसरे की टांग खींचना और हिंसा करना भी सीख गया है ।

आज का मानव अब वैसा न रहा जिसकी कल्पना ईश्वर ने वसुधा के निर्माण के समय की थी, बल्कि इसके विपरीत मनुष्य हिंसक और विनाशकारी रूप धारण कर रहा है । धार्मिक ग्रंथों में लिखा है–सिद्ध पुरुष तभी बना जा सकता है जब वह काम, क्रोध, मोह, लोभ और माया से कोसों दूर अपना ठिकाना बना ले । परंतु आज का आधुनिक मानव इन शब्दों का आदी हो गया है । विश्व शांति कैसे प्राप्त की जा सकती है, इसके लिए कई सिद्धांतों का प्रस्ताव किया गया है । लेकिन आज भी ऐसे कई देश हैं जो विश्व शांति का परदा ओढ़े आतंकवाद को सहारा देते हैं । पाकिस्तान इन देशों में एक है । माना जाता है कि अमेरिका में हुए 9/11 हादसे के आरोपी संगठन को बसेरा देने वाला पाकिस्तान था । 'ओसामा बिन लादेन' को भी 'यू॰एस॰ आर्मी' द्वारा पाकिस्तान में ही पकड़ा गया था । परन्तु केवल पाकिस्तान ऐसा देश नहीं जिसने आतंकवाद को दुनिया में जन्म देने व लेने में मुख्य भूमिका निभाई हो ।

कहा जाता है कि शिक्षा ही वो डोर है जिसके द्वारा हम सब एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं । शिक्षा मनुष्य में आत्मविश्वास की नींव को मज़बूत बना देती है । शिक्षा द्वारा ही हमारे भीतर धैर्य, क्षमा, सत्य जैसे भाव पल्लवित होते हैं । विश्व शांति की नींव डालने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान विद्यालय में पढ़ाने वाले व सही दिशा दिखाने वाले शिक्षकगण का होता है । इसलिए किसी भी देश को शांति की इमारत का निर्माण करने के पूर्व एक बेहतर शिक्षा प्रणाली की नींव डालनी चाहिए ।

विद्यालयों में पढ़ रहे आज के दीपक भविष्य में दुनिया को प्रकाशित करने का हौसला रखते हैं । एक विद्यार्थी मिट्टी के लौंदे की तरह होता है जिसे जिस आकार में मोड़े वह वैसा ही स्वरूप धारण कर लेता है । विद्यार्थियों को सर्वप्रथम अपनी श्वास, अपना व्यवहार व अपनी आत्मा को स्वच्छ एवं शांत रखने का गुण सीखना चाहिए ताकि वे अपने आसपास का वातावरण शुद्ध एवं शांत रख पाएं । किसी को याद रखने और याद करने में बहुत फ़र्क़ होता है । चाहे सरकार कितने ही क़ानूनों को अपनी गोद से जन्म देती रहे परंतु अगर देशवासियों के बीच चैन, अमन और भाईचारे का वास नहीं होता तो देश तबाही की सीढ़ियों पर चढ़ता जाता है ।

इसलिए देश में अच्छी राजनैतिक व्यवस्था होना भी अतिआवश्यक है ताकि न केवल क़ानून का पालन सही ढंग से हो परंतु इसलिए भी ताकि देश में सुख, शांति, चैन व अमन अपना ठिकाना हमेशा बनाए रखे । कई बौद्ध धर्मावलंबी मानते हैं कि विश्व शांति तभी हो सकती है, जब हम अपने भीतर शांति की स्थापना करें । शांति को स्थापित करने के पूर्व हमें अपने अन्दर पल रहे नकारात्मक विचारों जैसे क्रोध, ईर्ष्या व अहंकार को निकालकर सकारात्मक विचारों जैसे प्रेम व समाज के लिए ख़ुद को त्याग देने जैसे भावों का बीज अपने भीतर बोना होगा और उसे सींचना होगा ताकि उसके पौधा बनते ही मनुष्य देश के विकास व प्रगति के कार्य में अपना योगदान बढ़-चढ़कर दे ।

शिवांगी सक्सेना
नयी दिल्ली

किसी का जीवन लेने में नहीं, जीवन देने में है जीवन की उत्कृष्टता

❖ सीताराम गुप्ता
(पीतमपुरा, दिल्ली)

कुछ समय पूर्व की बात है एक विवाहोत्सव में जाना हुआ । कई साल बाद अनेकानेक नये-पुराने मित्रों व रिश्तेदारों से मिलना हुआ । बड़ा अच्छा लगा । पता चला पिछले दिनों किसी अन्य विवाहोत्सव के अवसर पर दो रिश्तेदारों में हंसी-मज़ाक़ में इतना विवाद बढ़ गया कि एक रिश्तेदार ने जिसने हंसी-मज़ाक़ भी खुद शुरू किया था, दूसरे को धमकी दे डाली कि गोली मरवा दूंगा । आज गोली मारने या मरवा देने की धमकी आम बात हो गयी है । ज़्यादातर लोग गोली मारने की नहीं गोली मरवा देने की धमकी देते हैं । लगता है जिन्हें बचपन में खेलने के लिए कंचे रूपी गोलियां या लेमनचूस की गोलियां नहीं मिलीं वो लोग परलोक सिधारने से पहले बुढ़ापे का सदुपयोग कर दूसरे लोगों को गोली मरवा देने की धमकी देकर बचपन के शौक़ को पूरा करना चाहते हैं । ऐसे लोग दूसरों को गोली मारने या मरवाने की बात कहने से पहले ये सोचना भी उचित नहीं समझते कि कहीं किसी गोली पर उनका नाम भी तो नहीं लिखा ।

आम आदमी की तो औक़ात ही क्या है ? जीवन की उत्कृष्टता तो इसी में है कि यदि आप शक्तिशाली और समर्थ हैं तो दूसरों के कल्याण के विषय में सोचें । दूसरों को आगे बढ़ने में मदद करें । दूसरों को भय मुक्त करने के लिए आगे आएं न कि भयभीत करने के लिए । दूसरों को कमतरी का एहसास करवाने के बजाय उन्हें प्रेरित और उत्साहित करें । लोगों को उनकी प्रतिष्ठा, उनका सम्मान बचाए रखने में सहयोग करें ।

ख़ैर, प्रश्न उठता है कि क्या गोली मारने या मरवाने से विवाद का स्थायी अथवा संपूर्ण उपचार संभव है ? जीवन में विवाद या असहमति होना स्वाभाविक है । जीवन में असंख्य छोटे-बड़े विवाद जन्म ले सकते हैं । क्या सभी विरोधियों या प्रतिद्वंद्वियों को मौत के घाट उतार देने से हम निर्द्वंद्व अथवा सुरक्षित हो सकते हैं ? कदापि नहीं । पहली बात तो यह है कि गोली मारने या मरवाने वाला ऐसा कार्य करने पर स्वयं भी नहीं बच पाएगा । महाभारत के यक्ष प्रश्न के सबसे बड़े आश्चर्य की तरह यह भी एक आश्चर्य है कि हर व्यक्ति अपराध या हत्या करने से पूर्व यह समझता है कि वह बहुत होशियारी से काम करेगा और औरों की तरह नहीं पकड़ा जाएगा, जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है ।

यह सोचना भी घातक है कि गोली मार दूंगा या गोली मरवा दूंगा, क्योंकि हर सोच का एक न एक दिन वास्तविकता में बदलना स्वाभाविक है । हमारे अचेतन मन के गर्भ में जा सोया यह विचार रूपी बीज न जाने कब अंकुरित होकर पल्लवित-पुष्पित हो जाए और हमें संभलने का मौक़ा भी न दे । जब यह विकृत सोच वास्तविकता में परिवर्तित होती है तब हमें आटे-दाल का भाव मालूम पड़ता है और तब तक बहुत देर हो चुकी होती है । इतिहास गवाह है कि कोई भी हत्यारा आज तक क़ानून से बच नहीं पाया है और यदि अपवादस्वरूप कोई बच भी गया तो अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ से कैसे बचेगा ? अपराधबोध के बोझ को कैसे और कब तक ढोएगा ?

फिर भी कौन हैं वे लोग जो इस प्रकार के दूषित विचारों से भरे रहते हैं ? वास्तव में झूठी प्रतिष्ठा के मोह में फंसे प्रतिष्ठाहीन, अन्दर से डरे हुए या असुरक्षाबोध से

पीड़ित; अतीत के हीनताबोध से त्रस्त, वर्तमान में छद्म श्रेष्ठताबोध से लबालब, अनेकानेक ग्रंथियों और कुंठाओं से युक्त ग़लत तरीक़ों से अनाप-शनाप पैसा कमाने वाले वर्तमान के नवधनाढ्य, पैसे को खुदा जैसा समझने वाले, अनैतिक व धूर्त-क़िस्म के मित्रों व रिश्तेदारों के प्रभाव में रहने वाले, सामान्य व्यावहारिक बुद्धि से वंचित, तामसिक वृत्तियों से युक्त, विवकेशून्य व नैतिकताविहीन क़िस्म के व्यक्ति ही इस प्रकार के विचारों से भरे रहते हैं ।

एक सही और संतुलित सोच का व्यक्ति तो दूषित भाव आने पर उनसे मुक्त होकर ग़लत कार्य करने से बच भी सकता है और अपराध या ग़लती करने के बाद उसे स्वीकार कर, उसका प्रायश्चित करके हल्का हो जाता है, लेकिन ग़लत सोच वाले के लिए तो यह भी संभव नहीं क्योंकि ऐसे व्यक्ति के स्वभाव में तरलता नहीं जड़ता होती है । विचारों में जड़ता और अल्पज्ञता के कारण वह अपने विचारों और उससे उत्पन्न कर्म को उचित ठहराने में लगा रहता है न कि उनको बदलने अथवा उनका परिष्कार करने में ! इस तरह एक-एक करके अनेकानेक ग़लत विचार दृढ़ होते जाते हैं और व्यक्ति लगातार ग़लत कामों को अंजाम देने में लगे रहने को विवश हो जाता है । जितना जल्दी हो सके व्यक्ति को इस दुष्चक्र को तोड़ देना चाहिए अंन्यथा शीघ्र ही उसका पतन निश्चित जानो ।

जब भी कोई हत्या जैसा जघन्य अपराध करता है तो वह प्रायः स्वयं को सुरक्षित करने अथवा स्वयं की झूठी प्रतिष्ठा को बनाए या बचाए रखने के लिए ही करता है । कई बार अहंकार अथवा दंभ के वशीभूत होकर भी लोग ऐसे कुकृत्य कर डालते हैं । कई बाहुबली सोचते हैं कि इसी प्रकार के कार्यों से उनकी प्रतिष्ठा व रौब में वृद्धि होगी । ऐसे लोगों के लिए यही है जीवन की उपलब्धि । पर क्या वास्तव में यही है जीवन की उपलब्धि अथवा उत्कृष्टता ? संभवतः ही नहीं पूर्णतः नहीं । जीवन की उत्कृष्टता अथवा विकास तो मनुष्य में उत्तम गुणों के विकास से है ।

व्यक्ति का मानस अथवा मन ही तो ये सब करवाता है । व्यक्ति के मन में समाए राग-द्वेष, घृणा, ईर्ष्या, अहंकार, लोभ-लालच आदि नकारात्मक विचार ही व्यक्ति को दुष्कर्म करने के लिए प्रेरित करते हैं । स्वयं को मानसिक रूप से गोली मारने का तात्पर्य यही है कि हम अपने मन में घर कर चुके नकारात्मक विचारों को गोली मार दें, उन्हें समाप्त कर दें । पर यह कैसे संभव है ? यह तभी संभव है जब हम अपने मन में व्याप्त राग-द्वेष के स्थान पर समता का भाव स्थापित करें । घृणा के स्थान पर प्रेम व सहिष्णुता तथा अहंकार के स्थान पर विनम्रता को अपनाकर ही हम सात्विक वृत्तियों से युक्त हो सकते हैं और सात्विक वृत्तियों से युक्त व्यक्ति न किसी का अपमान करता है और न किसी को गोली मारता अथवा मरवाता हैं ।

यह भी संभव है कि आपने जो धन-संपत्ति अर्जित की है वह ग़लत तरीक़े से की हो और उसी के कारण आपके विरोधी या प्रतिद्वंद्वी उत्पन्न हो गये हों । या फिर यह भी संभव है कि आपकी अशिष्टता, आपके अहंकार अथवा अवांछित व्यवहार के कारण ही आपका विरोध हो रहा हो । और सबसे अधिक संभावना तो इस बात की है कि आपने अपने अज्ञान अथवा डॉन क्विकजोट की तरह बेवक़ूफ़ाना समझ के कारण सबको अपना विरोध और शत्रु मान लिया है और उनसे बदला लेने की इच्छा में बहादुरी का प्रदर्शन करने को बेताब हो रहे हैं ।

यदि आपके पास असीम शारीरिक बल है तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि दूसरों को कष्ट देना प्रारंभ कर दें । जीवन की उत्कृष्टता तो इसी में है कि आप अपने असीम शारीरिक बल का प्रयोग कमज़ोर की मदद करने, उसे दूसरों के अत्याचार से बचाने में करें ।

माना कि आपके पास अपार धन-संपत्ति का संचय हो गया है तो इसका यह अर्थ तो नहीं कि आप अपने विरोधियों या प्रतिद्वंद्वियों को मरवाने के लिए सुपारी देते फिरें । वैसे भी दूसरे के जीवन को नष्ट करने के लिए स्वयं के जीवन को कष्ट में डालने या नष्ट करने में कोई समझदारी या व्यावहारिकता नज़र नहीं आती । अतः गोली ही मारनी है तो गोली मारने के विचार को गोली मारिए, उस विचार से मुक्त होने का प्रयास कीजिए ।

यह भी संभव है कि आपने जो धन-संपत्ति अर्जित की है वह ग़लत तरीक़े से की हो और उसी के कारण आपके विरोधी या प्रतिद्वंद्वी उत्पन्न हो गये हों । या फिर यह भी संभव है कि आपकी अशिष्टता, आपके अहंकार अथवा अवांछित व्यवहार के कारण ही आपका विरोध हो रहा हो । और सबसे अधिक संभावना तो इस बात की है कि आपने अपने अज्ञान अथवा डॉन क्विकजोट की तरह बेवक़ूफ़ाना समझ के कारण सबको अपना विरोध और शत्रु मान लिया है और उनसे बदला लेने की इच्छा में बहादुरी का प्रदर्शन करने को बेताब हो रहे हैं । ऐसे में लोगों को सबक़ सिखाने की बजाय अपना स्वयं का मूल्यांकन कर उसमें उचित सुधार अपेक्षित है ।

इराक़ का राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन अपने देश का सबसे शक्तिशाली और समृद्ध व्यक्ति हो गया था लेकिन उसके अत्याचारों और अहंकार ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा । जिस जनता उसे सिर पर बैठा रखा था, उसी जनता ने उसे अपदस्थ कर इधर-उधर भटकने के लिए मजबूर कर दिया । अपने देश ही नहीं दुनिया का एक अत्यंत ताक़तवर व्यक्ति सद्दाम हुसैन अपने अंतिम क्षणों में कूड़े-कचरे के ढेर से झूठे टुकड़े खाकर जीवित रहने को विवश हुआ । मरने से पूर्व गोली लगने से पहले ज़िन्दगी की भीख मांगता रहा, गिड़गिड़ाता रहा पर सब व्यर्थ ।

आम आदमी की तो औक़ात ही क्या है ? जीवन की उत्कृष्टता तो इसी में है कि यदि आप शक्तिशाली और समर्थ हैं तो दूसरों के कल्याण के विषय में सोचें । दूसरों को आगे बढ़ने में मदद करें । दूसरों को भय मुक्त करने के लिए आगे आएं न कि भयभीत करने के लिए । दूसरों को कमतरी का एहसास करवाने के बजाय उन्हें प्रेरित और उत्साहित करें । लोगों को उनकी प्रतिष्ठा, उनका सम्मान बचाए रखने में सहयोग करें ।

माना आप एक बहुत सुन्दर और विशाल घर बनवा रहे हैं । इस अवसर पर शानदार दावत दे रहे हैं । आज आपके कुछ तथाकथित बड़े-बड़े लोगों से संबंध हो गये हैं और आप उन सबको आमंत्रित कर रहे हैं । अच्छी बात है लेकिन इसका ढिंढोरा पीटने की क्या ज़रूरत है ? अभी किसी को बुलाने की नौबत भी नहीं आयी और आप कह रहे हैं कि मैं तो सबको बुलाऊंगा, बहुत बड़ा आयोजन करूंगा पर कोई न आये तो मैं क्या करूं ? क्या इतना ज़्यादा करने की ज़रूरत है ? सब ठीक है लेकिन उन लोगों के योगदान को कमतर करके मत आंकिये जिन लोगों के साथ कार्य या व्यवसाय करने के कारण आपकी समृद्धि में बेतहाशा वृद्धि हुई है ।

उन असंख्य लोगों के योगदान को भी मत भूलिए, जिनकी दिन-रात की मेहनत की बदौलत ये विशाल भवन अस्तित्व में आया है । और सबसे ज़रूरी है उन मित्रों और रिश्तेदारों की उपेक्षा न करना जो किन्हीं कारणों से आप जितने समृद्ध नहीं हैं अथवा आप जिन्हें समृद्ध नहीं समझते हैं जो आपकी अज्ञानता व मूर्खता का ही परिचायक भी हो सकता है । वैसे कुएं के मेंढक को यह समझाना बहुत मुश्किल है कि समुद्र कितना बड़ा होता है क्योंकि कुएं का मेंढक कुएं की परिधि के विस्तार से अधिक सोच ही नहीं सकता । सही समझ के लिए सोच को बदलना अनिवार्य है और यह तभी संभव है जब आप दूसरों को गोली मारने या मरवाने के बजाय स्वयं के अहंभाव को गोली मारने का साहस करें ।

कविता

नशा

नशा कई प्रकार का होता है
अपनी-अपनी पसन्द का होता है ।
कहते हैं कि धन-दौलत का नशा
कम नहीं होता ।
किन्तु देखने में आता है कि
अख़बारों में नाम छपने का
बयान छपने का टी०वी० पर आने का
लाइम-लाइट में बने रहने का
नशा सबसे बढ़कर होता है !
शायद इसी लिए कई लोग
समय-समय पर कोई न कोई
वक्तव्य उछालते रहते हैं
ऐसे वक्तव्यों का सिर-पैर हो न हो
वे विवादस्पद अवश्य होते हैं ।
कुछ समय के लिए ऐसे लोग
फिर से चर्चा का विषय बन जाते हैं
और उनका उद्देश्य पूरा हो जाता है ।

ओमप्रकाश बजाज
इंदौर (म०प्र०)

नारी शोषण : कारण एवं निवारण

❖ श्याम नारायण चौहान
(विशुनपुरा, मथेला, चन्दौसी)

महिला पुरुष के साथ-साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने के नारे के बावजूद विकसित देशों में पुरुषों द्वारा महिला प्रताड़न की दर कहीं से कम नहीं है । विकास और महिला समानता के नाम पर भी महिलाओं को दुनिया भर में और प्रताड़ित ही किया जा रहा है । समानता के नाम पर केवल यह हुआ कि पुरुष वर्ग में अपने हिस्से के बहुत सारे काम महिलाओं के सिर मढ़ दिये और उनके हिस्से का कोई भी काम नहीं लिया । हाल में किये गये एक अध्ययन से पता चला है कि आधुनिकीकरण और ग्लोबलाइज़ेशन के इस दौर में महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अपराधों में सबसे आम बलात्कार है ।

हालांकि बलात्कार की घटनाएं जितनी होती है, उतनी पंजीकृत नहीं होती । उनका एक बहुत छोटा भाग ही पंजीकृत हो पाता है । अधिकतर मामलों में बलात्कार पीड़िता और उसके अभिभावक बात फैलने और बदनामी होने के डर से मामले को दबा देने में ही आफ़ियत समझते हैं । कई बार लोग यह सोच कर चुप बैठ जाते हैं कि अदालत से भी इन्साफ़ मिलने की उम्मीद नहीं होती ।

बलात्कार के मामले में ऐसा बहुत कम हुआ कि अपराधी को सज़ा मिली हो । अधिकतर मामले में बलात्कारी बाइज़्ज़त बरी हो जाते हैं । इसके अलावा लंबी अदालती कार्रवाई भी पीड़िता के लिए सज़ा से कम नहीं होती है । एक बड़ी ख़राबी यह है कि हमारे देश में बलात्कार और व्यभिचार को अलग-अलग समझा जाता है । क़ानून की नज़रों में बलात्कार तो अपराध है लेकिन व्यभिचार अपराध नहीं है । यानी व्यभिचार उस स्थिति में अपराध है, जब एक पक्ष ने ज़बरदस्ती की हो लेकिन इस काम में दोनों पक्ष की मर्ज़ी शामिल है तो क़ानून इसे अपराध नहीं मानता । इसी का फ़ायदा उठाकर बलात्कारी अदालतों में बलात्कार को व्यभिचार सिद्ध कर देते हैं और साफ़ बच निकलते हैं । दूसरे पक्ष के लिए यह साबित करना बहुत मुश्किल होता है कि इसमें उसकी मर्ज़ी शामिल नहीं थी ।

नारी आधुनिकीकरण में नारी की दशा

नारी मुक्ति, नारी आधुनिकीकरण महिला सशक्तीकरण के अच्छे उद्देश्य थे, परन्तु उनको जिस प्रकार समाज में लागू किये जाने की कोशिश की गयी है बिटिया हो 'निर्भया' हो या 'तहलका' उसी के विकृत आयाम हैं । मीडिया के स्वार्थी तत्व भारतीय संस्कृति के तथाकथित ठेकेदार, राजनीतिक पार्टियां सब अपने-अपने स्वार्थों के तहत पीड़ित को सहानुभूति देते या न देते हैं । मुख्य मुद्दा यह है कि भारतीय समाज परिवर्तन की स्थिति में है, जहां वे हज़ारों साल पुराने संस्कारों तथा आधुनिक प्राय: विकृत पाश्चात्य सांस्कृतिक मूल्यों के बीच सामंजस्य बैठाने की नाकाम कोशिश कर रही है । हाल यह है कि यह संस्कृति जहां उपजी एवं पली-बढ़ी है, वहीं इसके सारे सामाजिक ताने-बाने एवं परिवार की धारणा को छिन्न-भिन्न करके रख दिया है ।

परिवार की स्थिति यह है कि सभी पश्चिमी देशों में विवाह पूर्व एवं विवाह के बाद शारीरिक संबंध एक साधारण बात है । 13-14 वर्ष की अवस्था तक लड़का-लड़की अधिकतर सब कुछ कर चुके होते हैं जो विवाह के बाद ही होता था और अब पश्चिम की शैतानी संस्कृति ने लिव इन रिलेशनशिप, समलैंगिक विवाह इत्यादि ईजादों को मान्यता दे दी है । नतीजा सामने है रिश्ते, ख़ानदान बिखर गये । बग़ैर बाप के बच्चों की तादाद क़ानूनी बच्चों के बराबर हो गयी । विवाह से अधिक तलाक़ हो रहे हैं । पति-पत्नी का एक-दूसरे पर से भरोसा उठ चुका है ।

अपनी इस विकृत संस्कृति को इन्होंने अपनी फिल्मों एवं मीडिया के माध्यम से पूरे संसार में फैला दिया । पश्चिमी शिक्षा, मनोरंजन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से अपने पाले हुए भ्रष्ट राजनेताओं नौकरशाहों मीडिया विशेषत: (फ़िल्मी जगत से जुड़ा मीडिया) की पकड़ दिन-प्रतिदिन मज़बूत हो रही है । इसमें स्थानीय मीडिया क्षेत्रिय तथा अंग्रेज़ी मीडिया का

नारी सम्मान की अनदेखी अनुचित

विशेष योगदान है। आप किसी भी पत्र-पत्रिका को उठा लीजिए उसमें नारी देह का अश्लीलतम प्रदर्शन अधिक मात्रा में मिलेगा। इसको बताया जाता है कि यह पढ़े-लिखे एवं आधुनिक होने के आवश्यक गुण हैं। फिर हमारे देश में भी पश्चिम के समान परिवार को तबाह करके कैरियर व बराबरी के नाम पर एक भयानक प्रक्रिया आरंभ होकर गति पकड़ रही है।

आज गांव से शहर तक महिला उत्थान, महिला सशक्तिकरण के नाम पर जो संस्कृति जन्म ले रही है, उसमें स्त्री-पुरुष कॉलेज आफ़िस बस ट्रेन हास्टल काल सेन्टर कोचिंग सेन्टर, स्थान-स्थान पर आवश्यक अथवा अनावश्यक मेल-जोल बढ़ रहा है।

सूचना क्रान्ति के यंत्रों मोबाइल इत्यादि ने सारी दुनिया मुट्ठी में करने के नाम पर अश्लीलता अनैतिक यौन-संबंधों को रोज़मर्रा का रूटीन बना दिया है इससे पहले पहले जो शर्म और ग्लानि महसूस होती थी आज ख़त्म हो गयी। इसमें लिप्त विवाहित और अविवाहित दोनों प्रकार के हैं। प्राय: देखने में आता है कि वे अपने आकर्षक परिधानों व स्टाइलों में मिलते हैं।

एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। और साथ-साथ उठते-बैठते और काम करते हैं तो इसकी नेचुरल एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया वही होगी जिसे आज हाहाकार की नौटंकी से उछाला जा रहा है। स्त्री-पुरुष शारीरिक संरचना में भिन्नता तथा दोनों में पाये जाने वाले हार्मोंस के प्रभाव के कारण यह कभी संभव नहीं होगा। कभी इतिहास में नहीं हुआ है कि दोनों को खुला छोड़ दो और हर तरह का मौक़ा हो और शैतान वह सब कुछ न कराये जिसे आज हम पीड़ित होने का ढोंग रच रहे हैं। यही वो मूल कारण है जिससे आये दिन बलात्कार एवं मर्डर हो रहे हैं।

सत्यवती एवं पवित्र नारी से अगर कोई मनचला उसकी अस्मिता से खिलवाड़ करना चाहे तो वह नारी अगर अपनी रोब भरी निगाह उसकी तरफ़ ताक दे तो वह मनचला ठिठक जाए और उसके होश उड़ जाएं इस पर किसी शायर ने कहा है–

आबिदा चमकी न थी, इंगलिश से जब बेगाना थी।
अब है शमा-ए अंजुमन, पहले चिरागे़-ख़ाना थी ।।

नारी ज्वाला भी है और वीरांगना भी है। लेकिन आज ये स्वार्थी तत्व महिला सशक्तीकरण एवं नारी आधुनिकीकरण का शिकंजा बनाकर नारी का शोषण एवं उसकी अस्मिता लूट रहे हैं। इसके चलते वह अपनी ज़िन्दगी के मूल उद्देश्य से हाथ धो बैठी है। अगर भविष्य में हम देशवासी इस पर ग़ौर-फ़िक्र करके कड़ा क़दम न उठाएंगे तो यह हमारा मानव समाज पशुओं से भी बदतर हो जाएगा, जिसके लिए हम सब उत्तरदायी होंगे।

स्रष्टा एवं स्वामी ने हमें पैदा करके यूं ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि उसने हमारे जीवन पद्धति से संबंधित मार्गदर्शन भी दिये हैं। यह मार्गदर्शन सदियों से अल्लाह ने नबी (संदेष्टा) के माध्यम से देता रहा है तथा साथ ही साथ ईश्वरीय ग्रंथ भी अवतरित करता रहा है। ठीक वही पुराना तरीक़ा अपनाकर अल्लाह ने अपने अंतिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के ज़रिये अपना संदेश (हिदायतनामा) पवित्र कुरआन अवतरित किया, जिसके माध्यम से पूरी मानवजाति को जीवन जीने की कला सिखायी है। इसकी कुछ शिक्षाएं निम्न हैं–

समाज में नारी की हैसियत : नारी का समाज में सर्वोच्च स्थान है क्योंकि हमारे महापुरुषों, रसूल, पैग़म्बरों की जन्मदात्री है। इसी लिए इसे जननी भी कहा जाता है। पूरी दुनिया में नारी की महत्ता अति उच्च है इसके बिना मानव समाज कभी पनप ही नहीं सकता क्योंकि मां के ममता रूपी आंच में ही बच्चों का लालन-पालन पूर्णरूपेण संभव है। कोमल हृदय कुलीन परिवार की नारी ही अपने घर ख़ानदान में सरताज मानी जाती है। जिस परिवार में सांस्कारिक नारी होती है। उसी परिवार में बच्चों का उत्तम संस्कार बनता है क्योंकि मां ही बच्चों की प्रारंभिक पाठशाला है। जैसा कि अरबी में कहा गया है : "अल उम्मु मदरसतुन"।

नारी मां के रूप में

एक व्यक्ति अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आया और बोला कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) लोगों में कौन सबसे ज़्यादा मेरे अच्छे व्यवहार का हक़दार है ? आपने कहा तेरी मां । उसने फिर कहा–फिर कौन ? आपने कहा तेरी मां । उसने कहा फिर कौन ? आपने कहा तेरी मां । उसने फिर कहा फिर कौन ? आपने कहा तेरा बाप । अल्लाह ने तुम पर माताओं के आदेशों की अवहेलना और उनका हक़ मारना हराम कर दिया है । (बुख़ारी) "मां के क़दमों तले जन्नत है" (बुख़ारी, मुस्लिम) अर्थात मां की सेवा करके स्वर्ग प्राप्त किया जा सकता है ।

संस्कृत विद्वानों के मतानुसार (जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादीपगरीयसी) जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है । माता-पिता की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मां का योगदान अधिक है । इस तथ्य को कुरआन बड़े सशक्त ढंग से प्रस्तुत करता है ।

"और हमने इन्सान को उसके माता-पिता के बारे में ताकीद की है । उसकी मां ने कष्ट पर कष्ट उठाकर उसे गर्भ में रखा और दूध छूटने में दो वर्ष लगे । तुम लोग अल्लाह का एहसान मानो और अपने माता-पिता का भी एहसान मानो ।" (कुरआन, 31:14)

स्पष्ट है कि अल्लाह का कृतज्ञ होना चाहिए जिसने माता-पिता के मन में ममता का भाव कूट-कूटकर भर दिया । पिता संतान के पालन पोषण के लिए धनोपार्जन में परिश्रम करता है । उसके भविष्य की चिंता करता है तो दूसरी ओर मां बच्चों पर अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है । जन्म देने की तकलीफ़ सहती है, दूध पिलाती है और हर प्रकार की सेवा करती है । इतना तक कि जब रात में सोते वक़्त बच्चा बिस्तर पर पेशाब कर देता है तो मां भींगे हुए भाग पर स्वयं लेट जाती है और बच्चे को सूखे हुए भाग पर सुलाती है । इसीलिए हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने मां की सेवा को प्राथमिकता दी है ।

पवित्र कुरआन में बहुत ही सुन्दर ढंग से समझाया गया है–"तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो और मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो । यदि उनमें कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाए तो उन्हें उफ़ तक न कहो, न उन्हें झिड़को बल्कि उनसे शिष्टतापूर्वक बात कहो और उनके आगे नम्रता और दयालुता से बिछे रहो और कहो–ऐ मेरे रब जिस प्रकार उन्होंने बाल काल में मुझे स्नेह दिया था तू भी उन पर दया कर ।" (कुरआन, 17:23-24)

बहन बेटी के रूप में

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया कि, "जिसने दो लड़कियों का पालन-पोषण किया यहां तक कि वयस्क हो गयी और उसका विवाह कर दिया, तो क़यामत के दिन मेरा और उनका साथ इस प्रकार होगा । आपने दोनों उंगलियों को मिलाकर दिखाया ।" (बुख़ारी)

"बेटियां माता-पिता के लिए नरक की आड़ बन जाएंगी ।" (इब्ने माजा)

"लड़कियों से नफ़रत न करो वे तो हमदर्द और मूल्यवान है ।" (मुस्नद अहमद)

"जिसने तीन लड़कियों की परवरिश की उनकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध किया और उनके साथ बाद में भी सद्व्यवहार किया तो उसके लिए जन्नत है ।

(अबू दाऊद)

नारी का प्राकृतिक स्वभाव एवं दायित्व

नारी की बनावट अल्लाह तआला ने पुरुष से भिन्न बनायी है । नारी की प्रकृति में हर माह हैज़ (माहवारी) का सिस्टम रख दिया है जिससे वह महीने में लगभग एक सप्ताह उस अवधि में बीमारी के जैसी स्थिति में होती है । इन व्यवधानों के कारण वह किसी भी सूरत में पुरुष के बराबर कार्य नहीं कर सकती । इसीलिए अल्लाह ने उसको घर के अन्दर का कार्य, बच्चों की देख-रेख और उनकी पढ़ाई-लिखाई (शिक्षा क्षेत्र में) मदद करना आदि की ज़िम्मेदारी दी है । इसी मानों में नारी को गृहणी (घर वाली) कहा जाता है ।

इस्लामी शिक्षाएं

स्त्री पुरुष के रिश्ते विधिवत विवाह से स्थापित हो–उन विवाहित औरतों के अतिरिक्त जो औरतें हैं तुम्हारे लिए वैध किया गया कि महर के बदले विधिवत संबंध स्थापित करो न कि अवैध संबंध बनाओ । (कुरआन, 4:24)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया–"तुमको विवाह

करना चाहिए वह बद निगाहों से रोकने तथा कामेच्छा पर नियंत्रण रखने की सर्वोत्तम रीति है ।" (बुख़ारी)

अवैध संबंधों से क्षणिक आनंद तो प्राप्त हो सकता है, मगर वह समाज के लिए हानिप्रद तथा घातक है । इसलिए इसे इस्लाम अस्वीकार करता है और साथ ही कड़ी सज़ा का प्रावधान भी करता है ।

"व्यभिचार के निकट भी न जाओ क्योंकि यह अश्लीलता है और बुरा रास्ता है । (कुरआन, 17:32)

पति-पत्नी के रिश्ते को अलंकारिक भाषा में व्यक्त किया गया है–"वे तुम्हारे लिए वस्त्र (लिबास) है और तुम उनके लिए वस्त्र हो ।" (कुरआन, 4:19)

यहां पति-पत्नी को वस्त्र की उपमा दी गयी है ।

वस्त्र इन्सान के शरीर से लिपटा रहता है और सुन्दरता के साथ-साथ मौसम के दुष्प्रभाव से बचाता है । यहां तीनों लाभ दाम्पत्य जीवन में बंध जाने के बाद पति-पत्नी को प्राप्त होते हैं । उनके दिल आपस में जुड़े होते हैं । वे एक-दूसरे के लिए शोभा होते हैं । चारित्रिक बिगाड़ के वातावरण के दुष्प्रभाव से दोनों सुरक्षित रहते हैं ।

पत्नी के लिए आवश्यक एवं ध्यान देने योग्य बातें–

1. पति का ख़याल रखो उसकी अकारण अवज्ञा न करो ।

2. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने हिदायत की कि औरतों को चाहिए कि वे किसी ऐसे व्यक्ति को घर में प्रवेश न करने दें, जिसे पति न पसन्द करता हो ।

3. अपने चरित्र की रक्षा करो, हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–"जो औरत नमाज़ पढ़े और अपने आबरू की रक्षा करे और अपने पति का कहा माने वह स्वर्ग में किसी भी द्वार से प्रवेश कर सकती है ।

4. पति अपनी आवश्यकतावश बुलाये तो अकारण इन्कार न करना चाहिए ।

5. हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"नेक पत्नी ईश्वर की आशीष है । जब पति उससे किसी काम को कहे तो प्रसन्नतापूर्वक कहे । जब उसे देखे तो ख़ुश कर दे । पति जब बाहर हो तो अपनी इज़्ज़त और उसके माल की निगरानी करे । (इब्ने माजा)

इन शिक्षाओं और आदेशों का पालन करने पर हमारे घर जन्नत का नमूना और दयाभाव का असीम भंडार साबित हो सकते हैं । अल्लाह ने सत्कर्म करने वाले ईमानदार पुरुष और औरत दोनों को जन्नत की शुभ सूचना दी है । जैसा कि पवित्र कुरआन में है–"जो आदमी भी अच्छा कार्य करेगा चाहे वह मर्द हो य औरत बशर्ते कि वह हो मोमिन उसे हम दुनिया में पवित्र जीवन बसर कराएंगे और आख़िरत में ऐसे लोगों को उनके बदले उनके उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे ।" (कुरआन, 16:97)

इस्लाम में औरतों को परदा करने का आदेश

अंग ढकने वाले वस्त्र पहनकर कोई भी औरत बुरे पुरुषों की बुरी नज़र से बच सकती है तथा उसके शील की रक्षा होती है । जैसा कि कुरआन मजीद में है–"अपने घरों में टिक कर रहो और विगत अज्ञानकाल की सी सज-धज न दिखाती फिरो ।" (कुरआन, 33:33)

"ऐ नबी अपनी पत्नियों और बेटियों और ईमान वाली औरतों से कह दो कि अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें । यह ज़्यादा उचित तरीक़ा है ताकि ये पहचान ली जाएं और न सतायी जाएं ।"

(कुरआन, 33:59)

इस्लाम में नारी का अधिकार

1. इस्लाम ने औरत को केवल सामाजिक व पारिवारिक अधिकार नहीं ही दिये बल्कि आर्थिक अधिकार भी दिये हैं । इस्लाम में पैतृक व ससुराल की संपत्ति में औरत को भागीदार बनाया ।

2. उसे महर की संपत्ति की स्वामिनी घोषित किया और उसे निजी संपत्ति रखने का भी अधिकार दिया ।

3. इस्लाम ने स्त्री को अपनी मर्ज़ी से विवाह करने का अधिकार दिया और उसे संबंध विच्छेद का भी अधिकार प्राप्त है । जिसे 'खुलअ' कहते हैं ।

4. इस्लाम ने विधवा या परित्यक्ता स्त्री को पुनर्विवाह का अधिकार भी दिया ।

5. मर्द की तरह औरत को भी शिक्षा लेने का अधिकार प्राप्त है । जैसा कि हदीस में है–

"ज्ञान अर्जित करना सभी मुसलमान (स्त्री-पुरुष) के लिए अनिवार्य है ।"

इस्लाम में महिलाओं का स्थान

❖ शमीम इक़बाल ख़ां

समाज में मां से ज़्यादा मुहब्बत करने वाला और किसी को नहीं पाएंगे । बाप भी अपने बच्चों से प्यार करता है लेकिन मां का स्थान तीन गुना ज़्यादा होता है । और भी प्यार करने वाले रिश्ते हैं मिसाल के तौर पर दादी, नानी, बहन, फूफी, ख़ाला वग़ैरह । इनके दिलों में अपने नौनिहालों के लिए प्यार के समन्दर भरे रहते हैं । अगर कोई बच्चा बीमार है और किसी परेशानी की वजह से सो नहीं पा रहा है तो बच्चे को गोद में लिए रात-रात भर मां बैठी हुई मिलेगी और दूसरे कमरे में या दूसरे पलंग पर बाप लेटा हुआ मिलेगा । घर में अगर दादी, फूफी है तो वह भी बच्चे की मुहब्बत में जागते हुए मिलेंगे ।



अब बदक़िस्मती यह है कि बेपनाह मुहब्बत करने वाले इन्हीं रिश्तों को 'भ्रूण परीक्षण' कराकर पैदा होने से रोका जा रहा है । क्या माता-पिता के दिलों में बेटी के लिए कोई जगह नहीं रह गयी ? क्या आने वाली नस्लों में लड़कों को बहन और फूफी और बीवी की ज़रूरत नहीं रहेगी ? अगर सब लोग बेटा ही पैदा करते रहेंगे तो फिर उनकी दुल्हनें कहां से आएंगी ?

लड़कियां भाग्य हैं अभिशाप नहीं

घर में यदि औरत नहीं है तो वह घर नरक से भी बदतर होता है । इस्लाम ने लड़कियों की परवरिश करने वालों को ख़ुशख़बरी दी है और जन्नत का वादा किया है । यह मुसलमानों के ईमान का हिस्सा है । इस्लाम से पहले का ज़माना जिहालत का ज़माना कहलाता था उस ज़माने में लड़कियों के साथ बहुत ही ज़ुल्म किया जाता था, ज़िंदा दफ़न कर दिया जाता था, लड़कियों का बाप अपने को कमतर और ज़लील समझता था, नज़रें झुका कर चलता था । आज क्या इतिहास अपने को दोहरा रहा है ? क्या फिर वही जाहिलियत का ज़माना आ गया है ? पहले लड़कियों को पैदा होने के बाद मारा जाता था और लड़कियों को मां की कोख में ही मारा जा रहा है ।

यह सभ्य लोगों का युग है और शायद इसी लिए सभ्य लोगों ने तरक़्क़ी करके 'भ्रूण परीक्षण' का तरीक़ा ईजाद किया और 'कन्या' होने पर उसकी हत्या कर दी जाती है । यह कार्य धर्मों के विरुद्ध तो है ही साथ ही साथ आपराधिक भी है । प्रत्येक नर्सिंग होम में लिखा रहता है कि 'भ्रूण परीक्षण' क़ानूनी अपराध है । यह अपराध भी उसी तरह का है जैसे दहेज या रिश्वत के संबंध में क़ानून होते हुए भी लोग उसे जेब में रखकर क़ानून का मज़ाक़ उड़ाते रहते हैं ।

पुरुष समाज और महिला

महिला के संबंध में पुरुष समाज को संजीदगी से सोचना पड़ेगा कि उन्हें आज़ादी के नाम पर और पैसे कमाने की दिशा में कुछ कामयाबी तो ज़रूर हासिल हुई लेकिन इस लाभ के बदले में जो नुक़सान हुआ वह बहुत अधिक है । परिवार टूट रहे हैं, बच्चों की सही परवरिश और उचित सुरक्षा नहीं हो पा रही है इसके नतीजे में 'आरूशी' क़त्ल

कर दी जाती है, क्यों ? केवल इसी लिए कि घर में अबोध बेटी की सुरक्षा के लिए कोई सरपरस्त नहीं था । माता-पिता दोनों डॉक्टर थे एक लड़की के लिए कितना पैसा कमाना चाहते थे । यह कैसे माता-पिता होते हैं जो अपनी बच्ची को भूखे भेड़िये के संरक्षण में देकर पैसा कमाने में लगे रहते हैं ।

महिलाओं के संबंध में सरकारी वक्तव्यों में यह बात कही जाती है कि 'आधी जनता को बिठा कर नहीं खिलाया जा सकता' । बड़ा अच्छा विचार है, देश के निर्माण में औरत व मर्द सभी का योगदान होना चाहिए । लेकिन एक छोटा-सा सवाल दिल में उठता है कि क्या पुरुषों की कुल संख्या के रोज़गार से जोड़ा जा चुका है ? यदि हां तो अब महिलाओं के बारे में सोचा जाना उचित होगा ।

लड़कियां पैसा कमाने के लिए अपनी तालीम मुकम्मल करते ही नौकरी के लिए दर-दर भटकना शुरू कर देती है । और नौकरी मिलते ही उनका शोषण भी शुरू हो जाता है । उन्हें भेड़ियों की मांद से भी होकर गुज़रना पड़ सकता है और अख़बार की शर्मनाक ख़बर भी बनना पड़ सकता है । इस ओर सबसे पहले अभिभावकों को ठंडे दिल से सोचना चाहिए कि अपने जिगर के टुकड़े को अपनी प्यारी बेटी को नौकरी पर भेजना कितना आवश्यक है ?

हालांकि इस समय जो व्यवस्था है वह इस प्रकार है कि एक घर में पति व पत्नी दोनों सरकारी नौकरी में है । यह लोग रात की बची हुई रोटी को सवेरे घर के बाहर रख देते हैं ताकि आवारा जानवर उन्हें खा लें और दूसरी ओर एक ऐसा परिवार है जहां पति और पत्नी दोनों बेरोज़गार है जिनकी हैसियत रोटी को रोटी पर रखकर खाने की नहीं है । व्यवस्था कुछ इस प्रकार होनी चाहिए कि दोनों घरों के पुरुषों के पास रोज़गार हो, इस प्रकार निश्चित रूप से दोनों घर में खुशहाली होगी और घरों की खुशहाली ही मुल्क की खुशहाली की अलामत है ।

हम यह ग़लत सोचते हैं कि अगर पति और पत्नी दोनों नहीं कमाएंगे तो घर का ख़र्च नहीं चल सकता । यह बात दिमाग़ में बिठा लें कि 'वक़्त से पहले और क़िस्मत से ज़्यादा किसी को नहीं मिलता ।' जो धन क़िस्मत से ज़्यादा होगा उसे बीमारी या दुर्घटना के बहाने डॉक्टर ले जाता है, छापा मार कर आयकर वाले धन के साथ इज़्ज़त भी ले जाते हैं, लड़के बरबाद होते हैं और धन उड़ाने का कारण भी बनते हैं । 'अनुचित प्रकार से धन कमाना भी पाप है' संत लोग अपने भक्तों से यह बात अवश्य कहते होंगे लेकिन यही पाप 'आशाराम', 'राम पाल' को ले डूबा । अब वही धन उनकी क़िस्मत है जो जेल में मज़दूरी की शक्ल में पाएंगे ।

अभिभावकों के कर्तव्य

हमारे बचपन में बच्चों के लिए एक कहावत कही जाती थी, बच्चों को खिलाओ सोने का निवाला लेकिन देखो शेर की नज़र से' इन्हीं विचारधारा वालों के बच्चे अनुशासित होते थे । एक दूसरी वजह यह भी थी कि पिता अपने कारोबार अथवा मुलाज़मत के सिलसिले में दिन भर बाहर रहता था परंतु मां मुस्तईदी से घर में रहकर बच्चों की पूरी निगरानी और तर्बियत करती थी । लेकिन अब यह होता है कि मां-बाप ने बच्चों को तैयार करके स्कूल भेज दिया और फिर दोनों कार्यालय चले गये । दोपहर में जब बच्चे स्कूल से आये तो घर पर मां-बाप में से कोई नहीं है, पड़ोस की अंटी जी ने घर का ताला खोलकर बच्चों को अन्दर कर दिया और ताला फिर लगा दिया । अब शाम को जब मम्मी या पापा में से कोई आएगा तो ताला खोलेगा और बच्चे बाहर निकलेंगे वरना सारा वक़्त बच्चे खिड़की में खड़े दूसरे बच्चों को खेलते या राहगीरों को आते-जाते हुए देखते रहते थे । अब तो बहुत से 'क्रेश' खुल गये हैं जहां बच्चे स्कूल से पहुंचा दिये जाते हैं और फिर शाम को बच्चे 'क्रेश' से घर लाये जाते हैं । इन बच्चों का क्या क़सूर है कि इन्हें ममता की छांव से दूर रखा जा रहा है सिर्फ़ इसी लिए कि कुछ पैसे कमा लिए जाएं ।

लड़कियां पैसा कमाने के लिए अपनी तालीम मुकम्मल

करते ही नौकरी के लिए दर-दर भटकना शुरू कर देती है । और नौकरी मिलते ही उनका शोषण भी शुरू हो जाता है । उन्हें भेड़ियों की मांद से भी होकर गुज़रना पड़ सकता है और अख़बार की शर्मनाक ख़बर भी बनना पड़ सकता है । इस ओर सबसे पहले अभिभावकों को ठंडे दिल से सोचना चाहिए कि अपने जिगर के टुकड़े को अपनी प्यारी बेटी को नौकरी पर भेजना कितना आवश्यक है ? यह सत्य है कि लड़के हों या लड़कियां, उन्हें ख़ाली न बैठना चाहिए क्योंकि ख़ाली दिमाग़ शैतान का घर होता है । अगर शादी में आसानियां हों तो तालीम ख़त्म होते ही लड़कियों की शादी हो जाए तो फिर कोई चिंता की बात ही न रहे ।

महिलाएं जो सरकारी संस्थानों से जुड़ी हैं वहां वह निजी संस्थाओं की अपेक्षा कुछ सुरक्षित हैं । कार्यालय आने-जाने का समय निर्धारित है, समय से जाना और समय से वापस आ जाना । लेकिन बहुत अच्छा इसे भी नहीं कहा जा सकता । वह इसलिए कि पुरुष अपने ऊपर महिला को हावी नहीं करना चाहता । उनका मज़ाक़ उड़ाया जाता है, उन पर छींटाकशी की जाती है, उनके कार्यों में ऐब निकाला जाता है उन्हें रूलाया जाता है लेकिन उनके आंसू किसी के दिल को नहीं पसीज पाते । यह वास्तविक है कि महिलाएं सरल स्वभाव की होती हैं, उन्हें चातुर्य और चालाकी नहीं आती इसीलिए महिलाओं की ज्येष्ठता तक छीन ली जाती है और महिलाओं को कई तरह का नुक़सान उठाना पड़ जाता है इस तरह के उदाहरण 'ग' समूह के कर्मियों में तो बहुत से मिल जाएंगे । 'क' समूह के एक अधिकारी की मिसाल आप देखें ।

'किरन बेदी' हिन्दुस्तान का एक जाना पहचाना नाम है । 1972 बैच की पहली महिला आई॰पी॰एस॰ अधिकारी हैं । पैंतिस साल तक सेवारत रहकर देसी और विदेशी पच्चीसों पुरस्कार प्राप्त किये, डायरेक्टर जनरल के पद तक पदोन्नति भी मिली परंतु इस पद पर नियुक्ति न देकर उनके साथ न्याय नहीं किया गया, परिणामस्वरूप उनको एहतिजाज में 2007 में ऐच्छिक सेवा निवृत्त लेना पड़ा ।

महिलाएं ज़्यादातर निजी संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं जो उनकी मजबूरी भी है, वह इसलिए कि सरकारी विभागों में सभी महिलाओं की खपत मुमकिन नहीं है । यह लोग महिलाओं को नियुक्त करके कम से कम वेतन देकर दस से बारह घंटे काम लेकर अधिक से अधिक धन कमाना चाहते हैं । इन्हीं नौकरियों के लिए लड़कियां भागती फिर रही हैं । सवेरे मुंह-अंधेरे लड़कियां कंधे पर बैग लटकाये टैम्पो या बस स्टैंड की ओर भागती हुई मिलेंगी । इसी तरह रात में नौ-दस बजे टैम्पों या बस से उतर कर घर की ओर पैदल ही जाती हुई दिखेंगी । रात में इनके घरों की ओर जाने वाले रास्ते आमतौर पर लंबे, सुनसान और कम रोशनी वाले होते हैं । रिक्शे का ख़र्च इनके पर्स पर भार होगा इसीलिए यह पैदल चलना पसन्द करती है । यह ज़रूर है कुछ लड़कियों के पास अपना वाहन होता है ।

महिलाओं के साथ इन्साफ़ नहीं हो रहा है बल्कि यह कहा जाए कि उनका शोषण होता है तो यह ग़लत न होगा कि उनसे महिला होने का टैक्स वसूला जाता है । निजी संस्थाओं में शैक्षिक संस्थान भी आते हैं वहां महिलाओं को कम वेतन देकर मूल वेतन पर दस्तख़त कराये जाते हैं या और कोई तरीक़ा जैसे हर माह 'डोनेशन' के रूप में चेक हासिल करना आदि ।

निजी संस्थाओं में महिलाओं के साथ ज़्यादती होती है जिसे वह मजबूरन बरदाश्त करती हैं जिसकी वजह यह है कि अगर उन्होंने अपने अधिकार के संबंध में ज़बान खोली तो उन्हें नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा और नौकरियां बड़ी मुश्किल से हासिल होती हैं इसीलिए हर प्रकार का शोषण बरदाश्त करके नौकरी हाथ से नहीं जाने देना चाहती । और यही कारण है कि निजी संस्थाओं की नौकरियों में महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है ।

नौकरी करने का कारण

नौकरी करने की एक वजह सही समय पर शादी का न होना भी है । इसके कई कारण हो सकते हैं । सबसे बड़ा कारण तो यह है कि हिन्दू धर्म में रिश्ते सीमित होते हैं कम्पटीशन अधिक है । लड़की और लड़के की जन्म कुंडली मिलायी जाती है । दोनों के 36 गुण होते हैं जिसमें कम से कम 18 गुण मिलने चाहिए तभी शादी सफल हो सकती है । दृष्टांत में ऐसी बहुत-सी शादियां हैं जिनमें न गोत्र मिलाया गया होगा न गुण मिलाये गये होंगे और शादियां कामयाब हैं ।

शादी में दिल खोलकर ख़र्च करने की परंपरा है और अच्छी शादी का दारोमदार इसी पर होता है । दहेज देना और लेना दोनों अपराध है यह क़ानून है लेकिन हर शादी में इस क़ानून का मज़ाक़ उड़ाया जाता है । एक तरह से लड़के की बोली लगायी जाती है, जो सबसे अधिक दाम लगाएगा, उसी की लड़की की शादी होगी । शायद यही कारण है कि लड़कियां महंगी शादियों के बोझ से अपने माता-पिता को बचाने के लिए अपने ब्वाय-फ्रेंड पर भरोसा करने लगती है और कभी-कभी कामयाबी मिल भी जाती है और कभी अपना सतीत्व गंवाने के बाद भी शादी नहीं हो पाती और भयानक हालात से गुज़र कर जान भी गवानी पड़ जाती है । (अल्लाह इस स्थिति से सभी को सुरक्षित रखे)

हर शहर में बहुत से ऐसे स्थान होते हैं जहां पर अपने अभिभावकों को देर से घर आने की कहानियां सुनाने वाले लड़के लड़कियां एक-दूसरे के इश्क में चूर और अपने भविष्य को चकनाचूर करने पर तुले हुए बेहयाई के साथ एक-दूसरे की बाहों में बाहें डाले मिलेंगे । जैसे ही उन्हें यह एहसास हो गया कि हम एक-दूसरे से प्यार करने लगे हैं तो शर्म छोड़कर शादी के लिए अपने अभिभावकों को वस्तुस्थिति से अवगत कराना चाहिए ताकि आगे कोई अनैतिकता वाली बातें न हो सकें ।

शादी से पहले जब एक-दूसरे पर मुहब्बत लुटाई जाती है तो इससे घाटा यह होता है कि शादी के बाद मुहब्बत कम पड़ जाती है और कभी-कभी इतनी कम पड़ जाती है कि मुहब्बत की जगह नफ़रत घर कर जाती है इसलिए शादी से पहले मुहब्बत न लुटाये, आगे के लिए संभाल कर रखें ।

हिन्दू रस्म-रिवाज में शादी की प्रक्रिया बहुत लंबी, कष्टदायक और ख़र्चीली होती है । बिचौलिये लगाये जाते हैं, गोत्र की छानबीन होती है, कुंडली मिलायी जाती है, दान-दहेज तय किया जाता है । देहातों में अब भी तीन दिन बारात रुकती है, नौटंकी और नाच-गाने की महफ़िलें सजती हैं, शहरों में तब्दीली आयी है और अब एक रात में ही शादी पूरी हो जाती है । बाजा-गाजा, बग्घी घोड़ा, रोशनी और आतिशबाज़ी आदि का ख़र्च आमतौर पर वधु पक्ष के सर जाता है । बारातियों को उपहार देने का भी रिवाज है । एक लड़की की शादी का मतलब है दीवालिया होना । लड़की का बाप भले ही अपनी हैसियत मिटा दे लेकिन वर पक्ष का पेट नहीं भरता नौबत यहां तक आ जाती है कि नवविवाहिता या तो उत्पीड़न के कारण आत्महत्या कर लेती है या षड्यंत्र रच कर मार दी जाती है ।

सभ्य समाज की ऐसी ख़बरें आये दिन अख़बार की सुर्ख़ियां बनती हैं । वधु पक्ष का अभिभावक जब अपने पुत्र का विवाह करेगा तो 'वर पक्ष' हो जाएगा और फिर वधु पक्ष को तिगिनी का नाच उससे ज़्यादा नचाएगा जितना वह नाच चुका है । हालांकि शादी की रस्मों में आसानी बरतने के धार्मिक निर्देश भी है–

● 'जिन रास्तों से हमारे दोस्त रिश्तेदार लड़की के पिता के पास पहुंचते हैं उन रास्तों को कांटों से साफ़ और आसान करो ।' (ऋग्वेद, 10-85-23)

उन कारणों का पता लगाना चाहिए जिनसे लड़कियों की शादी में विलंब होता है और लड़कियों के सुनहरे भविष्य के लिए हर संभावित प्रयास किये जाने चाहिए । रह गये इस तरह के नारे कि–

महिला अब अबला नहीं है

निस्संदेह वह महिला अबला नहीं हो सकती जो शिक्षा जैसे अमूल्य गहने से सुसज्जित है । हर लड़की का शिक्षा प्राप्त करना उसका अधिकार है और हर अभिभावक का कर्तव्य है कि वह अपनी बच्चियों को शिक्षा उसी प्रकार से दिलाये जिस तरह से लड़को को दिलाता है । शिक्षा के मामले किसी प्रकार का भेदभाव न होना चाहिए ।

महिला मर्दों के कंधे से कंधा मिलाकर चल सकती है

बिल्कुल सच है, चल सकती है परन्तु इस अन्तर को ध्यान में रखना पड़ेगा कि महिला नाज़ुक होती है, मर्दों की

For Information On
City Shops, RoaosQ, Restaurants, Magazines, Schools and much more.
Syed Shahbaz Alam Barvi
Business Development Director (09049185093)
Visit us:
www.shoppinglanes.com

अपेक्षा शारीरिक क्षमता कम होती है । इसी लिए क़ुदरत ने दोनों के कार्य क्षेत्र अलग-अलग रखे हैं । घर की चहारदीवारी के अन्दर की कर्मभूमि महिला के लिए और घर की चहारदीवारी के बाहर की कर्मभूमि पुरुषों के लिए । यही विधि का विधान है–

● तुम अपने घरों में क़रार के साथ रहो ।

(क़ुरआन, अल-अहराब-33)

● वहां तुम सबसे अच्छी घर वाली बनो और पति के घर में रहते हुए घर के नौकरों पर राज करो । ऐ महिला ! पति के घर में मां बनकर सुख पाओ । पति से प्रेम के संबंध स्थापित करो और बुढ़ापे की उम्र तक अपने घर में राज करो । (ऋग्वेद : 10,58,25-27)

धर्म जानता है कि महिला का सही स्थान क्या होना चाहिए लेकिन वोट और नोट के चक्कर में पुरुषों ने अपने आर्थिक लाभ के लिए धर्म के विरुद्ध महिला को घर जैसी सुरक्षित जगह से निकाल कर भटकने के लिए बाज़ार में ला खड़ा कर दिया । वह घर से इतनी दूर निकल आयी है कि अब उसे घर लौटना मुश्किल हो रहा है । भारतीय नारी पांच सितारा होटलों में पराये मर्दों के बिस्तरों की चादर की सिलवटें बराबर करने में सम्मान का अनुभव करने लगी है, परिवार के सदस्यों के लिए खाना बनाना अपमानजनक महसूस होने लगा है । घर पर सायंकाल काम से लौटे अपने पति का स्वागत मुस्कराहट से करने के बजाए रिसेपशनिस्ट और ऐयरहोस्टेस बनकर दूसरों के लिए दिन भर ज़बरदस्ती की मुस्कराहट बिखेरते हुए अपने मुंह को दुखा लेना उसे पसन्द आने लगा है ।

धर्म जानता है कि महिला का सही स्थान क्या होना चाहिए लेकिन वोट और नोट के चक्कर में पुरुषों ने अपने आर्थिक लाभ के लिए धर्म के विरुद्ध महिला को घर जैसी सुरक्षित जगह से निकाल कर भटकने के लिए बाज़ार में ला खड़ा कर दिया । वह घर से इतनी दूर निकल आयी है कि अब उसे घर लौटना मुश्किल हो रहा है ।

छात्राएं कॉलेज की हों या विश्वविद्यालय की हों या जॉब करने वाली लड़कियां हों उन्हें अपने पहनावे पर विचार करना चाहिए, शुद्ध देशी पहनावे पर ध्यान होना चाहिए । पश्चिमी फ़ैशन की नक़ल में लड़कियों से ज़्यादा उनके अभिभावक यह भूल गये हैं कि कपड़े तन को ढकने के लिए होते हैं न कि तन की नुमाइश के लिए । इस संबंध में धार्मिक आदेश भी है–

● चूंकि ब्रह्म ने तुम्हें औरत बनाया है इसलिए नज़रें नीची रखो, ऊपर नहीं, अपने पैरों को समेटे हुए रखो । ऐसा लिबास पहनो कि कोई तुम्हारा जिस्म न देख सके ।

(ऋग्वेद : 8,33,19)

ईसाई धर्म में भी इसी प्रकार के निर्देश हैं–

● औरत मर्द का लिबास न पहने और न मर्द औरत की पोशाक पहने क्योंकि जो ऐसा काम करता है ख़ुदा उससे घृणा करता है । (Deuteronomy, 22:5)

इस्लाम में इस प्रकार के लिबास के लिए औरतों और मर्दों दोनों के लिए सख़्ती से पाबन्दी है, आमतौर से उसका पालन भी होता है । शादी-विवाह में सादगी बरतने के भी आदेश हैं ।

एक अनुरोध : लड़कों और लड़कियों की तालीम में कोई भेदभाव न होना चाहिए दोनों को शिक्षा अनिवार्य रूप से दिलायी जाए । स्कूल व कॉलेज आने-जाने में वक़्त की पाबन्दी होनी चाहिए । देर से आने की वजह माक़ूल होनी चाहिए । बच्चों को यह महसूस हो जाना चाहिए कि वालिदैन को गुमराह नहीं किया जा सकता । बच्चों को यह बात ज़रूर बतायी जाए कि 'जो काम किसी से छुपा कर करने का दिल चाहे, गुनाह उसी को कहते हैं ।'

शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी न हो, ख़ुदा न करे ऐसे हालात हों कि नौकरी की ज़रूरत पड़े और अगर पड़ती है तो इज़्ज़त की रोटी खाने के लिए नौकरी भी बहुत अच्छी चीज़ है । गृहस्थ जीवन के लिए भी उच्च शिक्षा बहुत आवश्यक है क्योंकि जितनी अच्छी शिक्षा होगी औलाद की तर्बियत भी उतनी ही अच्छी होगी जो एक अच्छा नागरिक बनने के लिए आवश्यक है ।

अनिवार्य नारी-शिक्षा

■ डॉ॰ प्रीत अरोड़ा
(मोहाली, पंजाब)

अगर नारी को शोषण और अत्याचारों के दायरे से मुक्त करना है तो सबसे पहले उसे शिक्षित करना होगा चूंकि शिक्षा का अर्थ केवल अक्षर ज्ञान नहीं होता अपितु शिक्षा का अर्थ जीवन के प्रत्येक पहलू की जानकारी होना है व अपने मानवीय अधिकारों का प्रयोग करने की समझ होना है । शिक्षा सफलता की कुंजी है । बिना शिक्षा के जीवन अपंग है । जीवन के हर पहलू को समझने की शक्ति शिक्षा के द्वारा ही प्राप्त होती है । ऐसा माना जाता है कि शिक्षा एक विभूति है और शिक्षित विभूतिवान ।

जहां आज समाज का एक नारी-वर्ग शिक्षित होकर समाज में अपनी एक अलग पहचान बना रहा है, परन्तु वहां एक वर्ग ऐसा भी देखने को मिलता है जो आज भी अशिक्षा के दायरे में सिमट कर मूक जीवन व्यतीत कर रहा है, और सवाल यह उठता है कि उनकी स्थिति में कितना सुधार हो रहा है ? महिला-दिवस बहुत धूमधाम और खुशी से मनाया जाता है, पर उस नारी-वर्ग की खुशियों का क्या जो अशिक्षा के कारण अपने मानवीय अधिकारों से वंचित महिला-दिवस के दिन भी गरल के आंसू पीती है । ऐसे समाज में पुरुष स्वयं को शिक्षित, सुयोग्य एवं समुन्नत बनाकर नारी को अशिक्षित, योग्य एवं परतंत्र रखना चाहता है । शिक्षा के अभाव में भारतीय नारी असभ्य, अदक्ष अयोग्य एवं अप्रगतिशील बन जाती है ।

बेटियों को विद्यालय भेजने की जगह उनसे घरेलू कामकाज करवाना, अभिभावकों द्वारा बालिका-मज़दूरी करवाना, बेटी के पराया धन के रूप मान्यता, बेटे व बेटी में अंतर करके बेटी को शिक्षा से वंचित कर देना आदि मानसिकताओं को लेकर नारी का शैक्षणिक शोषण होता आया है । अशिक्षा के कारण एक गृहिणी होते हुए भी सही अर्थों में गृहिणी सिद्ध नहीं हो पाती है । बच्चों के लालन-पालन से लेकर घर की साज-संभाल तक किसी काम में भी कुशल न होने से उस सुख-सुविधा को जन्म नहीं दे पाती जिसकी घर में उपेक्षा की जाती है ।

शिक्षा से रहित मूक जीवन बिताती हुई अनागरिक की भांति परिवार में जीवनयापन करती है । अशिक्षा के कारण नारी का बौद्धिक एवं नैतिक विकास भी उचित रूप से नहीं हो पाता । आमतौर पर घर-परिवार में यही मान्यता बनी रहती है कि नारी को घर का काम-काज ही देखना होता है, तो उसे शिक्षा की क्या आवश्यकता है ? परिवार का मानस एक ऐसी रूढ़िवादिता से ग्रसित हो जाता है जिसमें नारी को न तो पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तथा न उसे वैसी सुविधा प्रदान की जाती है ।

अशिक्षा का शिकार नारी अनेकानेक पूर्वाग्रहों, अंधविश्वासों, रूढ़ियों, कुसंस्कारों से ग्रस्त होकर अपने अधिकारों से वंचित हो जाती है । अगर नारी शिक्षित होकर एक कुशल इंजीनियर, लेखिका, वकील, डॉक्टर भी बन जाती है, तो भी कई बार पति व समाज द्वारा ईर्ष्यावश उसका शैक्षणिक शोषण किया जाता है । परिणामस्वरूप नारी को शिक्षित होते हुए भी पति का अविश्वास झेलकर आर्थिक, मानसिक व दैहिक रूप से उत्पीड़ित होना पड़ता है ।

महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार और छेड़छाड़, घरों, सड़कों, कार्यालयों सभी स्थानों पर देखा जा सकता है । बलात्कार, दहेज उत्पीड़न, हत्या आदि के जो मामले प्रकाश में आते हैं, उनमें से अधिकांश सबूतों के अभाव से छूट जाते हैं । इन सभी का कारण नारी को अशिक्षित बनाकर उसे उसके मानवीय अधिकारों से वंचित करना है ।

वास्तविकता यह है कि एक शिक्षित नारी ही अपने परिवार की अशिक्षित नारियों को पढ़ाकर अपने अर्जित ज्ञान व विकसित क्षमता का लाभ पूरे परिवार को दे सकती है । नारी सशक्तीकरण की आधारशिला भी शिक्षा ही है । शिक्षा द्वारा नारी सशक्त बनकर अपने व्यक्तित्व का उचित रूप से विकास कर सकती है, परन्तु आज नारी सशक्तीकरण के क्षेत्र की मुख्य बाधाएं हैं–जैसे महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा, अधिकारों के प्रति उदासहीनता, सामाजिक कुरीतियां आदि ।

कोलकाता में क़याम के लिए उमदा रिहाइश का मर्कज़



HOTEL AL-FALAH

Ph. : 033-22837901 , Cell : 9836015030
E-mail : hotelal_falah@hotmail.com

A/c Rooms & Non A/c Rooms
With
Attatch Bath Rooms

कोलकाता के शहर के दामन में (पार्क सर्कस) मुनासिब दामों पर रिहाइश का माक़ूल इन्तिज़ाम

एक बार ख़िदमत का मौक़ा ज़रूर दें।

83, Fazlul Haque Sarani, Kolkata - 700 017
WEST BENGAL

दुष्यंत की हिन्दी ग़ज़ल कथ्य के आईने में

■ डॉ॰ रामसनेहीलाल शर्मा 'यायावर'
(फ़िरोज़ाबाद)

हिन्दी ग़ज़ल शब्द सुनते ही दुष्यंत कुमार का नाम मस्तिष्क में कौंधने लगता है । इसमें संदेह की कोई गुंजाइश नहीं कि दुष्यंत कुमार ने पहले ग़ज़लकार के रूप में ग़ज़ल के उपकरण बिम्ब, प्रतीक, मुहावरे, उपमान, जीवन-दृष्टि और संवेदना का उपयोग ग़ज़ल-रचना के लिए करके हिन्दी ग़ज़ल रचना की नयी ज़मीन उद्घाटित की है । उसका नया सौन्दर्य शास्त्र गढ़ा है और काव्य-भाषा की नयी ताज़गी और विषयवस्तु के विस्तार से उसके नये द्वार खोले हैं । लोकप्रियता की एक ख़ास मंज़िल पर पहुंच कर उन्होंने आने वाले पीढ़ी के लिए ग़ज़ल-रचना के नये क्षितिज अन्वेषित किये हैं । दुष्यंत हिन्दी ग़ज़ल के आधारभूत स्तंभ हैं । इसलिए डॉ॰ किशोर काबरा घोषणा करते हैं कि पूरा हिन्दी संसार जानता है कि दुष्यंत हिन्दी-ग़ज़ल के ही पर्यायवाची बन गये । दुष्यंत सर्वहारा वर्ग की पीड़ाओं एवं व्यवस्था की विसंगतियों को ठीक तरह पहचान गये थे । दुष्यंत के बाद हिन्दी-ग़ज़ल धारा बड़ी तेज़ी से मैदान में उतर आयी।'

ग़ज़ल के क्षेत्र में दुष्यंत की भूमिका युग-निर्माणकारी थी । उनके सामने मसला अभिव्यक्ति का ही नहीं, माध्यम और विधा के चुनाव का भी रहा । गीत, नयी कविताएं, उपन्यास, काव्य नाटक लिखकर भी उन्हें संतोष नहीं हुआ तो ग़ज़ल को उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया और जानबूझकर इस काव्य-शैली को चुना क्योंकि उसमें सीधा संवाद पाठक का श्रोता के साथ संभव हो सका । बक़ौल दुष्यंत उनकी समस्या सिर्फ़ कहने की ही नहीं थी अधिकाधिक लोगों को कहने की थी ।' जिस रचनाकार ने विधा का चयन अभिव्यक्ति की मारक या प्रभावोत्पादक क्षमता के आधार पर किया हो तथा जिसमें अधिकाधिक लोगों को कहने की ललक हो, वह अपनी चयनीत विधा को ऊंचाई पर अवश्य पहुंचा देगा। दुष्यंत ने ग़ज़ल विधा का चयन किया और उसे ऊंचाई पर निश्चित रूप से स्थापित किया और इसी तथ्य को पुष्ट करते हुए प्रो॰ मधु खराटे कहते हैं कि दुष्यंत कुमार ने दिल को बहलाने के लिए ग़ज़लें नहीं लिखीं बल्कि अपनी व्यक्तिगत एवं समष्टिगत पीड़ा को सर्वसामान्य तक पहुंचाने के लिए ग़ज़ल को अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में स्वीकार किया । नयी कविता के समर्थ कवि दुष्यंत का ग़ज़ल विधा की ओर आकर्षित होना स्वाद-परिवर्तन नहीं, अपितु अन्तरात्मा का तक़ाज़ा है । जब किसी विधा विशेष में रचना धर्म निभाने के लिए कवि विवश हो जाता है तो उसका सृजन और वह विधा दोनों विशेष गौरव के हक़दार हो जाते हैं । दुष्यंत की विधा (ग़ज़ल) और उनका कृतित्व इसीलिए ऐतिहासिक उपलब्धियों का स्पर्श करते हैं ।

दुष्यंत की ग़ज़लें उन तमाम भाव बिन्दुओं को समेटे हुए हैं जो आज की अनेक विधाओं में पल्लवित हो रहे हैं । अनिरुद्ध सिन्हा के शब्दों में जनपक्षीय चेतना से सरोकार रखने वाली ग़ज़ल लिखने वालों में सर्वाधिक चर्चित नाम दुष्यंत कुमार का है । उनकी ग़ज़लों में संप्रेषणीयता, कलात्मकता एवं परिकल्पना चिंतन के प्रति बौद्धिक स्थान है । उसे सहज ही पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है । यथा–

'ये सारा जिस्म झुककर बोझ से दुहरा हुआ होगा,
मैं सजदे में नहीं था, आपको धोखा हुआ होगा ।

यहां तक आते-आते सूख जाती है कई नदियां मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा ।

ग़ज़ब यह है कि अपनी मौत की आहट नहीं सुनते,
वो सब के सब परीशां है वहां पर क्या हुआ होगा ।

चलो अब यादगारों की अंधेरी कोठरी खोलें
कम-अज़-कम एक वो चेहरा तो पहचाना हुआ होगा ।

इस ग़ज़ल के शेरों में अभिव्यंजना के जो तेवर हैं ये पूर्ववर्ती ग़ज़लों में ढूंढने से भी नहीं मिलते। समाजोनमुखता और युगबोध का मार्मिक रूपायन हिन्दी ग़ज़ल में दुष्यंत की ऐसी ही ग़ज़लों से प्रारंभ हुआ ।

व्यंग्यात्मकता दुष्यंत की ग़ज़ल की नयी विशेषता रही है । यह उनकी ग़ज़लों में व्यक्तिगत और राजनैतिक दोनों स्तरों पर हैं । उनकी ग़ज़लों को महत्व वर्तमान हिन्दी ग़ज़लों में भी व्यापक धरातल पर अवतरित हुआ है । दुष्यंत की

काव्य शैली 'साये में धूप' में व्यंग्यात्मक और संबोधनात्मक रही है । अनेक मिसरों में, शेरों में ग़ज़लों में कवि ने व्यंग्य का पूरा उपयोग किया है ।

कवि उन पीड़ा को स्वयं भोगता है तो उसकी रचनाओं में अनुभूति की गहराई आ जाती है । दुष्यंत की ग़ज़लों में जो गहराई व्याप्त है यह यों ही नहीं आ गयी है । धर्मवीर भारती के अनुसार 'आख़िर क्या था उन ग़ज़लों में जो इस तरह इतनी गहराई में झकझोर गया । उनकी मंझी हुई ज़बान, कसे हुए छन्द, बाँकिम भगिमा, नया तेवर कंसी हुई अभिव्यक्ति ? यह सब तो था ही, पर सबसे बड़ी बात यह भी कि वे एक ऐसे आदमी की प्रामाणिक पीड़ा भरी आवाज़ थी जो अपने इस मुल्क को, अपनी इस दुनिया को बेहद प्यार करता रहा है ।' इसी कारण उनकी ग़ज़लों में पीड़ा और समाज की वेदना रूपायित हो सकी है । ग़ज़ल की एक विशेषता यह होती है कि भाव-प्रवाह की दृष्टि से उसके शेर परस्पर जुड़े हुए नहीं होते । इससे एक शेर में एक भाव को उभारने के लिए पूरी शक्ति लगा दी जाती है । उर्दू ग़ज़ल की भाँति हिन्दी ग़ज़ल के विभिन्न शेरों में जो एक वैचारिक क्रम पाया जाता है, उसके लिए ग़ज़ल की अजीबो ग़रीब रचना-प्रक्रिया की ज़्यादा ज़िम्मेदार है । इससे लाभ यह है कि ग़ज़लकार को विषय वस्तु के लिए दौड़धूप नहीं करनी पड़ती, जो भाव उठता है वही एक शेर बन जाता है । दुष्यंत ने अपनी ग़ज़लों में भाव भूमि सामाजिक ही रखी है यहां तक कि प्रणयपरक अभिव्यक्ति में भी सामाजिकता के बिम्ब उभरते हैं । यथा–

'तमाम रात तेरे मैकदे में मय पी है
तमाम उम्र नशे में निकल न जाये कहीं ।
ये लोग होमो-हवन में यक़ीन रखते हैं
चलो यहां से चलें हाथ जल न जाये कहीं ।'

दुष्यंत के चिंतन का क्षेत्र सामाजिक है । उनके व्यक्तिगत संदर्भ भी सामाजिक बिम्ब उभारते हैं । प्रो॰ मधु खराटे ने उनके चिन्तन क्षेत्र को चार रूपों में वर्गीकृत किया है यथा–

(क) व्यक्ति चेतना (ख) सामाजिक चेतना (ग) राजनैतिक चेतना (घ) जीवन के विविध आयाम ।

व्यक्ति चेतना–व्यक्ति चेतना दुष्यंत की आस्था की पोषक है । डॉ॰ हरिचरण शर्मा के अनुसार दुष्यंत आस्था, कर्म और संघर्ष से जूझने वाले कवि के रूप में ही अधिक जाने जाने जा सकते हैं ।'

इस आस्था के बल पर ही उन्होंने लिखा–

''कैसे आकाश में सुराख़ नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो ।'

यह आशावादी दृष्टि ही उनकी ग़ज़लों को नये तेवर और नयी शक्ति दे सकी । इस आशावादी दृष्टि को जब व्यवहार में आघात लगते हुए देखा तो उनके शेरों में निराशा का स्वर भी फूटा । दृष्टव्य है–

'ज़िन्दगानी का कोई मक़सद नहीं है
एक ही हद आज आदमक़द नहीं है ।'

यह निराशा दुष्यंत में उनके लेखन के प्रारंभ में भी थी । सन् 1983 ई॰ में प्रकाशित कृति 'आवाजों के घेरे' में लिखते हैं–

'मैं क्या कहता आख़िर उस हक़ होने वाली पीढ़ी से
देने पड़े विफल होकर वे सूखे फूल उदास चिराग़ ।'

लेकिन यह निराशा ही उनकी आस्था को बल देने वाली सिद्ध हुई ।

सामाजिक चेतना–दुष्यंत की सामाजिकक चेतना का मूल आधार मानवीय संवेदना है । उसमें मार्क्सवादी चिंतन का भी पुट है । सामाजिक चेतन भाषाई कट्टरता को भी सहन नहीं करती । इसीलिए दुष्यंत ने कहा कि 'हिन्दी और उर्दू अपने-अपने सिंहासन से उतर कर जब आम आदमी के पास आती है तो उसमें फ़र्क़ कर पाना बड़ा मुश्किल होता है । उनकी सामाजिक दृष्टि की गवाही देता हुआ एक शेर देखें–

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए ।'

दुष्यंत जी की तकलीफ़ अपनी निजी नहीं, अपितु आम आदमी की तकलीफ़ है । देश में महंगाई, ग़रीबी, भूखमरी, बेकारी, भ्रष्टाचार, लापरवाही आदि से उद्‌भूत आम आदमी की फटेहाल ज़िन्दगी की तकलीफ़ है।' उन्होंने वैयक्तिकता को भी अपनी ग़ज़लों में सामाजिकता में घोलकर प्रस्तुत किया है ।

जिन मूल्यों से भटकने की प्रवृत्ति का चित्रण भी उनकी सामाजिक चेतना का प्रतिफल है । वे कहते हैं–

'मेले में भटके होते तो कोई घर पहुंचा जाता
हम घर में भटके हैं कैसे और ठिकाने आएंगे ।'

वे समाज को सजग और जीवंत रूप में देखना चाहते थे । इसीलिए कहा–

'मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए ।'

इसी तरह एक अन्य शेर देखें–

एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तो,
इस दीये में तेल से भीगी हुई बात सी है ।'

यह हमारा समाज ही एक 'दीया' है । इस प्रकार जिसे प्रकाशित व प्रज्वलित करने की आवश्यकता है । इस प्रकार के शेर दुष्यंत की मूल्य-चेतना का भी प्रक्षेपण करते हैं ।

भौतिकता के लगाव ने आज आदमी को एक वस्तु बना दिया है और एक व्यक्ति विशेष का सम्मान तभी तक करता है जब तक उसके लिए उपयोगी रहता है । इस वस्तुवादी दृष्टिकोण की प्रवृति से भी दुष्यंत आहत हुए और अपनी ग़ज़लों में अपनी व्यथा इस प्रकार व्यक्त की–

'जिस तरह चाहो बजाओ इस सभा में
हम नहीं आदमी हम झुनझुने हैं ।'

दुष्यंत की सामाजिक चेतना में राष्ट्रीय तत्वों का रंग है–

'कल नुमइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए
मैंने पूछा तो बोला हिन्दुस्तान हूं ।'

दुष्यंत की सामाजिक चेतना के विषय में संतोष कुमार तिवारी ठीक कहते हैं कि–'दुष्यंत कुमार समाज के उस वर्ग विशेष के चरित्र को अच्छी तरह पहचानता है जो ख़ून बहाने की स्थिति में तटस्थ बनकर बैठ जाते हैं और समय आने पर दुकानें लगाकर बैठ जाते हैं ।

राजनीतिक चेतना–दुष्यंत के समय तक भारतीय राज़नीति में प्रदूषण और भ्रष्टाचार की गति काफ़ी तीव्र हो चुकी थी और इस स्थिति ने उनको भीतर तक झकझोर दिया था । इसी कारण उनकी ग़ज़लों में राजनीतिक चेतना के बिम्ब बार-बार उभरते हैं । उनकी सामाजिक चेतना में राजनीतिक बोध घुला मिलता है । पीछे एक शेर दिया है कि–

'जिस तरह बजाओ इस सभा में
हम नहीं हैं आदमी हम झुनझुने हैं ।'

इस से राजनीति बिम्ब रूपायित होता है । एक अन्य शेर देखें–

'मस्लहत–आमेज़ होते हैं सियासत के क़दम
तू न समझेगा सियासत तू अभी इन्सान है ।'

इसी संदर्भ में एक अन्य शेर देखें–

भूख है तो सब्र कर रोटी नहीं तो क्या हुआ
आज कल दिल्ली में है ये मुद्दआ ।'

राजनीतिक चेतना उनकी उन ग़ज़लों में अधिक व्यक्त हुई है जिनमें व्यंग्य की शैली अपनाई गई है । एक प्रमुख तत्व है और इसकी जड़ें दुष्यंत में देखी जा सकती हैं । एक शेर जिसे पीछे उदधृत किया जा चुका है, पुनः देखें, यह राजनीतिक चेतना का स्पष्ट खुलासा करता है । यथा–

यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां,
मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा ।'

राजनीति की धुरी संविधान होता है । दुष्यंत की निगाह में संविधान भी नहीं बच पाया है । वे कहते हैं–

'सामान कुछ नहीं फटेहाल हैं मगर
झोले में उसके पास कोई संविधान है ।'

स्वार्थवृत्ति, सत्तामोह और मतदाता को भ्रमित करना आदि भारतीय राजनीति ही नहीं, विश्व-राजनीति का आधार बन गये हैं । दुष्यंत ने अपनी ग़ज़लों में इन राजनीति कुप्रवृत्तियों पर करारे व्यंग्य कसे हैं ।

जीवन के विविध आयाम–दुष्यंत ने जीवन के विविध आयाम को अपनी ग़ज़लों में उकेरा है । उनकी ग़ज़लें कोरी हवा में छलांग नहीं लगाती, वे जीवन के यथार्थ को प्रक्षेपित करती हैं । मानवीय संवेदना उनका मूल आधार है । डॉ॰ मधु खराटे के अनुसार इनकी ग़ज़लों में मानवीय संवेदना, सत्य की अभिव्यक्ति, यथार्थ का बोध, प्रेरक आहवान, आम आदमी की विवशता, अंधविश्वास का विरोध, विज्ञावर की प्रचुरता, प्रेम निरूपण आदि का चित्रण व्यापक रूप में हुआ है । ग़ज़ल ऐसी विधा है, ख़ासकर हिन्दी में आने के बाद जिसमें युगबोध की भूमिका अत्यंत तीन रूप में दिखाई देती है । ग़ज़लकार के पास एक विशेष साधारणीकरण जैसी स्थिति होती है जहां प्रेमिका के प्रति संबोधन लासित होते हुए भी अनाम रह जाता है । ऐसे में वह ख़ुद को, प्रेमिका को व लोगों को भी मुख़ातिब कर रहा होता है और तीनों के अन्तर को मिटा देता है । ये जब किसी को संबोधित करते हैं तो उसमें समाज का एक बड़ा भाग निहित होता है ।

(क) पक गयी है आदतें बातों से सर होगी नहीं
कोई हंगामा करो, ऐसे गुज़र होगी नहीं ।

(ख) तेरी जुबान है झूठी जम्हूरियत की तरह
तू एक ज़लील सी गाली से बेहतरीन नहीं ।

यहां 'क' में 'करो' में जो संबोधन छिपा है यह एक व्यक्ति नहीं संपूर्ण समाज है । 'ख' में 'तेरी' और 'तू' में समाज का एक बड़ा भाग समाहित है । इस प्रकार दुष्यंत की ग़ज़लें शब्द से परे जाकर एक व्यापक परिदृश्य का रूपायण करती हैं । इनमें मानव जीवन के विविध पक्ष अभिव्यंजना के लाक्षणिक रंग में अवतरित होते रहे हैं ।

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)



एक दृष्टि में

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 29 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 8 बैच 88 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 5 बैच 53 छात्राएं ● 1993 ई० से 2014 ई० तक 75 अनाथ बच्चियों और 51 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 30 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 16,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,00,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : इक़बाल अहमद ख़ां (Ph. : 09934480190)

ईदुल फ़ित्र : केवल ख़ुशी मनाने का दिन नहीं

❖ मुहम्मद सिब्ग़तुल्लाह नदवी

ईदुल फ़ित्र का त्योहार साल में एक बार आता है, लेकिन यह अपने साथ ढेर सारी ख़ुशियां लाता है । यह भी इस्लाम ही की देन है कि इसने अपने अनुयायियों के लिए कुछ ऐसा प्रबंध कर दिया है कि इस दिन अमीर-ग़रीब सभी के चेहरे व घरों में एक समान ख़ुशियों के आसार नज़र आते हैं । अमीर जहां अल्लाह की दी हुई दौलत के द्वारा ख़ुशी प्रकट करता है, अच्छे से अच्छा कपड़ा पहनता और अच्छे से अच्छा खाना खाता-पीता है, वहीं ग़रीबों, कमज़ोरों और बेसहारों के लिए अल्लाह तआला ने सदक़ा फ़ितरा के रूप में सुप्रबंध कर दिया है।



ख़ुशी मनाने के ये ईश्वरीय प्रबंध अपनी जगह पर हैं । सवाल सिर्फ़ ख़ुशी मनाने का नहीं है, यह सच है कि ईद का मतलब ही ख़ुशी मनाने का होता है, लेकिन इस्लाम और अन्य धर्मों में एक बुनियादी अन्तर यह है कि इस्लाम में हर अमल एक इबादत है, जबकि अन्य धर्मों में इबादत केवल कुछ विशेष रस्मो-रिवाज का नाम हो गया है ।

ईदुल फ़ित्र जहां ख़ुशी मनाने का दिन है, उसी तरह यह अल्लाह का शुक्र अदा करने का भी दिन है, लेकिन अफ़सोस कि अन्य धर्मों के रस्मो-रिवाज से प्रभावित होकर बहुत-से मुसलमानों ने ईदुल-फ़ित्र को शुक्राने का माध्यम बनाने के बजाए केवल ख़ुशी का माध्यम बना दिया है । ईदुल-फ़ित्र की नमाज़ को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए, तो दूर-दूर तक हमारी कार्यशैली और व्यवस्तताओं से इबादत ज़ाहिर नहीं होती । जब किसी काम का मौलिक उद्देश्य ही समाप्त हो जाए, तो निस्संदेह यह बात अत्यंत चिंताजनक है और इस पर गंभीरता से ध्यान देने की ज़रूरत है, क्योंकि धीरे-धीरे इस्लामी त्योहारों में असंगत बातें दाख़िल हो रही हैं, जो इसकी आत्मा को समाप्त कर रही हैं ।

इस्लाम प्राकृतिक-धर्म का दूसरा नाम है । इसने जहां अपने अनुयायियों के लिए ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा के रूप में जो महान त्योहार बनाए, जो एकता, सौहार्द, आपसी भाईचारा, प्रेम-मुहब्बत व त्याग की ऐसी मिसाल पेश करते हैं कि अन्य धर्मों के लोग भी इसे उत्तम समझते हैं, लेकिन दूसरी तरफ़ हमारा हाल यह है कि इतने महान त्योहारों को भी असंगत-व्यर्थ कर्मों में व्यतीत कर रहे हैं । इनकी तैयारी में तो कोई कसर नहीं छोड़ते, लेकिन हमारे बहुत से मुस्लिम भाइयों को इसका अवसर नहीं होता कि जितनी तैयारी हम त्योहारों के दिन ख़ुशी प्रकट करने के लिए करते हैं, थोड़ी-सी तैयारी त्योहार के आरंभ में इबादतों को ठीक से अदा करने के लिए कर लें । यह कितने अफ़सोस की बात है कि बहुत-से मुसलमानों को ईद की नमाज़ का तरीक़ा ही मालूम नहीं होता ।

इमाम साहब हर साल नमाज़ से पहले दो-तीन बार नमाज़ का तरीक़ा, जो आम नमाज़ों से थोड़ा अलग होता है, बता तो देते हैं । शोरोगुल में बहुत से लोग या तो इमाम साहब की आवाज़ सुन नहीं पाते या सुनते भी हैं तो नज़रअंदाज़ कर देते हैं । इस तरह हर बार ईदुल-फ़ित्र और ईदुल-अज़हा में वही ग़लती दोहराते हैं, जिसके सुधार की तरफ़ हर बार ध्यान दिलाया जाता है । एक-दूसरे को देखकर किसी तरह

दो रकअत नमाज़ अदा कर देते हैं । इधर एक और बुराई व कोताही देखने को मिल रही है कि बहुत से लोग दो रकअत नमाज़ के बाद इस तरह ईदगाह या मस्जिद से भागने लगते हैं, जैसे ख़ुत्बा सुनना उनके लिए बेकार का काम है । ऐसा करके एक तो वे पाप के भागी बनते हैं, दूसरे बीच में उठने से सफ़ों में बैठे हुए अन्य लोगों को ख़ुत्बा सुनने में परेशानी होती है ।

तीसरे शरीअत से अनभिज्ञ नयी नस्ल में ग़लत पैग़ाम जाता है । वह भी समझने लगते हैं कि ख़ुत्बा सुनना ज़रूरी नहीं है । फिर ईदगाह से बाहर जाने के लिए भगदड़ मचती है, इसमें बहुत से मुसलमान भाई भी शामिल हो जाते हैं, जो मुकम्मल नमाज़ पढ़ने के इरादे से आये हुए होते हैं ।

ख़ुशी मनाने के तरीक़ों की फ़िक्र और इबादत के तरीक़ों से लापरवाही स्पष्ट करती है कि हम ईद की हक़ीक़ी रूह और उसके मूल संदेश से कितने दूर हो रहे हैं । आजकल ईद और बक़रीद में नये-नये ग़ैर-शरई वस्त्र पहनने का एक नया फ़ैशन चल गया है । अच्छा खाने-पीने और पहनने पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता है और अनगिनत ख़ुराफ़ात इन त्योहारों में शामिल हो गये हैं । कुछ तो ज़रूरी समझकर कोई भी इस पहलू से सोचने के लिए तैयार नहीं है कि ख़ुशी के इस दिन को भी नेकी और पुण्य का ज़रिया कैसे बनाएं ।

नेकी और बरकतों के मौसम रमज़ानुल मुबारक के बाद ईदुल-फ़ित्र का आना अपने आपमें एक बहुत बड़ा पुरस्कार है । जब हम रमज़ान मुबारक के पूरे महीने को इबादत और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने में गुज़ार सकते हैं, तो इस महीने के ख़त्म होते ही अचानक इबादत और अल्लाह तआला की ख़ुशनुदी और प्रसन्नता से इतने बेफ़िक्र क्यों हो जाते हैं । इस्लाम ख़ुशी मनाने से नहीं रोकता, लेकिन वह ख़ुशी ऐसी न हो, जो अपने कर्तव्यों, इबादतों और परलोक (आख़िरत) से असावधान कर दे । होना तो यह चाहिए कि ईद के दिन जितनी हम ख़ुशी मनाते हैं, उससे कहीं ज़्यादा रमज़ानुल मुबारक जैसे महान पुरस्कार पर ख़ुदा का शुक्र अदा करें । ग़लत कामों से बचें, तौबा व अल्लाह से क्षमायाचना करें, अन्यथा त्योहार मनाने के मामले में हममें और अन्य धर्मों के अनुयायियों में अन्तर क्या रहेगा ।

हमें इस पहलू से सोचना चाहिए कि इस्लाम में त्योहार का उद्देश्य केवल ख़ुशी मनाना, तरह-तरह की ख़ुराफ़ातें करना, समय व पैसे की बर्बादी नहीं होता है । सादगी जहां इस्लामी त्योहार की मुख्य विशेषता होती है, वहीं इसमें त्याग व क़ुरबानी देखने को मिलती है । इबादत अल्लाह की प्रसन्नता और कृतज्ञता प्रकट करना तो जैसे इस्लामी त्योहारों के स्रोत होते हैं । फिर ईदुल-फ़ित्र व ईदुल-अज़हा जिनका प्रारंभ ही इबादत और कृतज्ञता प्रकट करने से होता है, केवल दो रकअत नमाज़ के बाद पूरे दिन के लिए इबादत का उद्देश्य कैसे ख़त्म हो सकता है ? इसमें कोई संदेह नहीं कि त्योहार अपने साथ बहुत-सारी ख़ुशियां लाता है, जिसका आनन्द लेना चाहिए, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि इन्सान इन ख़ुशियों में इतना व्यस्त हो जाए कि त्योहार की पृष्ठभूमि, रब की बन्दगी, भाईचारगी और त्याग व क़ुरबानी की भावना को भूल न जाए ।



रिफ़्यूजी

■ प्रो॰ शामलाल कौशल

85 वर्षीय न्यामत राय सरकारी वृधाश्रम में एक थाली में परोसे गये भोजन को खाने को तैयार हो रहा था । उसकी तरह बहुत सारे आदमी और औरतें भी दाल-रोटी की अपनी-2 बारी का एक दरी पर बैठे हुए इन्तज़ार कर रहे थे ।

यह सब देखकर वह 1947 के देश के बंटवारे की दु:खद यादों में खो गया । उसे याद है कि किस तरह उसके पिता, धनपत राम उसकी माता, लाजवंती तथा दो भाई थे । उनका अच्छा ख़ासा काम धंधा था । उनका नाम मुलतान शहर में बहुत इज़्ज़त तथा भरोसे के साथ लिया जाता था । लेकिन अचानक एक दिन शहर में इस अफ़वाह से अफ़रा-तफ़री मच गयी कि भारत का बंटवारा हो रहा है । जिस जगह वे रह रहे थे वह पाकिस्तान बनेगा तथा उन्हें इसी वक़्त सब कुछ छोड़कर हिन्दुस्तान जाना पड़ेगा । अचानक ही वहां छुरों, चाकुओं तथा लाठियों से लैस कुछ शरारती लोगों की भीड़ आई तथा उन्होंने देखते-देखते उसके सारे परिवार को मौत के घाट उतार दिया । उनके घर में लूट मार क़र उसे आग लगा दी ।

न्यामत राय किसी तरह भागकर एक टूटी हुई दीवार के पीछे छुप गया । जब सब लोग चले गये तो वह बाहर आया, ख़ौफ़नाक दृश्य देखकर वह चीख़ना तथा रोना चाहता था लेकिन ऐसा इसलिए नहीं कर सका कि कहीं वे शरारती लोग वापिस आकर उसे ही न मार दें । जब उसने बाहर आकर देखा तो बाक़ी घरों का हाल भी उसके घर की तरह ही था । इतने में गोरखा मिल्ट्री वालों की दो गाड़ियां आयीं कुछ लोगों के साथ वह भी उनमें बैठ गया । गाड़ी 4-5 दिन में मुलतान से जालंधर पहुंची । जालंधर में उसे औरों के साथ एक रिफ़्यूजी कैम्प में रखा गया । उस कैम्प में एक टेंट में वे कोई 25-26 आदमी रहंते थे । वे ज़मीन पर सोते थे ।

सुबह शाम उन्हें दाल रोटी तो कभी-कभी आलू की सब्ज़ी तथा रोटी तथा शाम को चाय दी जाती थी । कभी-कभी वह कैम्प क्रे बाहर घूमने-फिरने जाया करते थे । लोग जब उसे रिफ़्यूजी कहते तो उसे अपनी दयनीय स्थिति पर बहुत ग्लानि होती ।

अत: उसने पहले कुछ समय के लिये शहर में मज़दूरी की । जब कुछ पैसे हो गये तो उसने कुछ कपड़े ख़रीद कर बेचने के लिए फेरी लगानी शुरू की । फिर जब और पैसे इकट्ठे हो गये तो उसने कपड़े की दुकान खोल ली । जब उसकी दुकान चल पड़ी तो उसने विवाह कर लिया । उसका बेटा तथा एक बेटी पैदा हुए । उनकी अच्छी परवरिश की ।

उसने पहले बेटी की शादी की और उसका बेटा दुकान में उसकी सहायता करने लगा । उनका काम ख़ूब चल पड़ा फिर उसने अपने बेटे का भी विवाह कर दिया उसकी पुत्रवधु एक अच्छे घर से थी । परन्तु धीरे-2 उसने अपनी चालाकी से अपने पति, ससुर तथा सास को अपनी मुट्ठी में इस तरह कर लिया कि सारा धन तथा जायदाद अपने पति तथा अपने नाम करा लिया फिर सास तथा ससुर को अपमानित करना शुरू कर दिया। वे बेचारे खाने-पीने के लिये भी लाचार हो गये । अपने बेटे तथा बहू से तंग आकर न्यामत राय तथा उसकी पत्नी एक सरकारी वृधाश्रम में जीवन के आख़िरी दिन काटने के लिए चले गये । आज जब वहां सभी वृद्धों तथा वृद्धाओं को दाल रोटी बांटी जा रही थी तो उसे लगा कि वह एक बार फिर रिफ़्यूजी हो गया है । पाकिस्तान में जिन्होंने उसके परिवार को समाप्त कर उनकी धन सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा किया था वे तो उनकी क़ौम के शत्रु थे, पराये थे लेकिन वहां उसे लूटने वाले, घर से बेघर कर उसके धन माल पर क़ब्ज़ा करने वाले उसके अपने थे। पाकिस्तान से उजड़कर तो वह हिन्दुस्तान में आकर बस गया था । लेकिन अपने ही लोगों से लुटकर अब जब कि वह निर्धन, बूढ़ा, बीमार, कमज़ोर तथा बेकार था वह क्या कहकर अपनी पत्नी को भरोसा दे, उसे समझ में नहीं आता था । दूसरी बार बना वह रिफ़्यूजी हमेशा इसी उधेड़बुन में पड़ा रहता था ।

लिस्ट

■ हबीब इकराम

"क्या कर रहे हो बेटा ?"

"कुछ नहीं मामा जी । कल जो आप ने कहा था कि लिस्ट वाला काम, वही कर रहा था ।"

"अच्छा-अच्छा, यह लिस्ट तैयार कर रहे हो । पूरी हो गई होगी ?" "नहीं मामा जी । अभी पूरी नहीं हुई हैं । कल रात आठ-दस नाम लिखे थे, अभी पूरी किए देता हूं ।" भान्जा बोला ।

"अच्छा तो ऐसा है पहले उन ही लोगों के नाम बताओ जिनके नाम तुमने लिखे हैं । बाक़ी दोनों मिलकर अभी लिस्ट तैयार कर लेते हैं । जल्दी ही लोगों को अपनी नई पुस्तक जो भेजनी है ।" "एक डेढ़ घंटे में पूरी लिस्ट दिए देता हूं । तब एक साथ देख लीजिएगा मामा जी ।"

"नहीं-नहीं जितना लिख चुके हो या जितनी बना चुके हो वह नाम बता दो । कुछ समझ में नहीं आए। लाओ दिखाओ या चलो बोल ही दो, मैं सुने लेता हूं ।"

"जी मामा जी । सुनिए पहले मैंने हिन्दी व उर्दू साहित्य के लोगों के नाम लिए है ।"

"अमां नहीं । हिन्दी-उर्दू वालों को छोड़ो । ये सब बड़े 'महान' होते हैं ।" "महान ! मामा जी आप यक़ीनन इन्हें महान के रूप में ले रहे हैं या घटिया, घसियारे और मूर्ख के रूप में ।" "अब जो तुम समझो ।"

"लेकिन आप भी तो लेखक हिन्दी के ही हैं और हिन्दी का दम भी भरते हैं ।"

"अब वह छोड़ो, वह बहस का मुद्दा हो जाएगा ।"

"नहीं माम जी, मैं नहीं छोड़ूंगा। वहस का मुद्दा नहीं है । आप को मुझे समझाना पड़ेगा ।"

बताइए, ली काहे थी किताब बड़े शौक़ व ज़ौक़ से ? सिर्फ़ बुक-शेल्फ़ को सजाने के लिए ।" "और हिन्दी वाले मामा जी।" "हिन्दी वाले को क्या कहें, ये तो क्या कहें, ये तो 'अपने हुए पराए' जैसे हैं, विद्या ही अटक गयी । साहित्यकारों को दो तो व्यक्ति, पुस्तक आकार, रूप-रंग व अपनी व्यवस्था के आधार पर पुस्तक पढ़ेंगे । उनके पास ऐसे कइयों की किताबें हर सप्ताह आती हैं । कभी समीक्षा के लिए कभी उपहार-स्वरूप । गर वो समीक्षक नहीं हैं तो अपना लेखन कार्य करने में बिज़ी हैं । एकाध जो पढ़ने के शौक़ीन हैं, अनुजों और नयों को उत्साहवर्धन करना जानते हैं वे अवश्य पुस्तक लेते हैं तो आधी, पौनी या पूरी अवश्य कर लेते हैं ।

"तो फिर ऐसा है मामा जी छांट-छूटकर हिन्दी-उर्दू से दो-तीन लेकर बाक़ी छः-सात नाम काट देता हूं ।"

"ठीक है । फिर ?" मामा जी ने संक्षिप्त रूप से कहा ।

"मामा जी ।" भान्जे ने कुछ सोचकर चहकते हुए कहा । "साहित्य का समाज में सदा से संबंध रहा है ।"

"रहा है । तो ?" मामा जी बोले ।

"तो मामा जी मैं सोच रहा हुं कि आप की कुछ पुस्तकें समाजशास्त्र वालों को दे दें ।"

"क्या मूर्खता की बात कर रहे हो ? अरे भई । हिन्दी-उर्दू तथा समाज एक दूसरे से संबंधित हैं । जैसे हिन्दी-उर्दू वाले वैसे ही ये समाज शास्त्र वाले हैं । इनके भी वही हाल है । किताब दो तो हफ़्ते दस दिन में भी पुस्तक वहीं की वहीं । इन्हें कमाने खाने और दौड़-दौड़ कर यूनिवर्सिटी कापी जांचने से ही फ़ुर्सत नहीं । जितना कमा लें उतना कम । ये हैं, हिन्दी वाले । समझे ?"

"तो फिर क्या करें । किसे दी जाएं पुस्तकें ।"

"मैं तो सोचता हूं इस बार" मामा जी कुछ सोचकर बोले "पुस्तक में शुद्ध रूप से सूखे और शुष्क राजनीतिशास्त्र व अर्थशास्त्र वालों को दे दूं वे न भी पढ़ेंगे तो कोई बात नहीं ।" "तो मामा जी...।"

"हां भांजे, बोलो ।" मामा जी ने माथे पर आए बालों को पीछे करते हुए कहा, "ऐसा है बेटा मैं सोचता हूं लिस्ट उन लोगों की बनाओ जिनके घर पढ़ने का शौक़ हो और जिस घर पर हर उम्र के कई पढ़ने वाले हों । मेरा उन लोगों को पुस्तक देना ठीक है, जहां वह पढ़ी जाए शौक़ से या सरसरी तौर से ।

"जी" कोई आवश्यकता नहीं कि हिन्दी वालों को दूं, उर्दू वालों को दस्तयाब कराऊं, सोशियोलोजी को समाजी समझ के आधार पर दूं, लेक्चरार और प्रोफ़ेसरों को दूं । बस शुरू हो जाओ बेटा । मैं बोल देता हूं ऐसे लोगों के नाम जो मेरी स्मृति में हैं और जिन्हें इस बार पुस्तक देना मैं पसंद करूंगा ।

(लेखक की पुस्तक 'कितनी अकेली' से संग्रहीत)

दुर्घटनाओं को कम करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण ज़रूरी

■ भारत डोगरा

दुख-दर्द का बड़ा और महत्वपूर्ण कारण है विभिन्न तरह की दुर्घटनाएं । इनमें सड़क दुर्घटनाएं सबसे महत्वपूर्ण हैं पर अनेक अन्य तरह की दुर्घटनाएं भी बहुत दर्दनाक हो सकती है जैसे औद्योगिक व खनन दुर्घटनाएं । भोपाल गैस दुर्घटना का उदाहरण दुनिया भर में दिया जाता है कि कैसे एक दुर्घटना लाखों लोगों के लिए दुख-दर्द का एक बड़ा और दीर्घकालीन कारण बनती है जिसका असर कई पीढ़ियों तक बना रह सकता है ।

दुर्घटना को प्राय: एक ऐसी अनहोनी घटना मान लिया जाता है जिसे रोका नहीं जा सकता था या जिसे रोकने पर किसी का नियंत्रण नहीं था । इसके साथ यह सोच जुड़ी रहती है कि क़िस्मत ख़राब थी अत: दुर्घटना हो गयी थी । अगला क़दम यह है कि इसके साथ कई अंधविश्वास भी जुड़ जाते हैं । क़िस्मत ख़राब चल रही है या ग्रहदशा ठीक नहीं है तो इसके लिए जादू-टोना भी किया जा सकता है । इस तरह के अवैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक बहुत बड़ी क्षति होती है कि दुर्घटनाओं की संभावना को रोक सकते के लिए जो व्यापक स्तर पर प्रयास ज़रूरी है वे प्रयास आगे नहीं बढ़ पाते हैं ।

सच्चाई तो यह है कि यदि दुर्घटनाओं का विश्लेषण सावधानी से किया जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इन दुर्घटनाओं के पीछे ऐसे अनेक कारण मौजूद हैं जिन्हें ज़रूरी सावधानियों को अपना कर दूर किया जा सकता है । उदाहरण के लिए यदि अधिकांश सड़क दुर्घटनाओं का विश्लेषण करे तो इनमें से कोई कारण सामने आ सकता है– नशे की हालत में ड्राइव करना । अत्यधिक स्पीड से गाड़ी चलाना या अनुचित ओवरटेक करना । ड्राइविंग करते समय लापरवाही हैसे मोबाइल फ़ोन बार-बार सुनना या बहुत बातें करना या बहुत संगीत सुनना । वाहन में समय पर मरम्मत न करवाना या वाहन में सुरक्षा मानक की अवहेलना । सड़क की बहुत प्रतिकूल स्थिति । लंबी ड्राइव से पहले पर्याप्त नींद न लेना ।

ड्राइवर को पर्याप्त प्रशिक्षण व अनुभव न होना । इसके अतिरिक्त और भी अनेक कारण हो सकते हैं । मूल बात यह है कि यदि इस तरह के सभी चिन्हित कारणों को कम करने के प्रयास निरंतरता से हो तो दुर्घटना की संभावना अपने आप कम हो जाएगी । फैक्ट्रियों में जो अनेक दुर्घटनाएं होती हैं उनके भी अनेक कारण होते हैं जैसे–फैक्ट्री में व वहां की मशीन में ज़रूरी सुरक्षा मानक न होना । अत्यधिक ओवरटांइम के कारण मज़दूर का बहुत थका होना । मज़दूर को सामान्य गति से अधिक तेज़ी से काम करने के लिए कहना या कार्य का अत्यधिक लक्ष्य निर्धारित कर देना । कम आय या कम पोषण के कारण मज़दूर का बहुत कमज़ोर होना । पिछली रात को किसी कारण से मज़दूर का ठीक से नींद न प्राप्त करना । कार्य स्थल पर झगड़े या डांट-मार के कारण मज़दूर का कार्य से ध्यान उचट जाना ।

इस तरह के अन्य कारण भी हो सकते हैं । यदि इन सभी चिन्हित कारणों को कम से कम करने का उपाय निरंतरता से किया जाए तो दुर्घटनाओं में निश्चय ही कमी आएगी । मूल बात यह है कि दुर्घटनाओं के कारणों को सावधानी से किये गये विश्लेषण से समझना चाहिए व इन सभी कारणों की संभावना को न्यूनतम करने का प्रयास निरंतरता से व निष्ठा से करना चाहिए । इससे दुर्घटनाओं की संभावना में निश्चित तौर पर कमी आती है ।

इस तरह प्रतिवर्ष देश में हज़ारों दुर्घटनाओं को रोका जा सकता है व हज़ारों जीवन बचाये जा सकते हैं । दुर्घटनाओं संबंधी समग्र जानकारी अभी किसी एक स्थान पर उपलब्ध तक नहीं है । सबसे अधिक चर्चा में सड़क दुर्घटनाएं हैं जिनमें प्रतिवर्ष भारत में लगभग डेढ़ लाख मौतें होती हैं ।

طبقات دوزخ سات ہیں۔ سقر۔ سعیر۔ لظی۔ حطمہ۔ جحیم۔ جہنم اور ہادیہ۔

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

قادری قبض روجن

گیسٹک کے درد میں؟



بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے

زعفرانی تیل

گٹھیا کے درد میں؟



کسی بھی قسم کے درد چوٹ موچ۔ گٹھیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشٹک چورن

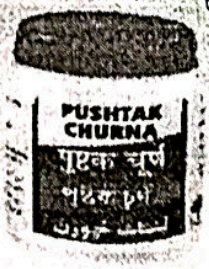

جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی

شوگر کی کامیاب دوا

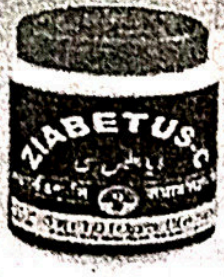

مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

زعفرانی مالٹ

ہر عضو کی کمزوری کے لئے



دماغ و اعصاب کے لئے محرک ہے۔ ضعف باہ کو دور کرتی ہے اور اعلیٰ درجہ کا مسک بھی ہے۔ اس کے متواتر استعمال سے مردانہ قوت اور خواہش میں اضافہ ہوتا ہے۔

مقدار خوراک۔ صبح و شام۔ ۵ گرام دودھ کے ساتھ

کیسر فورٹ

قوت باہ کی طاقت میں اضافہ کے لئے



اگر مرد کی قوت میں مردانگی میں کمزوری واقع ہو تو اس سبب ضعف باہ کہتے ہیں اور اگر ضعیف و جیف اولاد کرنے کے بالکل قابل نہ ہو تو اس کو نامردی کہتے ہیں۔ ان کا کافیلہ کو دور کرنے کے لئے ادارہ قادری دواخانہ نے قیمتی یونانی جڑی بوٹیوں کے مرکب سے ایک ایسی کیسر فورٹ ایجاد کرلی ہے جو اعصاب کو طاقت دے کر باہ کی طاقت کو بڑھاتی ہے اور کمزوری کو دور کرنے میں بہت ہی مفید ہے۔

مقدار خوراک روزانہ ایک گولی سوتے وقت دودھ کے ہمراہ

Qadri Dawakhana™
B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24
(O) S-152, B. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018
Ph. No. 2469-3173-2489-3539 (M) 9830009010 / 9674013169
Website : www.qadridawakhana.com
Email : qadridawakhana80@yahoo.co.in

STOCKIST

Qadimi Dawakhana
1397, Ballimaran, Delhi - 6
Ph : 011 23966395

M/s. Shifa Clinic
A-280, Moti Masjid Road,
P.O. Chikamberpur, Shaheed Nagar,
Ghaziabad, Ph : 0120 - 2021286

इसके अतिरिक्त यातायात की दुर्घटनाएं लें तो रेल दुर्घटनाएं, नांव दुर्घटनाएं व वायुयान दुर्घटनाएं हैं । अन्तिम श्रेणी को छोड़ दें तो शेष सभी दुर्घटनाओं के उपलब्ध आंकड़े वास्तविकता से कम हैं ।

यातायात के बाद दूसरे नम्बर पर कार्य स्थल पर होने वाली दुर्घटनाएं हैं । इनकी संख्या को कम दिखाने के प्रयास सबसे संगठित ढंग से होते हैं । कार्य स्थल यानी उद्योगों, खदानों, खेत-खलिहान, प्लांटेशन, निर्माण कार्यों, सफ़ाई कार्य आदि में होने वाली दुर्घटनाओं और उनमें हुई मौतों के सरकारी आंकड़े वास्तविकता से कहीं कम हैं । यह आंकड़े विभिन्न विभागों, केन्द्र व राज्य सरकारों में बिखरे हुए हैं । आवास में होने वाली दुर्घटनाएं सबसे उपेक्षित है । इनमें प्रति दुर्घटना चाहे कम क्षति हो पर इन दुर्घटनाओं की कुल संख्या बहुत अधिक है । इस तरह मीडिया की सुर्ख़ियों में आये बिना ही यह दुर्घटनाएं राष्ट्रीय स्तर पर बहुत क्षति करती हैं । चौथे नम्बर पर सभी तरह के शिक्षण-प्रशिक्षण स्थानों पर होने वाली दुर्घटनाएं हैं ।

पांचवें स्थान पर ऐसी दुर्घटनाएं हैं जो विशेषकर हमारे देश में बहुत अधिक होती हैं यानी तीर्थ स्थानों, मेलों, उत्सवों, सम्मेलनों व पर्यटन से जुड़ी दुर्घटनाएं । अंत में उन दुर्घटनाओं की हमें एक अलग श्रेणी बनानी चाहिए जिनका असर बहुत दूर-दूर तक जा सकता है व देर तक बना रहता है । इस श्रेणी में ज़हरीली गैस के रिसाव से जुड़ी दुर्घटनाओं व परमाणु ऊर्जा संयंत्रों की दुर्घटनाओं को रखा जा सकता है जिन पर विशेष ध्यान देने व उच्च स्तर की विशिष्ट तकनीकी उपलब्ध करने की ज़रूरत है । एक ज़रूरत तो यह है कि इन सभी दुर्घटनाओं के बारे में समग्र विश्वसनीय जानकारी एक स्थान पर उपलब्ध हो क्योंकि ऐसी जानकारी के आधार पर ही दुर्घटनाओं को कम करने के लिए व उनकी जानलेवा क्षमता कम करने के लिए उचित प्रबंधन व नियोजन हो सकता है ।

हाल ही में प्रकाशित एक पुस्तक 'वाय एक्सीडेंट्स ऑर रेयरली एक्सीडेंटल' के लेखकों मार्क गरस्टीन व माइकेल एल्सबर्ग का कहना है कि बेहतर नियोजन, मेहनत व जोखिम के प्रति चौकन्ने बने रहने से दुर्घटनाओं व उनके दुष्परिणामों को बहुत कम किया जा सकता है । इस पुस्तक में दिये गये अनेक उदाहरणों का आकलन भी यही बताता है कि जहां आरंभिक चेतावनियों पर ध्यान न दे सुरक्षा को ताक पर रखा गया वहां गंभीर दुर्घटनाएं हुईं, जबकि जहां आरंभ में सुरक्षा पर ध्यान दिया गया वहां 'दुर्घटनाओं' को टाला जा सका । सरकार को अपनी नीतियों, कार्यक्रमों व निर्माण कार्यों में सुरक्षा के पक्ष को अधिक महत्व देना होगा । सब तरह के यातायात में दुर्घटनाओं को कम करना बहुत ज़रूरी है, तो फलिस में कई स्तरों पर सुधार करना अति आवश्यक है ।

कार्य स्थल की दुर्घटनाओं को कम करने के लिए सरकार निगरानी बढ़ा सकती है, तो घरेलू हिंसा को कम करने के लिए भी अनुकूल माहौल तैयार करने में मदद कर सकती है । विशेषकर जहां मेलों, उत्सवों आदि के कारण बड़ी संख्या में लोग एकत्र होते हैं वहां हादसे की संभावना दूर करने में सरकारी प्रबंधन की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है । पर केवल सरकार की अधिक सक्रियता से बात बहुत आगे नहीं बढ़ेगी ।

अतः दूसरे स्तर का प्रयास यह चाहिए कि सभी नागरिक दुर्घटनाओं को रोकने की ज़िम्मेदारी और संभावनाओं के प्रति और सचेत हों । घर हो या कार्य स्थल या सड़क, आश्चर्यजनक हद तक दुर्घटनाएं लापरवाही के कारण होती है । अधिक सजग रहकर अपराध से बचने की संभावना को भी कम किया जा सकता है । यह प्रयास केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं अपितु सामुदायिक स्तर पर ज़रूरी है ।

गली-मुहल्ले व गांव की बस्ती के स्तर पर लोग मिल-जुलकर कैसे दुर्घटना व अपराध की क्षति को कम कर सकते हैं, इसका बड़ा योगदान हो सकता है । ऐसे सामुदायिक प्रयासों को सरकार का भरपूर प्रोत्साहन मिलना चाहिए । सबसे बड़ी प्राथमिकता दुर्घटनाओं को रोकने की देनी चाहिए । यह हमारा पहला मोर्चा है । दूसरा मोर्चा यह है कि यदि तमाम सावधानियों के बाद दुर्घटना हो ही गयी तो उसकी क्षति को न्यूनतम करने की हमारी बेहतर तैयारी होनी चाहिए ।

स्पष्ट है कि बहुत-सी दुर्घटनाओं की संभावना को रोकने के लिए हम बहुत कुछ कर सकते हैं । इसके बावजूद यदि कोई दुर्घटना हो जाए तो फुर्ती, मुस्तैदी और समझदारी से उसका सामना करने से भी क्षति को काफ़ी कम किया जा सकता है । यह इस बात पर निर्भर करेगा कि किसी संभावित दुर्घटना से निबटने के लिए हमारी तैयारी कितनी है । इस तरह यदि दुर्घटना को रोकने व उसका समुचित सामना करने की तैयारी दोनों स्तरों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाए तो दुर्घटनाओं से होने वाली अधिकतम क्षति को रोका जा सकता है । (विविधा फ़ीचर्स)

हमारी नई पुस्तकें

सर्वधर्म समभाव और इस्लाम धर्म	शोबा-ए-दावत	30.00
हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बेटियाँ	तालिब हाशिमी	22.00
झाड़-फूँक इस्लाम की रौशनी में	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम कैसे फैला?	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	36.00
कुव्वत का असल राज़	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
तलख़ीस तफ़हीमुल कुरआन (सूरा यासीन)	मौलाना सय्यद अबुल आला मौदूदी	20.00
इस्लाम की पारिवारिक व्यवस्था	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	100.00
इस्लामी पारिभाषिक शब्द	मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
सूफी बुज़ुर्गों की अनमोल बातें	मुहम्मद फारूक ख़ां	20.00
अध्यात्म का महत्व और इस्लाम	मुहम्मद फारूक ख़ां	20.00
आत्मा और परमात्मा	मुहम्मद फारूक ख़ां	24.00
सफलता और मुक्ति का एक ही रास्ता	मुहम्मद फारूक ख़ां	24.00
नफ़्स का तज़किया और हम	मुहम्मद फारूक ख़ां	24.00
मुक्ति की धारणा और इस्लाम	मुहम्मद फारूक ख़ां	26.00
कुरआन पर अमल	सुमय्या रमज़ान	75.00
विशुद्ध एकेश्वरवाद	मुहम्मद यूसुफ इस्लाही	24.00
हक़ की दावत और ग़ैर मुस्लिम	मतीन तारिक बाग़पती	16.00
रहमत ही रहमत	अश-शैख़ अताउल्लाह कुरेजा	66.00
ब्याज का हराम होना	डॉ० मुहम्मद उमर छापरा	32.00
मीरास का बँटवारा और उसके हक़दार	मिर्ज़ा सुबहान बेग	26.00
इस्लामः दयालुतापूर्ण ईश्वरीय धर्म	डॉ० फ़रहत हुसैन	28.00

MARKAZI MAKTABA ISLAMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26981652, 26984347, Fax: 26987858
E-mail: mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

पर्यावरण का रक्षक : लकड़बग्घा

लकड़बग्घा जंगल का विचित्र प्राणी है । वह विभिन्न प्रकार की बोलियां बोलता है । उसका ठहाका बहुत प्रसिद्ध है । आमतौर पर अच्छा भोजन पाकर वह अचानक ही ज़ोर से ठहाका लगाता है । वन विशेषज्ञ मैथ्यूज ने इस बारे में लिखा है–'हरिद्वार के वन में मैंने लगड़बग्घे के ठहाके बहुत सुने हैं । चांदनी रात में वनों में ये ऐसे अट्टहास करते हैं जैसे कोई पागल आपे से बाहर होकर बार-बार हंस रहा हो । थोड़ी-थोड़ी देर के बाद समानांतर क़हक़हों से शांत वायुमंडल गूंज उठता है ।'

वनों में पर्यावरण की रक्षा में लकड़बग्घे का बहुत योगदान है । ये वनों में चक्कर लगाते रहते हैं । बीमारी से मरे जानवरों को शिकारी पशु नहीं खाते परंतु ये बड़ी सफ़ाई से उन्हें चट कर जाते हैं । बाघ जाति के जानवर अपने शिकार का कुछ भाग खाते हैं और कुछ सड़ने के लिए छोड़ देते हैं । उस बदबूदार मांस का भक्षण लकड़बग्घे करते हैं । वन में लगे कैंपों तथा घरों से बाहर फेंकी हुई जूठन और हड्डियों के टुकड़ों को खाने के लिए ये रात में आ जाते हैं । छोटे-छोटे टुकड़ों के लिए आपस में ख़ूब लड़ते हैं । इसीलिए इसे मैदानों और जंगलों की गन्दगी साफ़ करने वाला क्रियाशील सफ़ाईकर्मी कहा जाता है ।

लकड़बग्घा हड्डियां तक चट कर जाता है । इससे इसका मल चाक जैसा सफ़ेद होता है । इसे दवा के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है । एल्बम ग्रसियम के नाम से इसे गिल्लड़, मस्से जैसे रोगों में प्रयोग किया जाता है । पूर्वी भारत में लकड़बग्घे की जीभ और चर्बी सूजनों और रसोलियों को बिठाने के लिए काम में लायी जाती है । अफ़्रीका में इसकी चर्बी रोगग्रस्त अंगों पर मली जाती है । मिस्र में नीलघाटी के लोग दीर्घायु होने के लिए इसका दिल तक खा जाते हैं । इसे मनुष्य के लिए कई तरह से उपयोगी जीव माना गया है ।

● उमेश प्रसाद सिंह

कुछ विशेषताएं

● यह परजीवी प्राणी है । इसके शक्तिशाली जबड़े होते हैं । मज़बूत अगली टांगें और नुकीले दांत होने के बावजूद यह बड़ा शिकार करने में असमर्थ हैं । कभी-कभी बीमार और ज़ख़्मी छोटे जीवों पर हमला करता है ।

● अफ़्रीका में चोरी-छिपे शिकार करने वालों के फंदों में जो जानवर फंस जाते हैं उन्हें शिकारियों के आने से पहले ही लकड़बग्घे खाने लगते हैं ।

● चीतला लकड़बग्घा कीट-पतंगों को भी खा जाता है । टिड्डों का विशेष शौक़ीन है । जिन दिनों टिड्डी दल आते हैं, यह उन्हीं से पेट भर लेता है ।

● गर्मियों में जब तालाब सूखने लगते हैं, वहां इसे मछली पकड़ते हुए देखा जाता है ।

यह चमड़े की बनी किसी भी चीज़ को नहीं छोड़ता बंदूक़ का कवर और जूतों को भी चबा जाता है ।

● लकड़बग्घे दो प्रकार के होते हैं–धारीदार और चीतला । इसे अंग्रेज़ी में स्ट्राइप्ड हायना और स्पौटेड हायना कहते हैं । संस्कृत में दोनों का नाम तरक्षु है ।

● धारीदार लकड़बग्घों की संख्या ज़्यादा है, चीतल लकड़बग्घों की संख्या बहुत कम है ।

● यह बहुत बदसूरत जानवर है । इसके शरीर से दुर्गंध आती है । कई जानवर इसका मांस खाने में हिचक महसूस करते हैं ।

● इसकी लंबाई 150 से॰मी॰, ऊंचाई 90 से॰मी॰ तथा वज़न 40 कि॰ग्रा॰ तक होता है ।

● गर्दन मोटी, अगली टांगें भारी, आंखें गहरी, जीभ खुरदरी, चौड़ा सिर इसकी पहचान है ।

● शरीर की इस भद्दी बनावट से इसकी चाल पर भी असर पड़ता है । ऐसा लगता है मानों लंगड़ाकर चल रहा है ।

● मादा दो साल में बच्चे पैदा करने योग्य हो जाती है । एक बार में दो-तीन शावक पैदा होते हैं ।

● इसकी औसत उम्र उन्नीस साल मानी जाती है । चिड़ियाघरों में 25-30 साल तक भी जी लेते हैं ।

● चिड़ियाघरों में भी यह गंदा जानवर माना जाता है । इसकी बाड़ा दूर-दूर तक दुर्गंध फैलाती है । पर्यटक भी इसके पास जाने से कतराते हैं ।

दो रुपये का सिक्का

■ जूही श्रीवास्तव

ऑफ़िस के समस्त कर्मचारी उस दिन बड़े प्रसन्न और उत्साहित थे । वे आज रोज़ाना से कुछ ज़्यादा ही उमंगित और प्रफुल्लित नज़र आ रहे थे । उनका एक-दूसरे को बधाई देने का सिलसिला देर तक चलता रहा । इसकी वजह यह थी कि प्रदेश सरकार ने राज्य कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में वृद्धि तथा उन्हें सरकारी तौर पर अन्य अनेक सुविधाओं की घोषणा की थी जिसके बारे में समाचार पत्रों ने प्रथम पृष्ठ पर विस्तारपूर्वक ख़बर छापी थी ।

कार्यालयीय कर्मचारीगण इस अख़बारी ख़बर को बार-बार पढ़, एक-दूसरे को पढ़ा-दिखाकर उस पर अपनी सुखद प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे थे । कुछ कर्मचारी ऐसे भी थे जो महंगाई भत्ते की बक़ाया क़िस्त एक मुश्त मिलने पर उसके उपयोग के संबंध में तरह-तरह के मनमोहक मंसूबे बनाने-बिगाड़ने में मशग़ूल थे ।

इन्हीं कर्मचारियों में एक थे उपाध्याय जी जो लेखाकार के पद पर कार्यरत थे । कर्मचारियों के महंगाई भत्ते में वृद्धि के समाचार से वे इतने प्रसन्न और आनंदित थे कि उन्होंने दफ़्तर में तीन किलो छेना की मिठाई मंगवाकर सहकर्मियों में बंटवा दी । कार्यालय की छुट्टी के पश्चात सायंकाल घर जाने के लिए वे मेन रोड पर आये । उनका घर यहां से डेढ़ किलोमीटर दूर था । उन्होंने एक रिक्शा किया तथा घर की ओर चल पड़े । आज उनका मूड फ्रेश था और वे कोई फ़िल्मी गीत धीमे-धीमे गुनगुनाते हुए रिक्शे की सीट पर आराम से बैठे, चुपचाप चले जा रहे थे ।

घर के सामने उतरकर उन्होंने रिक्शावान की हथेली पर दो रुपये का नया चमचमाता हुआ सिक्का रख दिया । दयनीय मुख मुद्रा बनाकर रिक्शावान बोल उठा, 'बाबूजी ! यह आप क्या दे रहे हैं । हर चीज़ का दाम बढ़ गया है । साहब ! सबकी तनख़्वाह सरकार के दरबार में बढ़ गयी है, मगर आप इतना कम...।'

'तनख़्वाह बढ़ गयी है तो क्या सब उठाकर तुम्हीं को दे दूं ?' उपाध्यायजी ने बात काटते हुए कहा, 'लेना हो तो लो वरना रास्ता नापो । मैं इससे एक पाई ज़्यादा नहीं देना वाला ।'

रिक्शावान बुझी-बुझी सी निगाहों के साथ नयी सवारी की तलाश में चौराहे की तरफ़ चल पड़ा ।

कुश्ती की सरगम



एक बार मुल्ला नसरुद्दीन ने सुना कि शहर में दंगल यानी कुश्ती का बड़ा मुक़ाबला होने वाला है । इसमें राज्य के सबसे बड़े पहलवान ने ख़ुद को हराने का चैलेंज रखा है । उस पहलवान का इतना नाम था कि कोई भी उससे लड़ना नहीं चाहता था । ऐसे में शहंशाह ने पहलवान को हराने वाले को बड़ा इनाम देने का एलान किया । लेकिन कोई आगे आया ही नहीं । मुल्ला नसरुद्दीन ने कभी कुश्ती नहीं की थी लेकिन उन्हें लगा कि इनाम पाने का यह बढ़िया मौक़ा है । उन्होंने कुश्ती प्रतियोगिता में हिस्सा लेने का एलान कर दिया । कुश्ती से पहले दिन शाम को मुल्ला चुपके से पहलवान से मिलने पहुंचे ।

वहां जाकर बोले : क्या तुमने कुश्ती की सरगम के बारे में सुना है ? पहलवान थोड़ा हैरान हुआ क्योंकि उसने ऐसा कुछ सुना नहीं था । फिर ख़ुद को संभालकर बोला : हां, थोड़ा-बहुत सुना है । हमारे शहर में अभी-अभी शुरू हुआ है । मुल्ला मुस्कुराते हुए : कल शाम को मैं कुश्ती की सरगम को आजमाऊंगा । इसका मुझे ख़ासा तजुर्बा है । यह कहकर मुल्ला लौट गये । पहलवान परेशान । उसे लगा कि पता नहीं यह कुश्ती की सरगम क्या बला है । यहां से खिसकने में ही भलाई है । वह चुपके से रात को वहां से खिसक गया । उधर सुबह शहर भर में बात फैल गयी कि मुल्ला से डरकर पहलवान मैदान छोड़ भाग गया । शहंशाह ने इनाम की रक़म मुल्ला को दे दी ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

अल्लाह के
रसूल (सल्ल॰) ने बताया :
अल्लाह तआला क़ियामत के दिन
एक आदमी से कहेगा, ऐ आदम के बेटे,
मैं बीमार पड़ा था, तू मेरी इयादत को नहीं आया ।
वह कहेगा, ऐ मेरे रब, कैसे तेरी इयादत को आता
और तू तो रब्बुल आलमीन है । अल्लाह कहेगा
क्या तुझे मालूम नहीं, मेरा फ़लां बन्दा बीमार
पड़ा था पर तू उसकी इयादत को नहीं गया ।
क्या तुझे मालूम न था अगर तू उसकी इयादत
को जाता तो मुझे उसके पास पाता ।
(हदीस)

A WELL WISHER
KOLKATA

Posted on 20-21 June 2015
July 2015
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.06.2015
Total Pages-52 (With Covers)

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017

Dr. Mrs. Naheed F Khan

MBBS, DGO, MS (Obs & Gyn)
Mb. : 9830031647
E-mail : drnfkhan@yahoo.co.in
drnfkhan22@gmail.com

RESIDENCE
52B, Shakespeare Sarani
Sukh Sadan, Flat 7-D
Kolkata - 700 017
Ph. : 22830333

C H A M B E R S

B. N. CLINIC
84/5, Ripon Street
Kolkata - 700016
Ph. : 22296057, 22296096
Tue, Fri, Sat : 4 pm - 8 pm
Thu : 11 am - 1 pm

BHAGIRATHI NEOTIA WOMAN & CHILD CARE CENTRE
2, Rawdon Street, Kolkata - 700017
Ph. : 4040510, 40405100
Mon : 8 am - 10 am
Wed : 7 pm - 9 pm

FORTIS MEDICAL CENTRE
2/7, Sarat Bose Road
Kolkata - 700020
Ph. : 24754320, 24754096
Tue : 11 am - 1 pm
Thu : 8 am - 10 am

DILKUSHA NURSING HOME
94 A, Dilkusha Street
Kolkata - 700017
Ph. : 22803639, 22874318
Wed : 11 am - 1 pm